तृतीय माला, खण्ड ९—अंक ६

बुधवार, १४ नवम्बर, १९६२
२३ कार्तिक, १८८४ (शक)

लोक-सभा
वाद-विवाद

(तीसरा सत्र)

3rd Lok Sabha

(खण्ड ९ में अंक १ से अंक १० तक हैं)

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली

एक रुपया (देश में)   चार शिलिंग (विदेश में)

विषय सूची

प्रश्नों के मौखिक उत्तर—

	पृष्ठ
*तारांकित प्रश्न संख्या १७४ से १७८, १८५, १७९ से १८१, १८३, १८४, १८६ और १८७ .	६४३—६६

प्रश्नों के लिखित उत्तर—

तारांकित प्रश्न संख्या १८२ और १८८ से १९७ .	६६६—७१
अतारांकित प्रश्न संख्या ३९४ से ४२० और ४२२ से ४२४ .	६७१—९५
अनुदानों की अनपूरक मांगें (सामान्य). १९६२–६३	६९५
आपात की उदघोषणा तथा चीन आक्रमण के बारे में संकल्प	६९५—७४५
श्री ओझा	६९५
श्री रवीन्द्र वर्मा	६९५–९६
श्री त्रिदिव कुमार चौधरी	६९६
श्री विश्वनाथ राय	६९६—९८
श्री मा० ला० वर्मा	६९८—७००
श्रीमती लक्ष्मी कान्तम्मा	७००
श्री जसवंत मेहता	७००—०१
श्री ज० रा० मेहता	७०१
श्री न० प्र० यादव	७०१—०४
श्री मुथिया	७०४
श्रीमती सावित्री निगम	७०४—०६
श्री रणंजय सिंह	७०६—०८
श्री ह० च० सौय	७०८—०९
श्री अ० ना० विद्यालंकार	७०९—१०
श्री गहमरी	७१०—१२
श्री रामचन्द्र मलिक	७१२
श्री योगेन्द्र झा	७१२—१४
श्री बृजराज सिंह कोटा	७१४–१५
श्री सुब्बरामन्	७१५

---

*किसी नाम पर अंकित यह + चिह्न इस बात का द्योतक है कि प्रश्न को सभा में उसी सदस्य ने वास्तव में पूछा था ।

लोक-सभा वाद-विवाद

लोक-सभा

बुधवार, १४ नवम्बर, १९६२
—
२३ कार्तिक, १८८४ (शक)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई ।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

प्रश्नों के मौखिक उत्तर

चीनियों को भारत से चले जाने का आदेश

+

†*१७४. **श्री यशपाल सिंह :**
श्री राम रतन गुप्त :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री वी० चं० शर्मा :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री हेम राज :
श्री पू० चं० देवभंज :
श्री प्र० के० देव :
श्री रघुनाथ सिंह :

क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) ३० जून, १९६२ से कितने चीनियों को भारत से चले जाने का आदेश दिया गया है ; और

(ख) उन में से कितने लोगों ने आदेश का पालन किया ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) और (ख). ३० जून, १९६२ से २४ चीनी राष्ट्रजनों को भारत छोड़ने का आदेश दिया गया है। इन में से ५ ने आदेश मान लिया है और वे चले गये हैं । बाकी १९ और उन चीनियों के बारे में जिन का भारत में रहना उचित नहीं समझा जाता, सरकार अभी ताजी घटनाओं को ध्यान में रखते हुए विशेष कार्यवाही करेगी ।

†**श्री यशपाल सिंह** : दिल्ली में चीनी दूतावास में और कलकत्ता, बम्बई तथा दूसरी जगहों में दूतावास में कितने चीनी नियुक्त हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

2202 (Ai) LSD—1.

†**श्री दातार** : यहां मेरे पास आंकड़े नहीं हैं ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : भारत में चीनी निवासियों या दूसरे चीनी कर्मचारियों के आवा-गमन और कामकाज पर क्या निर्बन्धन और पाबन्दी लगाई गई है और क्या यह विश्वास किया जा सकता है कि कुछ चीनियों का भारत-समर्थनकारी व्यवहार केवल एक धोखा है ?

†**श्री दातार** : सरकार उन सभी लोगों पर निगरानी रख रही है जिन के कामकाज संभवतः भारत विरोधी या समाज विरोधी होंगे । सरकार इस मामले में आवश्यक कदम उठा रही है ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया है । क्या क्या निर्बन्धन और पाबन्दी अब तक लगाई गई है ?

†**गृह-कार्य मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री)** : हम ने तदनुसार आदेश जारी कर दिये हैं ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : 'तदनुसार' का क्या मतलब है ?

†**श्री लाल बहादुर शास्त्री** : अर्थात् उन चीनियों पर पाबन्दी लगाना ।

†**श्रीमती सावित्री निगम** : क्या माननीय गृह-कार्य मंत्री को मालूम है कि रीगल सिनेमा के पीछे कुछ चीनियों ने एक मकान किराये पर ले रखा है जहां उन के संदेहात्मक काम-काज चलते रहते हैं ?

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रश्न यह है कि कितने लोगों को भारत से चले जाने के लिये आदेश दिया गया है । हम दूसरे मामलों की बातचीत न करें ।

†**श्रीमती सावित्री निगम** : मैं उन लोगों के बारे में पूछ रही हूं जो समाज विरोधी कार्यों में लगे हुए हैं ।

†**श्री लाल बहादुर शास्त्री** : सरकार इस बारे में बहुत अधिक सावधान और सचेत है । मैं कुछ अधिक नहीं कहना चाहता लेकिन उन चीनियों के सम्बन्ध में जिन्हें सुरक्षा के लिये खतर-नाक समझा जाता है उन के खिलाफ कोई बहुत कड़ी कार्रवाई करने का हमारा विचार नहीं है ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या मैं जान सकता हूं कि जो चीनी नागरिक भारत में इस समय रह रहे हैं, पिछले कुछ दिनों में, जबकि संकट-कालीन स्थिति आई है, उन की अराष्ट्रीय गतिविधियों का कुछ पता चला है ? यदि हां, तो भविष्य में उन को रोकने के लिये सरकार ने क्या उपाय सोचे हैं ?

गृह-कार्य मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) : कुछ पता तो हम लोग लेते ही रहते हैं, लेकिन उस को बतलाने की जरूरत नहीं है । इस वक्त वैसी कार्यवाही ज्यादा है भी नहीं, क्योंकि उन को भी इस बात का डर है । अगर कोई कार्यवाही है, तो वह छिपी हुई है, जिस के बारे में जैसाकि मैं ने अभी कहा है, हम पता भी रख रहे हैं और कड़ी कार्यवाही भी कर रहे हैं ।

श्री रामेश्वर टांटिया : भारत वर्ष में जो चाइनीज हैं, उनमें कितते हिन्दुस्तानी नागरिक हैं और कितने चाइनीज हैं ?

श्री लाल बहादुर शास्त्री : मैं उन की ठीक संख्या तो नहीं बता सकता, लेकिन हम दोनों ही की तरफ़ सावधानी बरत रहे हैं ।

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त** : जिन २४ व्यक्तियों को देश से बाहर चले जाते का आदेश दिया गया है, उनमें से कितते चीन गणतन्त्र के राष्ट्रजन हैं, कितते राज्यहीन व्यक्ति हैं और कितने भारतीय नागरिक बन गये हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री लाल बहादुर शास्त्री : मैं ये ब्यौरा तो नहीं बता सकता लेकिन हमने सभी को एक ही श्रणी में रखा है और जो भी कार्यवाही को जायेगी वह सभी के विरुद्ध करनी होगी ।

†श्री श्याम लाल सर्राफ : जिन चीनियों को देश से चले जाने के लिए कहा गया है उनमें लद्दाख की ओर का भी कोई है ?

†श्री लाल बहादुर शास्त्री : मुझे खेद है कि वह हमें मालूम नहीं है ।

†श्री प्र० चं० बरुआ : क्या सरकार को मालूम है कि उत्तर-पूर्व आसाम में मकुन में एक चीनी स्कूल है और उसे भारतस्थित चीनी काउन्सल-जनरल ने मदद दी है और क्या इस स्कूल के अध्यापकों पर कड़ी नजर रखी गई है ?

†श्री लाल बहादुर शास्त्री : जी, हां, वास्तव में हमने पूछताछ की है और उस सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त की है । हम उस पर भी निगरानी रखेंगे ।

कोयले की कमी

+

*१७५. श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती :
श्री भागवत झा आजाद ।
श्री भक्त दर्शन :
श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :
श्री सुरेन्द्रपाल सिंह :
श्री यशपाल सिंह :
श्री विद्याचरण शुक्ल :
श्री रा० शि० पाण्डेय :
महाराजकुमार विजय आनन्द :
श्री द्वा० ना० तिवारी :
श्री बिशन चन्द्र सेठ :
श्री सरजू पाण्डेय :
श्री प्र० के० देव :
श्री इन्द्रजीत गुप्त :

क्या खान और ईंधन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि उन्होंने संसद् के गत सत्र में आशा व्यक्त की थी कि कोयले की कमी सितम्बर अथवा अक्तूर, १९६२ तक काफी दूरहो जायेगी;

(ख) यदि हां, तो इस दिशा में क्या प्रगति हुई है; और

(ग) क्या नदियों द्वारा कोयले का परिवहन करने के सम्बन्ध में राज्य सरकारों से हो रही बातचीत में अन्तिम निर्णय लिया जा चुका है और यदि हां, तो उसकी रूपरेखा क्या है ?

खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय) : (क) तथा (ख). पिछले दो महीनों में, कोयले के परिवहन से सम्बन्धित स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ है और रेल तथा सड़क दोनों द्वारा अधिक कोयले का भेजा जाना सम्भव हो गया है ।

(ग) बिहार में कोयला खानों से इलाहाबाद में उपभोक्ताओं के लिए सड़क तथा नदी द्वारा कोयले के परिवहन से सम्बन्धित योजना के अन्तर्गत एक परीक्षण को शीघ्र ही कार्यान्वित

†मूल अंग्रेजी में ।

करने की आशा है । निकट भविष्य में गंगा-ब्रह्मपुत्र वाटर ट्रांसपोर्ट बोर्ड के नौका समुदाय के हिस्से को इस्तेमाल करते हुए प्रतिमास में लगभग कोयले के ८००–१००० टन उठाये जायेंगे। दीर्घकालीन योजना के लिए अध्ययन कार्य को किया जा रहा है, जिसके द्वारा यह सम्भावना है कि प्रति वर्ष में सड़क तथा नदी द्वारा कोयले का प्रेषण ३.५ मिलियन टन तक बढ़ाया जा सके ।

अध्यक्ष महोदय : अब तक इस हाउस में यह प्रेक्टिस रही है कि अगर सवाल हिन्दी में हो, तो उस का जवाब पहले हिन्दी में दिया जाता है और फिर अंग्रेज़ी में । अगर उसी प्रेक्टिस को जारी रखा जाये, तो अच्छा होगा ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : अभी हाल ही में प्रधान मंत्री जी ने देश के कारखानों से अपील की थी कि उन को अपना उत्पादन बढ़ाना चाहिए और उत्पादन तब तक नहीं बढ़ सकता है, जब तक कि उनको कोयला पूरा न मिले । मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या इस संकटकालीन स्थिति का सामना करने के लिए मंत्रालय ने कोयले को पहुंचाने के सम्बन्ध में कोई विशेष व्यवस्था की है और अगर की है, तो उस का विवरण क्या है ?

श्री के० दे० मालवीय : इधर इस संकट में हमारे मंत्रालय ने विशेष तरीके अख्तयार किये हैं और करीब करीब हर एक मुख्य कोयला खान वाले से सम्पर्क कायम किया है । उन्होंने अपना उत्पादन बढ़ाया भी है । सड़क से कोयले का मूवमेंट भी बढ़ाया गया है । मैं कल कलकत्ते जा रहा हूं, जहां हमारी और उन की बैठक हो रही है और हम एक नया कार्यक्रम बना रहे हैं, जिस के द्वारा हम सड़कों पर ज्यादा कोयला चला सकेंगे । रेलों के द्वारा कोयले की मूवमेंट बढ़ी भी है । मेरा ख्याल है कि स्थिति में सुधार हुआ है और बड़े बड़े स्थानों पर कोयले के बड़े बड़े डाम्प्स बनाने का हम शीघ्र प्रयत्न कर रहे हैं ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : मैं ने अपने पहले अनुपूरक प्रश्न में माननीय मंत्री जी से यह भी पूछा है कि क्या सरकार इस संकटबकालीन स्थिति का सामना करने के लिए कारखाने वालों को पूरा कोयला दे सकेगी । इस स्थिति में वह अन्तिम रूप से कब तक समर्थ हो सकेगी ?

श्री के० दे० मालवीय : मैं ने अभी कहा है कि इसी सम्बन्ध में मैं कलकत्ता जा रहा हूं और इस स्थिति का मुकाबला करने के लिए और कोयला का उत्पादन कितना बढ़ाया जा सकता है, सड़कों पर कितना ज्यादा कोयला ले जाया जा सकता है, इन सब प्रश्नों पर बातचीत करने के बाद, मुझे पूरी आशा है, ज्यादा कोयला पैदा और मूव किया जा सकेगा ।

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती : क्या केन्द्रीय सरकार को इस बारे में राज्य सरकारों को सहयोग प्राप्त है अथवा नहीं ? जिस बैठक में भाग लेने के लिए माननीय मंत्री जा रहे हैं, क्या उस में इस विषय पर विचार होगा कि राज्य सरकारों से भी पूरा सहयोग लिया जाये ?

श्री के० दे० मालवीय : राज्य सरकारों से हम को पूरा सहयोग प्राप्त है । जहां तक सड़कों की मरम्मत करने का प्रश्न है, हम उन के साथ बातचीत कर रहे हैं ।

†**श्री भागवत झा आजाद** : क्या उत्तर में उल्लिखित इस स्थानान्तरण से हुई अधिक सप्लाई देश में अधिक मांग के कारण निष्प्रभावी हो गयी है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : उद्योगों और नागरिक उपभोक्ताओं, दोनों ने ही अधिक मांग की है । नागरिक उपभोक्ता ईंटें तैयार करने के लिए कोयला इस्तेमाल करते हैं । हम उन्हें इस

†मूल अंग्रेजी में

बात के लिए राजी कराने का प्रयत्न कर रहे हैं कि जहां सम्भव हो वहां कोयले की खपत में कमी की जाये क्योंकि हम उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं। लेकिन यह सच नहीं है कि इस कारण बहुत ज्यादा मांग पैदा हो गयी है।

†**श्री इकबाल सिंह** : बंगाल और बिहार कोयला खानों से दूर के राज्यों में, जैसे पंजाब में, कोयला पहुंचाने के लिए क्या कदम उठाये गये हैं और अब तक क्या नतीजा निकला है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : एक या दो हफ्तों के लिए हमें जब भी एक या दो ज्यादा माल डिब्बे मिल जाते हैं हम सप्लाई बढ़ा देते हैं।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : क्या सरकार को कोई शिकायतें मिली हैं और क्या सरकार जानती है कि कोयले की कमी इस कारण बढ़ गयी है कि काफी बड़े पैमाने पर माल डिब्बों में कम माल लादा गया है; और यदि हां, तो इस प्रकार की कम-लदाई कम करने के लिए सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : जानबूझ कर माल डिब्बों में कम लदाई के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है लेकिन कोयला कम प्राप्त होने के बारे में कुछ शिकायत अवश्य पहुंची है। ज्योंही हमें वह शिकायतें मिलीं हम ने जांच पड़ताल की कि किन विशेष कारणों से ऐसा हुआ।

श्री सरजू पाण्डेय : क्या इस बात की जांच की गयी है कि नदियों से कोयला ले जाना सस्ता पड़ेगा या सड़क से ले जाना सस्ता पड़ेगा ? अगर नदियों के ज़रिये ले जाना सस्ता पड़ेगा तो कितना ज्यादा कोयला नदियों के ज़रिये ले जाया जायेगा ?

श्री के० दे० मालवीय : बुनियादी तौर पर नदियों से अगर कोयला ले जायेंगे तो सस्ता जरूर पड़ेगा रेल के मुकाबले में। लेकिन पूरी योजना को चालू करने में कुछ समय लगेगा। शुरू शुरू में मुम्किन है उसको ल जाना महंगा पड़े। लेकिन फिर भी इसे करना चाहिये। हम दूसरे सम्बन्धित मंत्रालयों से, और फाइनेंस मिनिस्ट्री से परामर्श कर रहे हैं। शायद दो चार दिन में फैसला हो जायेगा और हम काम जल्दी शुरू कर देंगे।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : क्या यह सच है कि सैन्यसामान कारखानों में जहां हथियार और गोलाबारूद तैयार किया जा रहा है, कोयले की कमी है और यदि हां, तो सरकार ने इसके लिए क्या कदम उठाये हैं कि इन सैन्यसामान कारखानों में कोयले की कमी के कारण चौबीस घंटे काम करने में बाधा न पहुंचे ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : मेरे विचार से कोयले की कोई कमी नहीं है।

†**श्री हेम बरुआ** : इस बात को देखते हुए कि माननीय मंत्री ने प्रधान मंत्री को यह सुझाव दिया है कि हमारी अर्थ व्यवस्था के हित में कोयला उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया जाये, और कमी दूर करने के लिए सरकार ने अब तक क्या कार्यवाही की है या करने वाली है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह विस्तृत नीति की बात है।

श्री यशपाल सिंह : सवाई माधोपुर की सीमेंट फैक्ट्री ने क्या कोई इस तरह की शिकायत फोटो के साथ भेजी है कि वैगंज़ आधे भरे जाते हैं ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह बहुत गहरे ब्यौरे हैं।

श्री काशीराम गुप्त : क्या उन उद्योगों को प्राथमिकता दी जायेगी जो इस समय लड़ाई में काम आने वाला सामान तैयार कर रहे हैं, कोयले की सप्लाई के सम्बन्ध में ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**अध्यक्ष महोदय** : यह कार्यवाही का सुझाव है।

†**श्री विश्वनाथ राय** : क्या पूर्वी उत्तर प्रदेश में उत्तरपूर्व रेलवे के मुख्य कार्यालय तथा काफी अधिक चीनी कारखानों के कारण, पूर्वी उत्तर प्रदेश में कोयले का भंडार कायम करने की कोई कोशिश की जा रही है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह बहुत मामूली ब्यौरा है।

श्री तुलसी दास जाधव : कोयला न मिलने की वजह से क्या कोई कारखाना बन्द भी हुआ है क्या ?

श्री के० दे० मालवीय : मुझे मालूम नहीं है।

†**श्री वेंकट सुब्बैया** : कोयला क्षेत्रों में कोयला उत्पादन बढ़ाने के लिए सिंगरेनी कोयला कारखानों को आवश्यक वित्तीय सहायता देने के लिए और क्या कार्यवाही सरकार ने की है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : इस प्रश्न से उत्पन्न नहीं होता।

†**कुछ माननीय सदस्य**—उठे

†**अध्यक्ष महोदय** : अगला प्रश्न। हमने दो प्रश्नों पर १४ मिनट खर्च किये हैं। अब मैं हर प्रश्न पर दो या तीन अनुपूरक प्रश्नों के लिए ही अनुमति दूंगा।

पश्चिम बंगाल में भूतत्वीय सर्वेक्षण

+

†*१७६. { **श्री सुबोध हंसदा** :
श्री श्रीनारायण दास :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री ब० कु० दास : }

क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या अभी हाल में पश्चिम बंगाल में पूर्वी हिमालय की पहाड़ियों में भूतत्वीय सर्वेक्षण किया गया था ;

(ख) यदि हां, तो उस सर्वेक्षण का क्या नतीजा निकला ; और

(ग) क्या वह सर्वेक्षण अब भी चालू है या बंद कर दिया गया है ?

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री तिम्मय्या)** : (क) जी हां।

(ख) सर्वेक्षण से उस क्षेत्र में डोलोमाइट, कोयला और तांबा मिलने का पता लगा है। पश्चिम बंगाल में जालपाईगुडी जिले के जयन्ती क्षेत्र में बहुत अच्छी किस्म का ६०९.६ करोड़ टन डोलोमाइट के भंडार का अनुमान है। दार्जिलिंग जिले के फुटहिल्स में २.०३२ करोड़ टन नान कोकिंग कोयले के भंडार का अनुमान है। दार्जिलिंग और जालपाई गुडी जिलों में तांबा फुटकर फुटकर कहीं मिला है।

(ग) सर्वेक्षण जारी रखा जा रहा है।

†**श्री सुबोध हंसदा** : सभी भंडारों से खनिज निकालने के लिए सरकार ने क्या कदम उठाये हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री तिम्मय्या** : जालपाईगुडी जिले में डोलोमाइट के लिए विस्तृत जांच पड़ताल १६५६–६२ में की गयी थी । इसी आधार पर, हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड द्वारा खनिज निकाले जाने के लिए निक्षेप नियत कर दिये गये हैं ।

†**श्री सुबोध हंसदा** : क्या ये कोयले और डोलोमाइट निक्षेप पट्टे पर दिये जानेके लिए किसी व्यक्ति ने आवदन पत्र दिये हैं ?

†**श्री तिम्मय्या** : मेरी जानकारी मैं नहीं है । मुझे उसके लिए सूचना चाहिये ।

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजर नवीस)**: हमें उसके बारे में कोई जानकारी नहीं है ।

†**श्री मनेन** : दार्जिलिंग जिले के किस भाग में कोयला पाया गया है और जो कोयला मिला है वह किस किस्म का है ?

†**श्री हजरनवीस** : मैं दार्जिलिंग जिले का ठीक ठीक क्षेत्र नहीं बता सकता । वह कोयला नॉन-कोकिंग और ब्लैकिंग किस्म का है ।

भट्टी के तेल का आयात

+

†*१७७.
श्री विभूति मिश्र :
श्री स० चं० सान्त :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री वाजी :
श्री इन्द्रजीत गुप्त :
श्री वारियर :
श्री मोहसिन :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री भक्त दर्शन :
श्री सं० व० पाटिल :
डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :
श्री मार्ते :
श्री मुरारका :

क्या खान और ईंधन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि इण्डियन आयल कम्पनी के मैनेजिंग डाईरेक्टर भट्टी के तेल के आयात के लिये रूसी सरकार से बातचीत के लिये रूस गये थे ; और

(ख) यदि हां, तो बातचीत का क्या फल रहा ?

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजर नवीस)**: (क) और (ख). रूस में उनके दौरे के परिणामस्वरूप इंडियन आयल कंपनी लिमिटेड के मैनेजिंग डाइरेक्टर ने कम्पनी के लिए आवश्यक भट्टी के तेल की अतिरिक्त मात्रा आयात करने की व्यवस्था कर ली है ।

†मूल अंग्रेजी में ।

श्री विभूति मिश्र : फरनेस आयल कितनी मात्रा में मंगाया है और उसकी पर टन क्या कीमत होगी ?

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरनवीस)** : जहां तक मात्रा का संबंध है मैं समझता हूं कि समय समय पर वह संख्या निर्धारित करनी होगी । मूल्य का जहां तक संबंध है, वह कोई कम्पनी नहीं बताती ।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : मूल्य क्यों नहीं बताया जा सकता ?

†**अध्यक्ष महोदय** : क्या मूल्य न बताने के कोई विशेष कारण हैं ?

†**श्री त्यागी** : क्या अभी उस बारे में बातचीत चल रही है या वह निर्धारित किया जा चुका है ?

†**श्री हजरनवीस** : यह एक गैर-सरकारी कंपनी है । दूसरी फर्मों के साथ इसकी प्रतियोगिता रहती है । दूसरी फर्में यह जानकारी देना नहीं चाहतीं । व यह जानकारी सरकार को भी नहीं देतीं । इसलिए, क्या सरकारी निगम को ऐसी स्थिति में रखा जाना चाहिये जो गैर-सरकारी कंपनियों के लिए नुक्सानदेह हो ?

†**अध्यक्ष महोदय** : तब उन्हें "लोक हित" के अधीन शरण लेनी चाहिये । उन्हें वैसे कहना चाहिय ।

†**श्री सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी** : यह रूस के साथ एक करार है । क्या रूस में कोई गैर-सरकारी कम्पनी काम कर रही है ?

†**श्री हजरनवीस** : मैनेजिंग डायरेक्टर की अवश्य यह राय है कि उसे बताना लोक हित में न होगा ।

†**श्री सुरेन्द्र नाथ द्विवेदी** : यह अवश्य स्पष्ट किया जाना चाहिये ।

†**अध्यक्ष महोदय** : माननीय मंत्री ने बताया है कि गैर-सरकारी कम्पनियां वह जानकारी सरकार को भी नहीं बतातीं । लेकिन रूस के साथ यह एक करार है और किसी प्राइवेट कम्पनी के बीच में आने का कोई प्रश्न नहीं है । इसलिए इस आधार पर इसे इन्कार नहीं किया जा सकता ; यदि और कोई बात हो तो वह सदन को बतायी जाये ।

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)**: यह तो मुख्यतः रूस से छूट मिलने का प्रश्न है ताकि मूल्य को प्रतियोगितात्मक बनाया जा सके । हम समझते हैं कि हमें उनसे काफी छूट मिल चुकी है । इन्डियन ऑयल कम्पनी दूसरी प्राइवेट कम्पनियों के दबाव के कारण हमें वह नहीं बताना चाहती । हमने उनसे कहा है कि छूट की राशि हमें बताने के संबंध में वह उस पर फिर विचार करे। यदि हमें बताया जायेगा तो हम अवश्य सदन को बतायेंगे ।

†**अध्यक्ष महोदय** : क्या प्राइवेट कम्पनी का यह मतलब था कि वह हमारी कम्पनी है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : जी नहीं । प्राइवेट कम्पनियां भी प्रतियोगिता कर रही है और वे यह जानना चाहती हैं कि हमें रूस से कितनी छूट मिल रही है । यदि मूल्य बता दिया जाता है तो उन्हें सब मालूम हो जायेगा । इसलिए, यद्यपि हम इंडियन ऑयल कम्पनी की कठिनाइयों को अच्छी तरह समझते हैं फिर भी यह अधिक उचित होता कि वह हमें बतायें कि छूट की राशि कितनी है । अभी तक उसने बताने की अनिच्छा व्यक्त की है । यदि वह हमें जानकारी देती है तो हम अवश्य देंगे (**अन्तर्बाधा**) ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**अध्यक्ष महोदय** : मैं नहीं जानता कि माननीय सदस्य इस मामले की छानबीन करने के लिए इतने क्यों उत्सुक हैं। क्या वे यह समझते हैं कि इसमें कोई शरारत की जा रही है? यदि रूस के साथ करार हुआ है, तो उसमें कुछ गड़बड़ नहीं हो सकती। यदि सरकार की बात है तो मंत्री महोदय का यह ख्याल है कि वह लोक हित में नहीं है। क्या हम उस पर और आग्रह करें?

†**श्री उ० मू० त्रिवेदी** : यह बात नहीं है। उनके अनुसार प्राइवेट कम्पनी को मूल्य मालूम हो सकता है। यह हमारे हित में होगा कि प्राइवेट कम्पनियां उनसे कम दर पर दें। यदि प्राइवेट कम्पनियों को मूल्य मालूम हो जायें तो उससे हमारे देश को क्या नुक्सान होगा?

†**अध्यक्ष महोदय** : मैं तब तक किसी चर्चा में नहीं पड़ना चाहता जब तक कि आमूल रूप से कोई बात गलत न हो। जब मंत्री महोदय कहते हैं तो हमें उनका वक्तव्य स्वीकार करना पड़ेगा?

†**श्री हरि विष्णु कामत** : क्या मैं आपको याद दिला सकता हूं कि आपने ही लोक हित का सुझाव दिया था। वह कुछ हिचकिचा रहे थे कि वह लोक हित है या सरकारी हित या रूसी हित है?

†**अध्यक्ष महोदय** : क्योंकि यदि माननीय मंत्री कहते हैं कि वह वांछनीय नहीं है तो श्री कामत खड़े हो जायेंगे और यह कहेंगे कि वह कोई बहाना नहीं है। इसी लिए मैंने सीधे यह सुझाव दिया था कि वह यह कहें कि वह लोक हित में नहीं है। अब वरिष्ठ मंत्री ने कहा है कि वह लोक हित में नहीं है।

†**श्री हेम बरुआ** : उन्होंने कुछ और कहा है। इंडियन ऑयल कम्पनी मूल्य बताने से इन्कार करती है। इंडियन आयल कंपनी तो सरकारी कंपनी है। यह क्या बात है कि वह सरकार को मूल्य नहीं बताती?

†**अध्यक्ष महोदय** : माननीय सदस्य को यह समझना चाहिये कि जब मंत्री यह कहते हैं कि वह लोक हित में नहीं है तो मुझे वह स्वीकार कर लेना चाहिये।

श्री विभूति मिश्र : मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार ने और देशों से फर्नेश आयल के बारे में सीक्रेटली पूछ ताछ की है कि उन के तेल का क्या भाव पड़ता है? और अगर पता लगाया है तो क्या इस की कोई जांच पड़ताल की है कि कहां से तेल ज्यादा और सस्ता मिलेगा?

श्री के० दे० मालवीय : हम को बहुत सस्ता फर्नेस आयल मिलता है और दाम बहुत मुनासिब हैं जो हम से लिये जाते हैं, और कम्पिटीशन में, मेरा ख्याल है, हम ने दूसरी प्राइवेट कम्पनियों की बनिस्बत ज्यादा रकम बचाई है। लेकिन मैं हाउस से यह दर्ख्वास्त करूंगा कि हमें मजबूर न करे क्योंकि मैं समझता हूं कि यह पब्लिक इंटरेस्ट में नहीं है बावजूद इस के कि हम ने आयल इंडिया कम्पनी से यह कहा है कि वह मुनासिब समझते हों तो फिर इस मामले पर गौर करे ताकि हाउस को सन्तोष हो सके।

†**श्री हेम बरुआ** : औचित्य प्रश्न के हेतु श्रीमन्। मंत्री महोदय ने फिर यह मंजूर किया है कि इंडियन आयल कम्पनी ने जो सरकार के अधीन काम करती है, सरकार को मूल्य बताने से इन्कार किया है। यह कैसी बात है कि एक विभाग या स्वायत्तशासी संस्था . . . .

†**अध्यक्ष महोदय** : कम्पनी भी सरकार से कह सकती है कि वह उचित नहीं है। यदि सरकार सहमत है तो वही रहेगा लेकिन सरकार सहमत नहीं होती तो वह निदेश दे सकती है कि वह इस ढंग से किया जाना चाहिये।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री स० चं० सामन्त** : हम अभी तक किन किन देशों से भट्टी का तेल आयात करते रहे और इस तेल की किस्म रूस से मंगाये गये वर्तमान तेल के मुकाबले में कैसी है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : जिन गैर-सरकारी तेल कम्पनियों के शोधक कारखाने यहां हैं वे हमें भट्टी के तेल के साथ साथ पेट्रोल उत्पाद भी सप्लाई करती हैं। वे कहां से खरीद कर हमें सप्लाई करती हैं यह हमें मालूम नहीं है। वह सप्लाई करने वाला एक गुट है। दूसरा गुट रूस है जो रुपया भुगतान व्यवस्था के अन्तर्गत सप्लाई करता है। ये दो गुट हैं और हम कुछ दूसरे जरियों से भी भट्टी के तेल सहित पेट्रोल उत्पाद प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : क्या दूसरे देशों से भट्टी का तेल आयात करने का कोई प्रयत्न किया गया है और यदि हां, तो अभी फिलहाल रूस के अलावा दूसरे देशों से कितनी मात्रा में वह आयात किया जा रहा है या किया जाने वाला है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : भट्टी के तेल के सम्बन्ध में अधिकतर सप्लाई रूस से अतिरिक्त देशों से है।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : कितना प्रतिशत है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : अभी मेरे पास प्रतिशत के आंकड़े नहीं हैं।

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त** : क्या यह सच है कि इंडियन आयल कम्पनी के पास यह भट्टी का तेल और अन्य पेट्रोल उत्पाद रखने के लिये जगह की काफी कमी है और यदि हां तो जो आयात किये जा रहे हैं उन के लिये भंडार-क्षमता बढ़ाने के लिये कोई योजना आरम्भ की गई है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : यह ठीक है कि हमारे पास भंडार सुविधाओं की कमी है। हमें अभी केवल दो ही साल हुए हैं जबकि स्टैन्डर्ड वैक्यूअम और बर्मा शेल के संस्थान ५० या ६० साल पुराने हैं। हम अपने संस्थान तेजी से बढ़ा रहे हैं और आशा है कि अगले वर्ष हमारे पास भंडार सुविधायें पर्याप्त हो जायेंगी।

†**श्री भागवत झा आजाद** : वर्तमान बातचीत से अन्तर कितना पूरा हो जायेगा ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : उद्योगों का विकास, हमारे कारखानों का विस्तार और कोयले की तुलनात्मक कमी आदि जैसी अनेक बातों के कारण हमारे देश में भट्टी के तेल की खपत बहुत ऊंची दर से बढ़ रही है। इसलिये यह अन्तर भी बढ़ रहा है। सभी जरियों से आयात कर के तथा अपने शोधक कारखानों में क्षमता भी बढ़ा कर हम यह अन्तर कम करने का प्रयत्न कर रहे हैं लेकिन क्षमता बढ़ाने की भी एक सीमा है।

गोहाटी तेल शोधक कारखाना

†*१७८. **श्री सुबोध हंसदा :**
श्री स० चं० सामन्त :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री रामेश्वर टांटिया :

†मूल अंग्रेजी में

श्री यो० ना० सिंह :
श्री प्र० कु० घोष :
श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा :

क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि आसाम में हाल में आई बाढ़ के कारण गौहाटी तेल शोधक कारखाने का काम बन्द हो गया था ;

(ख) यदि हां, तो यह काम कितने दिन तक बन्द रहा ;

(ग) क्या इस बाढ़ के कारण तेल शोधक कारखाने को कोई क्षति हुई ; और

(घ) यदि हां, तो कितने मूल्य की क्षति हुई ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) हां, श्रीमान ।

(ख) १५ दिन ।

(ग) तेल शोधक कारखाने या सामान को कोई क्षति नहीं पहुंची ।

(घ) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

गोहाटी तेल शोधक कारखाना

+

†*१८५. श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री बसुमतारी :

क्या **खान तथा ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) आयल इंडिया (प्राइवेट) लिमिटेड द्वारा गोहाटी तेल शोधक कारखाना को प्रतिदिन कितना अशोधित तेल दिया जाता है ;

(ख) १ जुलाई, १९६२ से कुल कितना तेल परिशोधित किया गया है ; और

(ग) आयल इंडिया (प्रा०) लिमिटेड द्वारा अशोधित तेल के इस संभरण से कितने लक्ष्य की पूर्ति हुई है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) ५-८-१९६१ से १२-४-१९६२ तक रेल द्वारा ५०० टन की प्रति दिन औसत से दर से तेल भेजा गया । २६-४-१९६२ के बाद पाइपलाइन द्वारा भेजे गये अशोधित तेल की मासिक दर १६,२१६ से ३१,२९३ टन तक थी जोकि तेल शोधक कारखाने की आवश्यकतानुसार था ।

(ख) १-७-१९६२ से ३०-९-१९६२ तक ५५,३५४ टन तेल साफ हुआ ।

(ग) तेल शोधक कारखाने द्वारा प्रति दिन २,२५० टन अशोधित तेल की आवश्यकता होने का लक्ष्य है जिसे आयल इण्डिया लिमिटेड पूरा कर सकती है ।

†**श्री सुबोध हंसदा** : क्या तेल शोधक कारखाना प्राधिकारियों ने बाढ़ की प्रत्याशा की थी और यदि हां, तो उन्होंने क्या अहतियातन कार्यवाही की थी ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : आसाम में पिछले वर्ष से पहिले वर्ष अपूर्व बाढ़ आई थी। बाढ़ कैसी होगी, इस का पहिले से अनुमान नहीं लगाया जा सकता । सामान्यतया, हम इन बाढ़ों के प्रति

---

†मूल अंग्रेजी में

सावधानी करते हैं, परन्तु जहां वे असाधारण होती हैं, छोटी नौकाओं का चलना बन्द हो जाता है। अतः विस्थापन होना अनिवार्य है।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : क्या तेल शोधक कारखाना आजकल अपनी अनुकूलतम क्षमता पर कार्य कर रहा है और, यदि नहीं, तो यह अपनी अनुकूलतम क्षमता पर कब काम करेगा ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : अब तेल शोधक कारखाना प्राय अपनी सामान्य क्षमता पर कार्य कर रहा है। इस में और अधिकतम क्षमता में थोड़ा अन्तर है, क्योंकि हमारे स्टाकों की सप्लाई शायद पूर्णरूपेण पूरी नहीं हुई है। हम अपने स्टाक साफ करने के लिये जितना कार्य करना चाहते हैं, उतना कर नहीं सकते क्योंकि इस ओर बहुत अधिक जमाव है, परन्तु आशा है कि अधिकतम उत्पादन शीघ्र ही आरम्भ हो जायेगा।

†**श्री रामेश्वर टांटिया** : क्या इस कारखाने को चलाने में हमें रूमानिया का पूर्ण सहयोग मिल रहा है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : इस का कोई प्रश्न नहीं है। उन में से अधिकतर चले गये हैं। शायद तेरह या चौदह शेष हैं।

†**श्री त्यागी** : गोहाटी तेल शोधक कारखाने के सामरिक महत्व के स्थान पर स्थित होने के कारण क्या इस कारखाने को विमान आक्रमण से बचाने के लिये उचित सावधानी की गई है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह मंत्रालय इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता।

श्री म० ला० द्विवेदी : मंत्री महोदय ने अभी बतलाया कि बाढ़ की सूचना पहले से नहीं जानी जा सकती। मैं पूछना चाहता हूं कि जब बाढ़ आ गयी उस वक्त काम को सावधानी से चलाने के सम्बन्ध में क्या कदम उठाये गये थे, और क्या जरा भी क्षति नहीं हुई ? और अगर बाढ़ के कारण कोई क्षति हुई तो क्या ?

श्री के० दे० मालवीय : मैंने यह नहीं कहा था कि बाढ़ का पता नहीं चला। मैंने कहा था कि बाढ़ की भयंकरता के बारे में कोई अनुमान नहीं किया जा सकता था। जैसा मैं ने कहा जब बड़ी बाढ़ आ गयी तो जो रेलवे की फैरी चलती थी वह बन्द हो गयी। जब वह बन्द हो गयी तो हमारे इंस्टा-लेशन्स का तेल रुक गया और इस वजह से रिफाइनरी को बन्द करना पड़ा और १५-१६ दिन काम बन्द रहा इस से क्षति हुई।

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा** : क्या इस गोहाटी तेल शोधक कारखाने को बढ़ाने की कोई योजना है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : हां, एक विस्तार योजना है जो साधारण रूप में चल रही है।

†**श्री रंगा** : "साधारण रूप" से क्या अभिप्राय है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : मैं अपने माननीय मित्र को सूचित करने के लिये इस की व्याख्या करूंगा। हमारी वर्तमान योजनाओं के अनुसार हमें योजना के अन्त तक

†मूल अंग्रेजी में

इस तेल शोधक कारखाने का विस्तार करने का है । हम ने क्षमता बढ़ाने के लिये किसी असाधारण साधन का सहारा नहीं लिया है । यह साधारण रूप में हो रहा है ।

†**श्री हेम बरुआ** : क्या तीनों एकक, कोककर एकक, तेल आसवन एकक और मिट्टी का तेल शोधन एकक अब तक गोहाटी तेल शोधक कारखाने में पूरे हो गये हैं ? यदि नहीं, तो सरकार का विचार आयल इंडिया द्वारा लाये गये तेल के शेष भाग का और वहां शोधित हुए तेल का क्या प्रयोग करने का है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : अब सभी एकक सामान्य रूप में काम कर रहे हैं । जब मैं ने पूर्ण अधिष्ठापित क्षमता और वास्तविक कार्य के बीच अन्तर का उल्लेख किया था, मैं ने कहा था कि शायद स्टोर क्षमता के पूरा होने के कारण पूर्ण क्षमता का प्रयोग नहीं किया जा रहा है । परन्तु तीनों एकक काम कर रहे हैं ।

†**श्री बसुमतारी** : मैं पहिले प्रश्न का उत्तर नहीं समझ सका था । क्या स्वयं तेल शोधक कारखाने में काम बन्द हो गया था या क्षेत्र से तेल का आना बन्द हो गया था ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : कारखाना बन्द होने पर अशोधित तेल का पाइप से लाना भी बन्द करना होगा, क्योंकि स्टोर क्षमता भरी हुई है ।

†**श्री कृ० चं० पन्त** : कारखाना ब्रह्मपुत्र के सामान्य बाढ़स्तल से कितना ऊंचा है ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : मेरे पास वह जानकारी नहीं है ।

†**श्री प्र० चं० बरुआ** : मंत्री महोदय ने कहा था कि गोहाटी तेल शोधक कारखाने के कार्य के बन्द होने के साथ अशोधित तेल का संभरण भी रोक दिया गया । यदि हां, अशोधित तेल का उत्पादन भी रोक दिया गया था ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : अशोधित तेल का उत्पादन उसके प्रयोग के अनुसार तेल क्षेत्र से संभरण पर विनियमित होता है । जिस समय बरौनी तेल शोधक कारखाने में तेल का प्रयोग होगा, तब तेल क्षेत्र से अधिक अशोधित तेल का उत्पादन होगा ।

†**श्री शिवाजी राव शं० देशमुख** : कारखाने मैं अशोधित तेल अपलभ्य था सामान्य संभरण क्या है और क्या पाइपलाइन के १६ दिन तक बन्द होने पर इस का प्रयोग नहीं हो सकता था ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : दो प्रकार का स्टोर टैंक है, एक पैट्रोलियम उत्पादों के लिए है जो कारखाने में बनते हैं । वे वहां स्टोर किये जाते हैं और वहां से देश के पश्चिमी भाग को भेजे जाते हैं । स्टोर क्षमता रुक गई थी, अतः कारखाने में काम बन्द करना पड़ा ।

†**अध्यक्ष महोदय** : क्या स्टोर किये गये अशोधित तेल का कोई रिजर्व न था ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : नहीं । रिजर्व तो स्वयं पाइपों में होता है । स्टोर टैंकों में अधिक रिजर्व नहीं होता ।

---

†मूल अंग्रेजी में

दिल्ली के एक होटल में पकड़े गये कारतूस

+

†*१७९. श्री भागवत झा आजाद :
श्री भक्त दर्शन :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री विश्वनाथ राय :
श्री हरिश्चन्द्र माथुर :
श्री अ० क० गोपालन :
श्री प० कुन्हन :
श्री मुहम्मद इलियास :
श्री दाजी :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री नम्बियार :
श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री का० ना० तिवारी :
श्री दशरथ देब :
श्री सुरेन्द्रपाल सिंह :
श्री यशपाल सिंह :
श्री कोल्ला वैंकय्या :
श्री कपूर सिंह :
श्री प्र० कु० घोष :
श्री राम रतन गुप्त :
श्री बागड़ी :
महाराजकुमार विजय आनन्द :
श्री यु० द० सिंह :
श्री पें० वेंकटासुब्बैया :
श्री तन सिंह :
श्री इन्द्रजीत गुप्त :
श्री अ० व० राघवन :
श्री पोट्टेकाट्ट :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या गत सितम्बर में दिल्ली पुलिस ने नई दिल्ली के एक होटल के कमरे में एक अमरीकी नागरिक के पास से कई सौ कारतूस पकड़े थे ;

(ख) क्या सफदरजंग हवाई अड्डे पर खड़े उनके व्यक्तिगत विमान की तलाशी लेने पर भी बहुत बड़ी संख्या में कारतूस प्राप्त हुए थे ; और

---

†मूल अंग्रेज़ी में

(ग) सरकार ने इस मामले में क्या कार्यवाही की है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)** : (क) और (ख) अशोक होटल और विदेशी के निजी विमान से क्रमानुसार ७६६ और १०,००० शाट-गन के कारतूस मिले थे ।

(ग) उन पर भारतीय शस्त्र अधिनियम की धारा २० के साथ पठित धारा १६(च) के अन्तर्गत अभियोग चलाया गया है । मामला न्यायालय में है ।

†**श्री भागवत झा आजाद** : क्या सरकार यह पता लगा सकी है कि यह विदेशी इतने अधिक कारतूस कहां से लाया था ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह जांच पड़ताल बतायेगी । मामला न्यायाधीन है ।

†**श्री भागवत झा आजाद** : परन्तु यह कहा जा सकता है कि वह कहां से लाया ?

†**अध्यक्ष महोदय** : वे कैसे कह सकते हैं । इसका पता भी जांच पड़ताल से लगेगा ।

†**श्रीमती सावित्री निगम** : क्या माननीय मंत्री हमें बता सकते हैं कि इसका उद्देश्य क्या था ?

†**अध्यक्ष महोदय** : शान्ति, शान्ति । यदि माननीय मंत्री उद्देश्य बता दें, तो पुलिस क्या करेगी ?

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त** : वह विदेशी एयरलाइन्स जिसके यह विदेशी सभापति या अध्यक्ष हैं, भारत में होकर बरास्ता दिल्ली नियमित उड़ान करती रही है ? क्या अभी तक स्थिति अपरिवर्तित है ?

†**श्री दातार** : उस एयरलाइन्स ने एयर इण्डिया इंटरनेशनल के साथ एक ठेका किया है और इस लिये वे उड़ान करते हैं ।

†**अध्यक्ष महोदय** : अगला प्रश्न ।

श्री म० ला० द्विवेदी : अध्यक्ष महोदय, एक आवश्यक प्रश्न करना था ।

अध्यक्ष महोदय : जो आगे आवेगा वह इससे भी ज्यादा आवश्यक है ।

सिलीगुड़ी-गौहाटी पाइप लाइन परियोजना

+

†*१८०. { **श्री मुरारका** :
श्री रा० शि० पाण्डेय :

क्या **खान और ईंधन** मंत्री १३ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ५८९ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सिलीगुड़ी-गौहाटी पाइपलाइन परियोजना के परियोजना प्रतिवेदन के सम्बन्ध में कोई निर्णय किया गया है ;

(ख) यदि हां, तो वह क्या है ; और

(ग) इस परियोजना की कुल लागत क्या है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) हां, श्रीमान् ।

---

†मूल अंग्रेज़ी में

(ख) अमरीका का वेकटेल कारपोरेशन को इस पाइपलाइन परियोजना का डिजाइन, इंजिनीयरी तथा निर्माण-प्रबन्ध संबंधी कार्य दिया गया है ।

(ग) लगभग ६ करोड़ रु० ।

†**श्री मुरारका** : यह पाइप लाइन कुल कितनी लम्बी होगी और ठीक अनुमानित लागत कितनी होगी ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : यह योजना १६० मील पाइप लाइन बनाने की है । मोटाई ८" होगी और कुल लागत विदेशी मुद्रा सहित ६ करोड़ रु० होगी ।

†**श्री मुरारका** : क्या इस पाइप लाइन के लिए आवश्यक सामग्री, पाइप, आदि, रूरकेला देगा या विदेशों से उनका आयात होगा ?

†**श्री के० दे० मालवीय** : वर्तमान योजना के लिए समूचा सामान रूरकेला से मिलेगा ।

'सन-कुकर'

+

†*१८१. { **श्री मुरारका** :
श्री कृ० चं० पन्त :
श्री राजेश्वर पटेल :

क्या **वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या 'सन कुकर' को अन्तिम रूप से तैयार कर लिया गया है और क्या इसे वाणिज्यिक पैमाने पर तैयार करने का विचार है ; और

(ख) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ?

†**वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून् कबिर)** : (क) और (ख) राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली ने एक सौर्य 'कुकर' बनाया था और वह वर्ष १६५२ में पेटेन्ट कराया गया था । वाणिज्यिक उत्पादन के लिए पेटेन्ट दो फर्मों को किराये आदि पर दिया गया परन्तु उत्पादन बहुत कम हुआ है ।

†**श्री मुरारका** : सरकार ने या प्रयोगशाला ने इस प्रयोग पर कुल कितना व्यय किया है ?

†**श्री हुमायून कबिर** : इसका पृथक ब्योरा नहीं बताया जा सकता क्योंकि यह कार्य राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के सामान्य कार्य के एक अंग के रूप में किया गया था । अतः कोई पृथक खाता नहीं रखा गया ।

†**श्री त्यागी** : क्या यह पकाता भी है ?

†**श्री मुरारका** : यह लोकप्रिय क्यों नहीं हुआ ? क्या यह प्रभावी है, या यह असफल रहा है ?

†**श्री त्यागी** : सूर्य में दोष है ।

†**श्री हुमायून कबिर** : बड़ी कठिनाई यह है कि आप ऐसा कुकर चाहते हैं कि जो वर्ष भर काम आ सके । कभी जर्षा-काल होता है । दूसरी बात यह है कि यह रात में काम नहीं करता । ये दोनों मूल कठिनाइयां हैं । हमने सौर्य शक्ति का प्रयोग खाना बनाने के अतिरिक्त अन्य प्रयोगों के लिए करने पर ध्यान देना आरम्भ कर दिया है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री मुरारका : क्या ये कठिनाइयां पहिले से नहीं विचारी जा सकती थीं ?

†श्री कृ० चं० पन्त : भारत जैसे उपोष्ण कटिबन्धीय देशों में विद्युत जनन के लिए सौर्य शक्ति के उपयोग की अत्यधिक संभावनायें हैं, इसका ध्यान रखते हुए, क्या सरकार ने भारत में सौर्य-शक्ति को प्रयोग करने का उपाय जानने के लिए कोई विशेष प्रोग्राम बनाया है ?

†अध्यक्ष महोदय : प्रश्न सौर्य-शक्ति के बारे में नहीं है, अपितु कुकर के बारे में है । हमारा सीधा संबंध केवल कुकर से है । समूची सौर्य शक्ति के प्रयोग का प्रश्न नहीं पूछा जा सकता ।

†श्री उ० मू० त्रिवेदी : क्या ये कुकर खाना पकाने के लिए प्रयोग किये गये थे या वस्तुओं को गरम रखने के लिए प्रयोग किये गये थे ?

†श्री हुमायून कबिर : उनका प्रयोग खाना पकाने के लिए किया गया था, और इस सभा के एक माननीय सदस्य ने इन कुकरों का काफी समय तक प्रयोग किया था । परन्तु दो कठिनाइयों के कारण, जिनका मैं ने उल्लेख किया था, उनका प्रयोग रात में नहीं किया जा सकता । अभी तक इस शक्ति को स्टोर करने के लिए कोई बैटरी नहीं निकाली गई है और इस कारण वे बहुत प्रभावी सिद्ध नहीं हुए हैं ।

†अध्यक्ष महोदय : क्या यह केवल इन सदस्य की साक्ष्य पर ही इसे छोड़ दिया गया है ?

†श्री राजेश्वर पटेल : क्या सरकार को यह 'सन कुकर' पूरा करने के लिये इन कठिनाइयों का बोध था ?

†श्री हुमायून कबिर : जब वैज्ञानिक कोई प्रयोग करते हैं, तो वे स्वभावतः कुछ जोखिम उठाते हैं । यदि यह सफल हो जाता, तो यह देश की एक बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या का समाधान कर देता । दुर्भाग्यवश यह प्रयोग अधिक सफल नहीं रहा । जैसा कि मैंने पहिले बताया था कि पानी गरम करने में यह बहुत सफल रहा है और अब हमारा मुख्य ध्यान इस पर है कि क्या हम विद्युत पैदा कर सकते हैं . . . . (अन्तर्बाधाएं)

†अध्यक्ष महोदय : इससे पहिले कि मंत्री महोदय प्रश्नों का उत्तर दें, माननीय सदस्य उठकर दो और तीन बार उसे रोक देते हैं ।

†श्री अ० प्र० जैन : क्या माननीय मंत्री उनके मूल्य के बारे में कुछ बता सकेंगे ?

†श्री हुमायून कबिर : यह लगभग ८० रु० मूल्य पर बेचा जा रहा था ।

†श्री बसुमतारी : यह गैर-सरकारी क्षेत्रों में है या सरकारी क्षेत्र में ?

†अध्यक्ष महोदय : यह बीच में है । अगला प्रश्न ।

एक मंत्री के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच करने के लिये प्रशासन प्रणाली

†*१८३. श्री हरि विष्णु कामत : क्या गृह-कार्य मंत्री २६ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ६६७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार के एक मंत्री के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के लिये कोई प्रशासन प्रणाली है ;

(ख) यदि हां, तो उसका तरीका क्या है और प्रारम्भिक मामला सिद्ध होने की दशा में अगली प्रक्रिया क्या होगी ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) यदि नहीं, तो उसके कारण क्या हैं ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) और (ख) मामले की प्रकृति या परिस्थितियों के अनुसार जहां आवश्यक हो, ऐसे आरोपों की जांच की जायेगी ।

(ग) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : स्वतन्त्रता के बाद सरकार के पास कुल कितने मंत्रियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप लगाये गये हैं और ऐसे कितने मामलों में पूछ ताछ की गई है और उसका क्या परिणाम रहा ?

†**श्री त्यागी** : श्रीमान्, एक औचित्य के प्रश्न पर । उनका प्रश्न क्या है ? क्या उन्होंने किसी अखबार में पढ़ा है या उनके पास कोई सामग्री है जिसके आधार पर वह कह रहे हैं ? यह आक्षेप है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : वह मंत्रियों के खिलाफ प्राप्त हुई शिकायतों के बारे में पूछ रहे हैं ।

†**श्री त्यागी** : कितने मंत्रियों के खिलाफ ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यदि कोई नहीं है, तो गृह-मंत्री कह सकते हैं कि किसी भी मंत्री के खिलाफ कोई शिकायत नहीं है ।

†**गृह-कार्य मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री)** : कुछ मामलों में, कुछ वर्ष पहिले कुछ पूछ ताछ हुई थी । एक राज्य के मंत्रियों के बारे में जिसके बारे में शायद कुछ सदस्य जानते हैं विशेषकर श्री कामत को इसका ज्ञान हो क्यों कि वह भी उसी राज्य के हैं और मुझे खेद है कि उनके ही राज्य में कुछ शिकायतें हुई थीं और एक व्यक्ति पर अभियोग चलाया गया था ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : उसके मेरे राज्य में शामिल होने से पहिले यह हुआ था ।

श्री लाल बहादुर शास्त्री : तब दो या तीन पूछ ताछ की गई थीं परन्तु पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध न थीं । मैं समझता हूं कि यह मामला पांच या छः वर्ष या और अधिक समय पहिले का है ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : क्या सरकार को इस व्यापक धारणा का ज्ञान है कि न्यूनता तथा त्याग का चालू आन्दोलन वह अत्यधिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव उस समय तक उत्पन्न नहीं कर सकेगा जब तक कि भ्रष्टाचार सभी स्तरों पर समाप्त न हो जाये, और यदि हां, तो क्या सरकार का विचार भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपना वर्तमान दृष्टिकोण बदलने का है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह बहुत बड़ा प्रश्न है । वह प्रश्न के विषय के बाहर अनेक आरोप लगा रहे हैं । प्रश्न यह पूछा गया है कि मंत्री के खिलाफ आरोपों की जांच करने की क्या व्यवस्था है । इसका उत्तर यह है कि कुछ समय पहिले कुछ शिकायतें हुई थीं ।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी** : क्या यह सच नहीं है कि कुछ राज्यों के मंत्रियों के विरुद्ध की गई कुछ जांच पड़तालें यह पता लगने के बाद छोड़ दी गई कि आरोपों में कुछ सार था और वे किसी युक्तियुक्त निष्कर्ष तक नहीं चलाई गईं ? क्या सरकार को ऐसे किसी मामल का पता है ?

†**श्री लाल बहादुर शास्त्री** : मैं बहुत चाहता था कि माननीय सदस्य यह प्रश्न न पूछते । सरकार या मंत्रियों पर अप्रत्यक्ष रूप में आरोप करना सर्वथा अनुचित है । यदि निश्चय ही कोई मामला है, तो वह मुझे लिखें और मैं उसकी जांच करने को तैयार हूं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : भारत के भूतपूर्व वित्त मंत्री, श्री चिन्तामणि देशमुख, ने पीछे इस प्रकार का वक्तव्य दिया था कि अगर सरकार कोई निष्पक्ष जांच कराये, तो मैं कुछ मंत्रियों के सम्बन्ध में एक अधिकृत सूची पेश करने के लिये तैयार हूं। मैं यह जानना चाहता हूं कि उस सम्बन्ध में कौन सी पालिसी अपनाई गई थी और वह बात बीच में ही क्यों समाप्त हो गई।

अध्यक्ष महोदय : वह सवाल यहां पैदा नहीं होता। सवाल यह है कि तहकीकात की मशीनरी क्या है और माडस आपरेंडी क्या है। इस वक्त सवाल यह नहीं है कि किसी ने क्या कहा था और क्या किया गया था।

श्री यशपाल सिंह : जब बड़े बड़े मिनिस्टर्ज पब्लिक्ली यह एडमिट करते हैं कि हम वार के लिये तैयार नहीं थे और इस से चाइना को मजबूती पहुंचती है, तो क्या यह सारी नेशन की शिकायत नहीं है कि हमारे देश की कमजोरी जाहिर की जा रही है?

†**अध्यक्ष महोदय** : जो प्रश्न संगत न हों, वे नहीं पूछे जाने चाहियें।

†**श्री रंगा** : गजेटेड अधिकारियों के लिये यह नियम है कि उन्हें सेवा में आने से पहिले बताना पड़ता है कि उनकी कितनी सम्पत्ति है और यह बात प्रति वर्ष बतानी पड़ती है। क्या ऐसा कोई नियम है या सरकार ऐसा नियम बनाने पर विचार करेगी कि विभिन्न मंत्रालयों के मंत्रियों को भी अपनी सम्पत्ति बतानी पड़े?

†**श्री त्यागी** : संसत्सदस्यों पर भी लागू होना चाहिये।

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रश्न का दूसरा भाग सुझाव है। पहिले भाग का उत्तर दिया जा सकता है।

†**श्री लाल बहादुर शास्त्री** : नहीं, श्रीमान्। ऐसा कोई नियम नहीं है।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : क्या सरकार का विचार ऐसा नियम बनाने का है?

†**अध्यक्ष महोदय** : अनेक बार प्रस्ताव किया गया है।

श्री विभूति मिश्र : माननीय गृह-मंत्री ने कहा है कि कुछ मिनिस्टरों के खिलाफ शिकायतें आईं, जो कि निराधार पाई गईं। मैं यह जानना चाहता हूं कि जिन्होंने वे शिकायतें कीं, क्या उन को सजा देने का सरकार के पास कोई जरिया है।

अध्यक्ष महोदय : यह सवाल मिनिस्टरों के बारे में है, शिकायत करने वालों के बारे में नहीं।

श्री विभूति मिश्र : अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानना चाहता हूं कि जो लोग मिनिस्टरों के विरुद्ध शिकायत करें और वह शिकायत निराधार साबित हो, तो उन लोगों को सजा देने का कोई तरीका सरकार के पास है।

अध्यक्ष महोदय : वह दूसरा सवाल है।

श्री विभूति मिश्र : गृह-मंत्री ने जो कुछ कहा है, यह उसी के बारे में सप्लीमेंटरी है।

अध्यक्ष महोदय : आर्डर, आर्डर।

---

†मूल अंग्रेजी में

मिजो राष्ट्रीय फ्रंट

+

†*१८४. { डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी :
श्री तन सिंह :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि स्वतन्त्र मिजोलैंड ग्रान्दोलन के संगठनकर्त्ता स्वयंसेवक दल बना रहे हैं; ग्रौर

(ख) यदि हां, तो इस प्रकार की कार्यवाहियों को खत्म करने के लिये क्या कार्यवाही की जा रही है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) हां ।

(ख) राज्य सरकारें घटनाग्रों पर कड़ी निगरानी रख रही हैं ग्रौर ग्रावश्यक कायवाही करेंगी । केन्द्रीय सरकार भी स्वयं स्थिति की जानकारी रख रही है ।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी** : क्या यह सच है कि मिज़ो ग्रान्दोलन को विदेशी ग्रौर विदेश सैनिक, नैतिक तथा सामान सम्बन्धी सहायता दे रहे हैं ग्रौर यदि हां, तो मिजोलैंड ग्रान्दोलन को यह सहायता रोकने के लिए क्या कार्यवाही की गई है ?

†**गृह कार्य मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री)** : इस मामले के बारे में मैं यहां कुछ नहीं कह सकता क्योंकि इस ग्रान्दोलन में भाग लेने वाले देशों के बारे में जानना सरल कार्य नहीं है । फिर भी, हमें कुछ जानकारी है ग्रौर उसे बताना नहीं चाहता ।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंघवी** : चीनी ग्राक्रमण से उत्पन्न एक वर्तमान संकट को ध्यान में रख कर क्या भारत में प्रतिरक्षा प्रयत्नों में सहायता देने के लिए मिजोलैंड ग्रान्दोलन के संचालकों से सहयोग देने की प्रार्थना की गई है ग्रौर यदि हां, तो मिजोलैंड ग्रान्दोलन के संचालकों की क्या प्रतिक्रिया है ?

†**श्री लाल बहादुर शास्त्री** : माननीय सदस्य को यह जान कर हर्ष होगा कि हमारे प्रयत्न किये बिना ही उन्होंने एक सम्मेलन किया था ग्रौर एक संकल्प स्वीकृत किया था जिस में उल्लेख था कि हम सरकार के समर्थक हैं ।

†**श्री हेम बरुग्रा** : पिछली बार मेरे एक ग्रनुपूरक प्रश्न के उत्तर में यही वात कही गई थी कि मिजोलड मोर्चे पर बड़ी सतर्क निगरानी रखी जा रही है । ग्रब हम देखते हैं कि वे ग्रपने स्वयंसेवी दल बना रहे हैं । सरकार ने ग्रापात के विशेष कारण से इस संस्था को बन्द करने के लिए क्या कार्यवाही की है ?

†**श्री लाल बहादुर शास्त्री** : मैं ने जो पहिले कहा है, उसकी दृष्टि से इसकी ग्रावश्यकता नहीं है । ग्राशा है कि माननीय सदस्य वर्तमान स्थिति को समझेंगे ग्रौर ऐसा कुछ नहीं करेंगे जिससे ये लोग नाराज हों ।

†**श्री रंगा** : इन लोगों को हमारा प्रशासन मनाने, हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व ग्रौर राष्ट्रीय सरकार को मनाने ग्रौर यह देखने के लिए सरकार ने क्या कार्यवाही की है कि उनका ग्रधिकतम सहयोग प्राप्त हो ?

---

†मूल ग्रंग्रेजी में

†**श्री लाल बहादुर शास्त्री** : इस मामले में आसाम के मुख्य मंत्री रुचि ले रहे हैं और हमें भी लिखा है कि वे क्या करना चाहते हैं ।

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा** : क्या इस आन्दोलन में कोई विदेशी हाथ है ?

†**श्री लाल बहादुर शास्त्री** : मैं इस प्रश्न का उत्तर पहिले ही दे चुका हूं ।

व्यवसाय प्रबन्ध

†*१८६. { **श्री श्याम लाल सर्राफ** :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री बसुमतारी :

क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या कलकत्ता और अहमदाबाद में व्यवसाय प्रबन्ध के दो स्कूल खोल दिये गये हैं;

(ख) आरम्भ में कितने प्रशिक्षार्थी भरती किये जायेंगे तथा क्या इसके पश्चात् अन्य प्रशिक्षार्थियों को भी भरती किया जायेगा;

(ग) इन स्कूलों में प्रशिक्षार्थियों को कौन-कौन से विषय पढ़ाये जाते हैं; और

(घ) इन स्कूलों में प्रवेश के लिये न्यूनतम अर्हता क्या है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून कबिर)** : (क) कलकत्ता की संस्था चल रही है और अहमदाबाद की संस्था प्रारम्भ करने के लिए व्यवस्था की जा रही है ।

(ख) गत अक्तूबर में कलकत्ता संस्था द्वारा अल्पकाल के लिए आरम्भ किये गये पाठ्यक्रम में २४ प्रशिक्षार्थी प्रविष्ट किये गये थे ।

पूरी तरह संगठित हो जाने पर प्रत्येक संस्था में अल्पकालीन पाठ्यक्रम के अतिरिक्त नियमित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में भी ६० उम्मीदवार प्रविष्ठ किये जायेंगे ।

(ग) नियमित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में अध्ययन के लिए उद्योग और व्यवसाय प्रबन्ध के विषय होंगे ।

(घ) ये पाठ्यक्रम सामान्यतः औद्योगिक, वाणिज्यिक, प्रशासनिक और अन्य संगठनों में काम करने वाले कार्यपालक अधिकारियों के लिए हैं । युवक स्नातकों को भी कुछ संख्या में प्रविष्ट किया जायेगा ।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ** : इस पाठ्यक्रम की अवधि क्या होगी ? क्या इस में सरकारी और गैर-सरकारी दोनों क्षेत्रों से लोगों को प्रविष्ट किया जायेगा ?

†**श्री हुमायून कबिर** : पहले पाठ्यक्रम में २४ लोग आये हैं । सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्र तथा सरकार और उद्योगों से ये लोग लिये गये हैं । नियमित पाठ्यक्रम सामान्यतः दो वर्ष का होगा ।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ** : कलकत्ता स्कूल में सारे प्रशिक्षार्थी पूरे करने में कितना समय लगेगा और अहमदाबाद का स्कूल कब तक शुरू होगा ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री हुमायून कबिर** : जैसा मैं ने कहा है कलकत्ता में पांच सप्ताह का अल्पकालीन पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया है। आशा है अगले वर्ष के अन्त तक नियमित पाठ्यक्रम आरम्भ हो जायेगा । अहमदाबाद में संभवतः प्रायः एक वर्ष लग जाये ।

†**श्री रामेश्वर टांटिया** : क्या प्रवेश के लिए राज्यवार अभ्यंश निर्धारित किये जायेंगे और क्या ऐसे स्कूल देश के अन्य भागों में भी स्थापित किये जायेंगे ?

†**श्री हुमायून कबिर** : इस समय तो हम दो अखिल भारतीय संस्थायें स्थापित कर रहे हैं। यदि आवश्यक हुआ तो बाद में अन्य संस्थाएं खोल दी जायेंगी । राज्यवार अभ्यंश निर्धारित करना आवश्यक नहीं है । हम सारे भारत के छात्रों को ले रहे हैं।

†**श्री इन्द्रजीत गुप्त** : क्या कलकत्ता की संस्था की सारी वित्तीय व्यवस्था सरकार द्वारा की जाती है या उसके खर्च में गैर-सरकारी उद्योग क्षेत्र भी अंशदान करता है ?

†**श्री हुमायून कबिर** : उद्योग भी काफी अंशदान कर रहा है ।

†**श्री बसुमतारी** : ये संस्थाएं बिल्कुल वाणिज्यिक आधार पर हैं तो फिर क्या इन में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के लिए रक्षित जगहें रखी जायेंगी ?

†**श्री कमल नयन बजाज** : पहले बम्बई विश्वविद्यालय में व्यवसाय प्रबन्ध का स्कूल स्थापित करने का विचार था । बाद में इसे कलकत्ता में स्थापित किया गया । क्या बम्बई विश्व-विद्यालय का भी इसे स्थापित करने का विचार है और यदि हां तो इसमें क्या प्रगति हुई है ?

†**श्री हुमायून कबिर** : माननीय सदस्य के प्रश्न का पहला भाग गलत है। विभिन्न विश्वविद्यालयों में अन्य प्रकार के व्यवसाय पाठ्यक्रम—वाणिज्यिक क्रम— हैं और अब भी अन्य क्षेत्रों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हैं। ये दो संस्थाएं कलकत्ता और अहमदाबाद में स्थापित की जानी हैं।

स्पिती घाटी में भूतत्वीय सर्वेक्षण दल

+

†*१८७. { **श्री राम रतन गुप्त** :
श्री बी० चं० शर्मा :
श्री हेम राज :
महाराजकुमार विजय आनन्द :
श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री प्र० के० देव : }

क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या केन्द्रीय भूतत्वीय सर्वेक्षण विभाग के कर्मचारी २६ सितम्बर, १९६२ को स्पिती घाटी में एक चलते हुए बर्फानी तूफान में घिर गये थे ; और

(ख) यदि हां, तो इस घटना का विवरण क्या है ?

†**खान और ईंधन मंत्री के सभा सचिव (श्री तिम्मय्या)** : (क) हां श्रीमान ।

(ख) घटना का ब्योरा बताने वाला एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है ।

†मूल अंग्रेजी में

विवरण

१९६२–६३ के लिये भारत के भूतत्वीय सर्वेक्षण विभाग के क्षेत्रीय वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार दो सहायक भतत्ववेत्ताओं, एक सर्वेक्षक, और प्रविधिज्ञ सहायक का एक दल १४ जून, १९६२ को बाराशिगरी ग्लेशियर करने के लिये जाना था और अनुमान था कि वह अपना कार्य २८ सितम्बर, १९६२ को पूरा करेगा। बाराशिगरी ग्लेशियर लगभग १३००० फुट की उंचाई पर है और बाराशिगरी नाला तथा चन्द्रा नदी के संगम के निकट खोकसर से पूर्व दक्षिण पूर्व में लगभग २५ मील की दूरी पर है। वे भूतत्वीय जांच के सम्बन्ध में लाहोल घाटी में बाराशिगरी ग्लेशियर पर शिविर लगाये बैठे थे। उन्होंने इस ऋतु के लिये नक्शा तैयार कर लिया था और दल को वहां से २१ सितम्बर को लौटना था। किन्तु १९ और २० और २१ को वर्षा शुरू हो गई और बहुत ज्यादा बर्फ पड़ी जिस के परिणामस्वरूप बर्फ के तोदे बहने लगे और यह दल बर्फ में घिर गया। खाने और ईंधन की कमी के कारण उन्हें कवहा अतः एक समय ही भोजन मिलता रहा और प्रदेश के दुर्गम होने के कारण उन्हें कोई सहायता न पहुंच सकी और २४ तारीख को उन्हें सामान और शिविर को छोड़ना पड़ा। उन्होंने अपने तैयार किये हुए नक्शे और रेखा चित्र लिये, ताजा बर्फ पर ६ किलोमीटर मार्ग तय किया और शिगरी नदी को पार किया और अगले दिन उन्होंने छाती तक गहरी चन्द्रा नदी को पार किया और रात को छाटाधारा रेस्ट हाउस में पहुंच गये। तत्पश्चात् दल छै दिन तक यात्रा करके लाहौल की ओर रोहतांग दर्रे के तल में खोकसार पहुंच गये। वहां कुछ दिन आराम करने के बाद वे ६–१०–१९६२ को मनाली पहुंच गये। उनमें से किसी की मृत्यु नहीं हुई न कोई जखमी हुआ। दल द्वारा छोड़ी हुई वस्तुएं बाद में वहां से लाई गईं।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : इस वक्तव्य से मुझे पता लगा है कि वे लोग १९ सितम्बर को बर्फ में घिर गये थे और वे ६ अक्तूबर, १९६२ को मिनाली पहुंचे। उन्हें इतने दिन तक क्यों कोई सहायता नहीं पहुंचाई गई जबकि वे इतनी मुसीबतें सह रहे थे ?

†**श्री तिम्मय्या** : १९, २० और २१ सितम्बर, १९६२ को वर्षा होती रही। दुर्गम स्थान होने के कारण वे शिविर को नहीं छोड़ सके। प्रतिरक्षा मंत्रालय ने हवाई जहाज द्वारा उनके लिये कुछ बस्तुएं फेंकी थीं किन्तु संदेह है कि वे उन्हें नहीं मिलीं। वर्षा बन्द होने पर कैम्प कैसे चल पड़े और उस कठिन प्रदेश में से चलते हुए छै दिन में मनाली पहुंचे।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : विपत्ति तो १९ सितम्बर को आई और वे लोग ६ अक्तूबर को मनाली पहुंचे। इसमें १६ दिन लग गये। क्या ये लोग किसी उपाय द्वारा हमें संदेश नहीं भेज सकते थे और क्या हमारे पास भी संसाधन न थे जिन से हम उन्हें सहायता भेज सकते ?

†**श्री तिम्मय्या** : उन्होंने नक्शों आदि सहित ताजा बर्फ में ६ किलोमीटर मार्ग तय किया।

†**अध्यक्ष महोदय** : उत्तर वक्तव्य में है।

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरनवीस)**: २० और २१ तारीख को वहां भारी वर्षा हो रही थी। उसके बाद बहुत बर्फ पड़ने लगी। उन के साथ संचार सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया गया। हवाई जहाजों द्वारा सामान भेजने की भी कोशिश की गई। वे चीजें उन्हें पहुंची या नहीं कहा नहीं जा सकता। इस बीच में वहां से दल चल पड़ा। बहुत दुर्गम क्षेत्र होने के कारण उन्हें मार्ग में कई स्थानों पर आराम करना पड़ा और मनाली पहुंचने में उन्हें १६ दिन लग गये। यदि वे सीधे आते तो इतना समय न लगता।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**अध्यक्ष महोदय** : उनके प्रश्न का अभिप्राय है कि जिस स्थान पर वे ठहरे हुए थे और जहां से वे भोजन के बिना तथा भूखे थे वहां उन्हें सामान पहुंचाना असंभव था या बहुत खतरनाक था। वे जानना चाहते हैं कि क्या उन्हें सामान नहीं पहुंचाया जा सकता था।

†**श्री हजरनवीस** : निरंतर प्रयत्न किये गये और जो कुछ संभव था किया गया था।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : वहां जो कुछ घटित हुआ उसे दृष्टिगत रखते हुए क्या सरकार कोई सावधानी बरतने का विचार रखती है जिससे ऐसे लोगों के ग्लेशियर में फंस जाने पर वे विपत्ति से बच सकें ?

†**श्री हजरनवीस** : हम निश्चय ही कार्यवाही करेंगे किन्तु मौसम के मुकाबले में कोई सावधानी नहीं बरती जा सकती क्योंकि मौसम तो किसी समय भी बिगड़ सकता है।

†**श्री हेम राज** : क्या ऋतु विज्ञान विभाग ने सूचना दी थी कि बर्फ पहले की अपेक्षा जलदी शुरू हो रही है ?

†**श्री हजरनवीस** : मुझे पता नहीं किन्तु ऐसे प्रदेश में गये हुए दल को सूचना भेजना बहुत कठिन होता है।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : क्या सरकार ने उन ग्रामीणों और अन्य लोगों को जिन्होंने इस दल को भोजन आदि दिया और उन्हें बचाने में सहायता की, कोई पुरस्कार दिये या देने का विचार रखती है ?

†**श्री हजरनवीस** : यह तो कार्यवाही के लिये सुझाव है।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ** : इस दल द्वारा मिले सर्वेक्षण के अभिलेख मुख्यालय में कब पहुंचे थे ?

†**श्री तिम्मय्या** : बाद में वह सारा सामान जो पीछे रह गया था विशेष दल द्वारा ले आया गया था।

प्रश्नों के लिखित उत्तर

स्नातकोत्तर कक्षाओं में आदिम जातियों के छात्र

†*१८२. **श्री दशरथ देब** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या स्नातकोत्तर कक्षाओं में बिना कठोर प्रतियोगिता के आदिम जातियों के छात्रों को दाखिल करने के बारे में त्रिपुरा प्रशासन और अन्य राज्यों के बीच कोई व्यवस्था है; और

(ख) यदि नहीं, तो क्या आस पास के राज्यों के विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर कक्षाओं में आदिम जातियों के बिना 'आनर्स' के स्नातक की उपाधि प्राप्त छात्रों के लिये कुछ जगहें रक्षित रखने का सरकार का विचार है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) तथा (ख) त्रिपुरा प्रशासन से जानकारी एकत्र की जा रही है और यथा समय लोक सभा के पटल पर रखी जायेगी।

---

†मूल अंग्रेजी में

कोयले का भाड़ा

†*१८८. **श्री त्रिदिब कुमार चौधरी** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान हाल ही में कोयले की ढुलाई के लिये समुद्रतटीय भाड़े में की गई १० प्रतिशत वृद्धि की ओर आकर्षित कराया गया है ; और

(ख) क्या कोयले के उपभोग के विविध केन्द्रों तक समुद्र द्वारा कोयला ढोने की लागत पर कोयला भाड़ा दरों की इस वृद्धि के परिणामों का अनुमान लगाया गया है, और क्या उस के आधार पर समुद्र द्वारा की जाने वाली कोयले की ढुलाई के लाभ तथा हानि का अनुमान लगाया गया है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) हां श्रीमान । कलकत्ता से भेजे गये कोयले के तटीय भाड़े की निम्नलिखित दरें १–६–१९६२ से लागू होंगी :

(१) कोचीन तक सब पत्तनों के लिये १० प्रतिशत

(२) कोचीन से आगे के सभी पत्तनों के लिये १५ प्रतिशत ।

(ख) सागर मार्ग द्वारा कोयले के यातायात के भाड़े में निस्संदेह वृद्धि हो गई है । किन्तु उपभोक्ता पर इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि उसे रेल व सागर और समस्त रेल मार्ग के भाड़ों में अन्तर के समान धन की सहायता दी जाती है । यह वित्तीय सहायता कोयला और कोक पर लगाये गये शुल्क से पूरी की जाती है और इस के परिणामस्वरूप नौवहन भाड़ा में वृद्धि होगी जिस से उत्पादन शुल्क की आय से बहुत राशि निकल जायेगी ।

तेल शोधक कारखाने

†*१८९. { **श्री विद्या चरण शुक्ल** :
श्री रा० शि० पाण्डेय :

क्या **खान और ईंधन** मंत्री २५ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ५८८ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या आयात होने वाले अशोधित तेल (क्रूड आयल) का उपयोग करने वाले गैर-सरकारी क्षेत्र के तेल शोधक कारखानों द्वारा उक्त कम्पनियों की उपलब्ध अतिरिक्त क्षमता का प्रयोग करने के लिये किये गये प्रस्तावों पर निर्णय कर लिया गया है ; और

(ख) यदि हां, तो उसका क्या ब्योरा है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) हां श्रीमान ।

(ख) उन्हें अस्थायी रूप से अधिकतम उपलब्ध क्षमता के साथ काम करने की अनुमति दी गई है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

स्कूलों में व्यवसायिक प्रशिक्षण

†*१९०. { श्री वारियर :
श्री बिशन चन्द्र सेठ :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिये विभिन्न राज्यों में स्कूलों को मशीनरी दी है ; और

(ख) यदि हां, तो उसका व्यौरा क्या है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) नहीं श्रीमान ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

उत्तर प्रदेश में त्रिवर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम

***१९१. श्री भक्त दर्शन** : क्या शिक्षा मंत्री २५ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ६०४ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उत्तर प्रदेश के चार राज्य विश्वविद्यालयों जैसे आगरा, इलाहाबाद, लखनऊ और गोरखपुर में त्रिवर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम जारी करने का जो प्रश्न विचाराधीन था, उसके बारे में क्या प्रगति हुई है ; और

(ख) उक्त विश्वविद्यालयों में कब तक उसके लागू हो जाने की आशा की जाती है ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली): विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने एक समिति की नियुक्ति की है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष इस समिति के अध्यक्ष होंगे । दीवान आनन्द कुमार, सदस्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग; श्री प्रेम कृपाल, सचिव, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार; वित्त मंत्रालय के एक प्रतिनिधि; श्री सेमुअल मथाई, सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग; और डा० पी० जे० फिलिप, विकास अधिकारी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, इस के सदस्य होंगे । यह समिति उत्तर प्रदेश के चार राज्य विश्वविद्यालयों में त्रिवर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम को लागू करने के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से वित्तीय सहायता के सम्बन्ध में, उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार के विस्तृत वित्तीय प्रस्तावों पर विचार करेगी ।

राज्य सरकार ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को यह भी सूचित किया है कि उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम और उस के पश्चात् त्रिवर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम लागू करने के प्रश्न की जांच करने के लिये राज्य सरकार ने एक उच्च स्तरीय समिति नियुक्त की है और राज्य सरकार इस समिति की सिफारिशें प्राप्त होने के पश्चात् ही, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नियुक्त समिति से परामर्श करेगी । आयोग उस समिति द्वारा की गई सिफारिशों के बारे में उत्तर प्रदेश सरकार से सूचना प्राप्त होने की प्रतीक्षा कर रहा है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

शिक्षा मंत्री सम्मेलन

†*१६२. { **श्री हेम राज :**
श्री यलमन्दा रेड्डी : }

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) हाल ही में दिल्ली में हुए शिक्षा मंत्री सम्मेलन में किन-किन विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई थी ;

(ख) सम्मेलन में क्या परिणाम निकाले गये और सरकार उन्हें कार्यान्वित करने के लिये क्या कार्यवाही करना चाहती है ;

(ग) क्या केन्द्रीय सरकार का विचार विभिन्न रज्यों में और केन्द्रीय विश्वविद्यालयों को स्थापित करने का है ; और

(घ) इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की गई है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) और (ख) एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनबन्ध संख्या ४८]**

(ग) जी हां ।

(घ) मामला विचाराधीन है ।

नहरकटिया की प्राकृतिक गैस

†*१६३. **श्री प्र० चं० बरुआ** : क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या नहरकटिया की प्राकृतिक गैस का पाइप द्वारा चाय बागानों अथवा निकटस्थ नगरों को संभरण करने का कोई प्रस्ताव है ;

(ख) यदि हां, तो इस प्रस्ताव की क्रियान्विति के लिये अब तक क्या कार्यवाही की गई है ; और

(ग) क्या नहरकटिया गैस का अन्य किसी प्रकार से उपयोग करने का प्रस्ताव है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) जी हां ।

(ख) आसाम सरकार चाय-बागानों के साथ बातचीत कर रही है ताकि इन चाय बागानों को गैस के सम्भरण की शर्तों के बारे में अन्तिम फैसला किया जा सके । साथ के नगरों अथवा स्थानीय औद्योगिक संस्थानों को गैस के सम्भरण के बारे में विचार बाद में किया जायेगा ।

(ग) विद्युत् जनन, उर्वरक, कार्बन ब्लैक सीमेन्ट, एक्राईलिक ।

सम्पूर्णानन्द समिति का प्रतिवेदन

श्री श्रीनारायण दास :
श्री प्र० के० देव :
श्री हेम बरुआ :
श्री वाजी :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री वारियर :

---

†मूल अंग्रेजी में

†*१९४. श्री नी० श्रीकान्तन नायर :
श्री मोहसिन :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री भक्त दर्शन :
श्री स० व० पाटिल :
श्री यशपाल सिंह :
श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री श्यामलाल सर्राफ :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री बसुमतारी :
श्री अ० ना० विद्यालंकार :
श्री लखनू भवानी :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या राष्ट्रीय जीवन में एकता बढ़ाने में शिक्षा के स्थान की जांच करने वाली संपूर्णानन्द समिति ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत कर दिया है ;

(ख) यदि हां, तो उस की मुख्य बातें क्या हैं ;

(ग) क्या प्रतिवेदन पर विचार कर लिया गया है ; और

(घ) यदि हां, तो क्या निश्चय किया गया है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) :** (क) जी हां ।

(ख) प्रतिवेदन की प्रतिलिपियां संसद्-पुस्तकालय में रख दी गयी हैं ।

(ग) और (घ). सिफारिशें सरकार के विचाराधीन हैं ।

विज्ञान का अध्यापन

†*१९५. श्री वारियर :
श्री बिशनचन्द्र सेठ :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने प्राथमिक अवस्था में विज्ञान के अध्यापन में सुधार के लिये राष्ट्रीय विज्ञान परामर्शदाता गोष्ठी की सिफारिशों को क्रियान्वित करने के लिये कोई कदम उठाये हैं ; और

(ख) यदि हां, तो उस का क्या ब्योरा है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) :** (क) प्रतिवेदन विचाराधीन है ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

†मूल अंग्रेजी में

उप-कुलपतियों का सम्मेलन

†*१९६. श्री राम रतन गुप्त :
श्री प्र० चं० बरुग्रा :
श्री जं० ब० सिंह बिष्ट :
श्री यशपाल सिंह :
श्री गुलशन :
श्री बूटा सिंह :
महाराजकुमार विजय ग्रानन्द :
श्री कोल्ला वेंकय्या :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री बिशन चन्द्र सेठ :
श्री बाल्मीकी :
श्री वासुदेवन नायर :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों के सम्मेलन ने प्रादेशिक भाषाग्रों को ग्रपनाने पर चर्चा की थी ;

(ख) सम्मेलन में ग्रौर किन समस्याग्रों पर विचार किया गया ग्रौर उन के सम्बन्ध में क्या सिफारिशें की गयीं ; ग्रौर

(ग) सिफारिशों पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

†शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) से (ग). ग्रपेक्षित जानकारी एकत्रित की जा रही है ग्रौर यथासमय सभा पटल पर रख दी जायेगी ।

ग्रन्दमान में गोलीकांड की न्यायिक जांच

†*१९७. श्री श्रीनारायण दास :
श्री भागवत झा ग्राजाद :
श्री भक्त दर्शन :
श्रीमती रेणु चक्रवर्ती :

क्या **गृह-कार्य** मंत्री ८ ग्रगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या १२९ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या ग्रन्दमान पुलिस द्वारा गोली चलाये जाने की न्यायिक जांच इस बीच पूरी हो चुकी है ; ग्रौर

(ख) यदि हां, तो जांच की क्या रिपोर्ट है ग्रौर उस के निष्कर्ष क्या हैं ?

†गृह-कार्य मंत्री (श्री लालबहादुर शास्त्री) : (क) जी हां ।

(ख) प्रतिवेदन विचाराधीन हैं ।

साइकिलों के चालान

†३६४. श्री दी० चं० शर्मा : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि १९६२-६३ वर्ष में ग्रब तक दिल्ली पुलिस ने साइकलों के चालानों के फलस्वरूप कितनी राशि एकत्रित की ?

---

†मूल ग्रंग्रेजी में

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : दो लाख, तीस हजार, एक सौ चालीस रुपये ।

ग्राम आवास योजना

†३६५. { **श्री सुरेन्द्रपाल सिंह :**
श्री ज्योति स्वरूप : }

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि केन्द्रीय सरकार द्वारा पिछड़े वर्गों की ग्राम आवास योजनाओं के लिये तीसरी योजना के अन्तर्गत कितना रुपया निर्धारित किया गया है, और इस मद के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश राज्य को कितनी राशि दी जा चुकी है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)** : तीसरी योजना के अन्तर्गत पिछड़े वर्गों के लिये ग्राम आवास योजना नाम की कोई योजना नहीं । पिछड़े वर्गों के कल्याण के लिये योजना के अन्तर्गत कुछ आवास योजनायें अवश्य हैं । इन योजनाओं से मुख्यतः लाभ देहाती क्षेत्रों को ही होगा । इन योजनाओं के लिये कुल ८९७.७८ लाख रुपये की व्यवस्था की गयी है ।

योजना के अन्तर्गत जो भी छोटे छोटे आयोजन होते हैं उन के लिये राज्य सरकारों को केन्द्रीय सहायता देने की प्रक्रिया यह है कि जितनी राशि एक वर्ष में दी जानी होती है उस के आधार पर मासिक पेशगी अदायगी कर दी जाती है । अतः यह बताना सम्भव नहीं होगा कि केवल आवास योजनाओं के लिये उत्तर प्रदेश की सरकार को पेशगी क्या दिया गया है ।

उत्कल विश्वविद्यालय को अनुदान

†३६६. **श्री राम चन्द्र मलिक** : क्या शिक्षा मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) उड़ीसा राज्य के उत्कल विश्वविद्यालय के विभिन्न कालिजों को १९६१-६२ में विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग ने कुल कितनी राशि अनुदान के रूप में दी है ; और

(ख) १९६२-६३ के लिये इन संस्थाओं को दो गई अथवा देने के लिये निर्धारित राशि क्या है?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) १४,९९,९९३ रुपये ४७ नये पैसे ।

(ख) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कुछ निर्धारित नहीं हुआ ।

विद्यार्थियों के शिक्षा पर्यटन

†३६७. **श्री रामचन्द्र मलिक** : क्या शिक्षा मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि १९६१-६२ और १९६२-६३ के वर्षों में राज्य में तथा राज्य के बाहर विद्यार्थियों के शिक्षा पर्यटनों के लिये केन्द्रीय सरकार ने कितनी राशि उड़ीसा सरकार को दी है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)**: धन की कमी के कारण १९६१-६२ में किसी भी राज्य को शिक्षा सम्बन्धी दौरों के लिये कोई राशि नहीं दी गई । १९६२-६३ में २२०० रुपये की राशि उड़ीसा सरकार को सीधे ही दी गयी ताकि पात्र संस्थाओं में बांट दी जाय ।

त्रिपुरा के प्राइमरी स्कूल अध्यापक

†३६८. **श्री दशरथ देव** : क्या शिक्षा मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) त्रिपुरा के अगम्य क्षेत्रों में काम कर रहे प्राइमरी स्कूल अध्यापकों की संख्या क्या है ;

---

†मूल अंग्रेज़ी में

(ख) उन ऐसे अध्यापकों की संख्या क्या है जिन्हें सरकारी क्वार्टर मिले हुए हैं ;

(ग) क्या इन प्राइमरी अध्यापकों को कोई विशेष पहाड़ी भत्ता दिया जाता है ; और

(घ) यदि नहीं, तो क्या इन अध्यापकों को कोई पहाड़ी भत्ता दिया जाने का विचार है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) और (घ). अपेक्षित जानकारी त्रिपुरा प्रशासन से एकत्रित की जा रही है और यथासमय सभा पटल पर रख दी जायेगी ।

त्रिपुरा में समाज शिक्षा

†**३६९. श्री दशरथ देव** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) त्रिपुरा की वे सामाजिक संस्थायें जिन्हें सामाजिक शिक्षा बोर्ड त्रिपुरा से वित्तीय सहायता प्राप्त हो रही है ;

(ख) १९६०-६१ और १९६१-६२ वर्षों में प्रत्येक संस्था को कितनी राशि प्राप्त हुई ; और

(ग) इस प्रकार की सहायता देने के लिए किस आधार को अपनाया गया है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) से (ग). त्रिपुरा प्रशासन से अपेक्षित जानकारी प्राप्त की जा रही है और यथा समय लोक सभा पटल पर रख दी जायेगी ।

घरचुकती कर

†**३७०. श्री दशरथ देव** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) त्रिपुरा में घरचुक्ती कर देने वाले आदिवासी लोगों की संख्या क्या है ;

(ख) क्या इन करों का सम्बन्ध बदलती सिंचाई से भी है ;

(ग) क्या इस बदलती सिंचाई को त्रिपुरा प्रशासन द्वारा प्रोत्साहन नहीं दिया जाता ; और

(घ) यदि हां, तो क्या घरचुक्ती कर को समाप्त करने पर विचार हो रहा है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) ३३,३२० ।

(ख) जी हां ।

(ग) जी हां ।

(घ) त्रिपुरा की चालू विधि के अनुसार भूम कृषि छोड़कर हल खेती करने वालों को घरचुक्ती कर से मुक्त रखा हुआ है । अतः इसे समाप्त करने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता ।

दक्षिण की हिन्दी संस्थाओं को सहायता

†**३७१. श्री ई० मधुसूदन राव** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) दक्षिण भारत में हिन्दी के विकास के लिए कार्य कर रही विभिन्न संस्थाओं को १९६२–६३ में दी गयी अरोक सहायता की राशि क्या है, प्रत्येक सहायता प्राप्त संस्था का नाम क्या है ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) इन संस्थाओं द्वारा इस स्वीकृत अनुदान राशि को प्रयोग करने के लिए बनाई गयी योजनायें विस्तार से क्या हैं?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) और (ख). अपेक्षित विवरण लोक सभा पटल पर रखा जाता है। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ४६]**

केरल में इंजीनियरिंग कालिज

†३७२. **श्री अ० व० राघवन** : क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत केरल राज्य में स्थापित किये गये इंजीनियरिंग कालिजों की संख्या क्या है; और

(ख) इन स्थानों के नाम यहां ये स्थापित किये जायेंगे?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य मंत्री (श्री हुमायून कबिर)** : (क) दो।

(ख) कोठामंगलम् और कालीकट ।

भारत का प्राणकीय सर्वेक्षण

†३७३. **श्री श्यामलाल सर्राफ** : क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारत का प्राणकीय सर्वेक्षण उचित ढंग से किया गया है;

(ख) किन किन जंगली जानवरों की नस्लें समाप्त हो रही हैं अथवा समाप्त होने के निकट है; और

(ग) यदि तत्सम्बन्धी प्रतिवेदन सरकार को प्रस्तुत हो चुके तो इन पर सरकार ने क्या कार्यवाही की है?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य उपमंत्री (डा० म० मो० दास)** : (क) जी हां। पशुओं, जानवरों और कीड़ों आदि की ८०,००० किस्मों का सर्वेक्षण किया गया। यह कार्य निरन्तर चलता है।

(ख) (एक) **जो शायद भारत में अब नहीं मिलते**—

(१) हिंसक चीता।

(२) दो सींगों वाला गैंडा

(३) गुलाबी सिरों वाली बत्तखें

(४) पहाड़ी बटेर

(दो) **जो नस्लें समाप्त हो रही हैं**—

(१) एशियाई शेर

(२) एक सींग वाला गैंडा

(३) ब्रो एंट्लर्ड-डियर (बारह सिंगा)

---

†मूल अंग्रेजी में

(४) सफेद पंखों वाली 'वुड डक' (बत्तख)

(५) भारतीय सारस

(ग) सरकार ने १९५२ में वन्य जन्तुओं के लिए भारतीय बोर्ड की स्थापना की ताकि समाप्त हो रहे वन्य जन्तुओं की रक्षा की जा सके । राज्य सरकारों के परामर्श से इन जीवों की रक्षा के लिए नियम बनाये गये हैं । इन को मारना, इन पर निशाना लगाने, इनकी खाल इत्यादि के निर्यात पर रोक लगाई गयी है ।

विद्यार्थियों के लिये शिक्षा पर्यटन

†३७४. **श्री सेझियान** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) विभिन्न राज्यों के लिए विद्यार्थियों के पर्यटनों के लिए १९६०–६१ और १९६१–६२ में स्वीकृति राशि क्या है ; और

(ख) इन अवधियों में राज्यों द्वारा प्रयोग में लाने वाली राशि क्या है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) और (ख). १९६०–६१ का अपेक्षित विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १ अनुबन्ध संख्या ५०]**

१९६१–६२—धन की कमी के कारण किसी भी राज्य के लिए १९६१–६२ में इस उद्देश्य के लिए कोई राशि स्वीकृत नहीं की गयी थी ।

पेट्रोल की खपत

†३७५. **श्रीमती सावित्री निगम** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) तीसरी योजना के अतर्गत यात्री कारों के लिए पेट्रोल की खपत में कितने प्रतिशत वृद्धि होने की सम्भावना है ; और

(ख) इसमें बस परिवहन का अंश क्या है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) बसों समेत यात्री कारों द्वारा मोटर गसोलिन की खपत में १९६१ से १९६६ के काल में ५.८ प्रतिशत की वृद्धि हो जायेगी ।

(ख) अलग से बस परिवहन में इस प्रकार के ईंधन में इस काल में २.४ प्रतिशत की कमी हो जायेगी ।

दिल्ली में आत्म हत्यायें

†३७६. **डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) दिल्ली के संघ राज्य-क्षेत्र में गत १० वर्षों में आत्म हत्या करने की कोशिश करने वाले लोगों की संख्या वर्षवार क्या है, अपनी कोशिश में सफल होने वालों की संख्या क्या है ;

(ख) क्या हाल ही में इन आत्म-हत्याओं की संख्या में वृद्धि देखी गयी है ;

(ग) क्या इन आत्म हत्याओं की वृद्धि के कारणों का कोई अध्ययन किया गया है ;

(घ) कारणों का पता लगाते हुये क्या कुछ ऐसी प्रवृत्तियों का पता चला है जिससे आत्म हत्या करने वालों की आयु, स्त्री-पुरुष-भेद तथा सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के बारे में भी आंकड़े उपलब्ध हो सकें ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ङ) निम्न लिखित श्रेणियों के, लोगों द्वारा आत्महत्या करने वालों की अलग अलग संख्याएं क्या हैं :—

(१) शिक्षित, (२) बेकार और (३) अत्यन्त गरीबी के कारण ?

†गृह कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) :

(क) वर्ष	आत्म-हत्या का प्रयत्न करने वालों की संख्या	आत्म-हत्या के मामले
१९५२	३५	आंकड़े उपलब्ध नहीं
१९५३	२३	
१९५४	३३	
१९५५	३६	६५
१९५६	३१	४९
१९५७	४०	७४
१९५८	३२	७२
१९५९	३६	१०५
१९६०	३२	९०
१९६१	४४	९५
१९६२	३४	१०३
(१६–१०–६२ तक)		

(ख) प्रत्येक वर्ष के बाद इन कथित आत्म-हत्या के मामलों की वृत्ति की सूचना मिलती रही है।

(ग) और (घ). इस दिशा में कोई नियमित अध्ययन नहीं किया गया। परन्तु बहुसंख्यक मामलों में पारिवारिक जीवन की गड़-बड़ी ही आत्म-हत्या का मुख्य कारण थी।

(ङ) (१) कितने शिक्षित व्यक्तियों ने आत्महत्या की, इस सम्बन्ध में पुलिस द्वारा कोई रिकार्ड नहीं रखे जाते।

वर्ष	(२) बेकार	(३) अन्यथा गरीबी
१९५५	३	५
१९५६	२	४
१९५७	२	१
१९५८	२	——
१९५९	३	४
१९६०	७	——
१९६१	३	१
१९६२	२	३
(१५–१०–६२ तक)		

†मूल अंग्रेजी में

वैज्ञानिकों के राष्ट्रीय रजिस्टर में दर्ज वैज्ञानिक

†३७७. **श्री यशपाल सिंह :** क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य**-मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) राष्ट्रीय वैज्ञानिक रजिस्टर में अब तक के रजिस्टर किये हुए वैज्ञानिकों तथा टकनीकी कर्मचारियों की संख्या, वर्षवार तथा श्रेणीवार—अर्थात् एम० एस० सी० पी० एच० डी० और डी० एस० सी०—कितनी हैं; और

(ख) जो वैज्ञानिक सेवाओं में लग गये हैं उनकी और जो अभी नहीं लग पाये उनकी संख्या अलग अलग क्या है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायन कबिर)** : (क) अब तक १,५०,००० वैज्ञानिक तथा तकनीकी कर्मचारी राष्ट्रीय रजिस्टर में अपना नाम लिखा चुके हैं। वर्षवार आंकड़े नहीं रखे जाते। डिग्रियों के अनुसार आंकड़े निम्नलिखित हैं :—

श्रेणी	कुल भर्ती	डाक्टरेट (पी० एच० डी०, डी० एस० सी०) कुल की प्रतिशतता
स्नातकोत्तर वैज्ञानिक . . .	४०,०००	१४.०
स्नातक कृषि वैज्ञानिक . . .	८,०००	..
इंजीनियरी और तकनीकी कर्मचारी (डिग्री होल्डर) .	५०,०००	०.५
इंजीनियरी और तकनीकी कर्मचारी (डिप्लोमा होल्डर)	४०,०००	..
चिकित्सा विशेषज्ञ	१२,०००	६.०
कुल .	१,५०,०००	

(ख) राष्ट्रीय रजिस्टर वास्तव में एक साधन है जिससे देश की वैज्ञानिक जन-शक्ति की जानकारी प्राप्त होती रहती है। रोजगार के बारे में तो विस्तार से कुछ पता नहीं है। रोजगार के रजिस्टर के अनुसार १,३२६ व्यक्ति १ अक्तूबर, १९६२ तक काम पर लग गये थे । उनमें से अधिकांश नये स्नातक थे ।

विदेशियों की मूर्तियों का हटाया जाना

३७८. **श्री प्रकाशवीर शास्त्री :**
श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती :
श्री हेम राज :
श्री सरजू पाण्डेय :
श्री भक्त दर्शन :

क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उन स्थानों में भारतीय नेताओं की मूर्तियां स्थापित करने का निश्चय किया गया है जहां किसी समय विदेशियों की मूर्तियां थीं किन्तु अब उन्हें वहां से हटा दिया गया है; और

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि हां, तो ये मूर्तियां कब तक और किन-किन स्थानों पर स्थापित की जायेंगी ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : (क) और (ख). जिन स्थानों से विदेशियों की मूर्तियां हटाई गई हैं, उन पर भारतीय नेताओं की मूर्तियां स्थापित करने का कोई प्रस्ताव इस समय सरकार के विचाराधीन नहीं है ।

दिल्ली में नया विश्वविद्यालय

३७९. { **श्री प्रकाशवीर शास्त्री** :
श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती :
श्री ई० मधुसूदन राव :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) दिल्ली में एक और विश्वविद्यालय खोलने के बारे में अब तक और क्या प्रगति हुई है;

(ख) क्या इस विश्वविद्यालय के लिये विदेशों से कुछ धन प्राप्त होने की संभावना है;

(ग) क्या इस विश्वविद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों और पाठ्यक्रमों में वर्तमान विश्वविद्यालय से भिन्नता रहेगी; और

(घ) यदि हां, तो क्या इस सम्बन्ध में कोई रूपरेखा तैयार की गई है तथा उसका ब्यौरा क्या है ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क), (ग) और (घ). विषय अभी तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विचाराधीन है ।

(ख) दिल्ली में एक और विश्वविद्यालय खोलने के लिए कोई विदेशी सहायता लेने का विचार नहीं है ।

नशाबन्दी

†३८०. **श्रीमती सावित्री निगम** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि दिल्ली प्रशासन ने १९६१–६२ के वर्ष में नशाबंदी के सम्बन्ध में क्या क्या पग उठाये ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)** : दिल्ली क्षेत्र में नशाबंदी के सम्बन्ध में १९६१–६२ में निम्नलिखित पग उठाये गये :—

(१) देशी शराब की दुकानों की संख्या का ७ से कम करके २ किया जाना, और शेष २ दुकानों का भी कहीं दूर स्थानों पर हटाया जाना ।

(२) २० डिग्री अन्डर प्रूफ़ से लेकर—५० डिग्री अन्डर प्रूफ़ तक की देशी शराब की बिक्री में कमी ।

(३) देशी और विलायती शराब के होटलों और ढाबों में पिये जाने पर रोक ।

(४) रेलवे स्टेशन के जलपानगृहों तथा सिनेमाओं में विदेशी शराब की बिक्री और खपत पर रोक ।

(५) क्लबों में विदेशी शराब की बिक्री पर लाइसेंस ताकि वहां खपत केवल सदस्यों तक ही सीमित रहे ।

---

†मूल अंग्रेजी में

(६) होटलों में रहने वालों को शराब केवल उनके कमरों में ही मिल सकने की व्यवस्था ।

(७) शराब रखने और उसकी परचून बिक्री की मात्रा में कमी । विस्की, ब्रांडी, रम और जिन की बिक्री सीमा १२ क्वार्ट की बोतल से कम करके २ क्वार्ट की बोतल कर दी गयी । बीयर और सिडर की बिक्री सीमा ८ क्वार्ट बोतल कर दी गयी ।

(८) वर्ष में १२ दिन ऐसे रखे गये जबकि शराब न बिकेगी न पी जायेगी ।

(९) २५ वर्ष की कम आयु के लोगों के पास देशी अथवा विदेशी कोई भी शराब बेची नहीं जायेगी ।

(१०) शराब के विज्ञापनों पर रोक ।

(११) शराब पीने के सिलसिले में अपराधों को बार-बार करने की दिशा में सज़ा बढ़ा दी है और शराब अवैध रूप में बनाने की कम से कम सजा निर्धारित कर दी है ।

(१२) बिक्री के घन्टे में कमी ।

(१३) शुल्क के दर भी बढ़ा दिये हैं ।

इसके अतिरिक्त दिल्ली प्रशासन ने १९६१–६२ में कुछ ऐसे नियम भी बनाये हैं जिनसे स्प्रिट से बनी चीजों को शराब के रूप में प्रयोग न किया जा सके । इसके लागू किये जाने पर पंजाब उच्च-न्यायालय की सरकट बैंच ने रोक लगा दी है । सम्बद्ध सार्थों ने इसके विरुद्ध याचिका प्रस्तुत की थी ।

विशेष आई० ए० एस० भर्ती

†३८१. **श्रीमती सावित्री निगम** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि आपातकालीन आई० ए० एस० की भर्ती में राज्यों की सेवाओं से लिये गये उम्मीदवारों की संख्या क्या है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)**: १८२ अधिकारियों को राज्यों की सेवाओं से लेकर आई० ए० एस० विशेष भर्ती योजना के अन्तर्गत नियुक्त किया गया है ।

कोयला उत्पादन

†३८२. { **श्री ब० कु० दास** :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
डा० प० मण्डल : }

क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत वर्ष और इस वर्ष के प्रथम छः मास में राष्ट्रीय कोयला विकास निगम ने अपने प्रबन्धाधीन खानों से कुल कितनी मात्रा में कोयला निकाला;

(ख) क्या पूरी क्षमता का प्रयोग नहीं किया जा रहा है; और

(ग) यदि हां, तो इसके कारण क्या हैं ?

†मूल अंग्रेजी में

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) से (ग). १९६१ में राष्ट्रीय कोयला विकास निगम ने ७६.५० लाख टन कोयला निकाला और चालू वर्ष के प्रथम छः मास में ३६.६ लाख टन कोयला निकाला।

राष्ट्रीय कोयला विकास निगम ने दूसरी योजना के अन्तिम वर्षों में १३७ लाख टन कोयले का उत्पादन कर दिखाया था जबकि लक्ष्य १३५ लाख टन था। अतः खानों से उत्पादन जान बूझ कर कम किया गया। मुख्यतः इसका कारण यह था कि वहां स्टाक के बहुत बड़े बड़े ढेर लग गये थे। १६.७ लाख टन की वृद्धि ३१ मार्च, १९६१ तक हो चुकी थी।

मिट्टी के तेल का मूल्य

†३८३ { **श्री सुरेन्द्रपाल सिंह :**
श्रीमती सावित्री निगम :

क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पश्चिम उत्तर प्रदेश में आई० ओ० सी० मिट्टी के तेल के लिए फुटकर व्यापारी अत्यधिक मूल्य ले रहे हैं; और

(ख) यदि हां, तो स्थिति को ठीक करने के लिए सरकार ने क्या कदम उठाये हैं ?

†**खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरनवीस)** : (क) जी नहीं। ऐसी कोई सूचना सरकार को नहीं मिली।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्कूलों और कालेजों में शिक्षा प्रणाली सम्बन्धी समिति

†३८४. **श्री सुरेन्द्रपाल सिंह**: क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कुछ समय पूर्व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने स्कूलों और कालेजों में प्रचलित शिक्षा प्रणाली में सुधार करने के लिए एक समिति नियुक्त की थी और उस ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत कर दिया है; और

(ख) यदि हां, तो समिति की मुख्य सिफ़ारिशें क्या हैं ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) और (ख). जी हां, समिति ने अभी अपनी सिफ़ारिशों को अन्तिम रूप नहीं दिया।

लंका में पेट्रो-रसायन उद्योग

†३८५. **श्री दी० चं० शर्मा** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या लंका सरकार ने लंका में पेट्रो-रसायन उद्योगों के लिये एक परियोजना प्रतिवेदन तैयार करने के लिये भारत से सहायता की प्रार्थना की है;

(ख) क्या प्रार्थना पर विचार किया गया है; और

(ग) यदि हां, तो भारत सरकार की प्रति क्या है ?

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : (क) जी हां।

(ख) और (ग). मामला विचाराधीन है।

---

†मूल अंग्रेजी में

पेंशन पाने वाले

३८६. { **श्री भक्त दर्शन :**
श्री भागवत झा आजाद :
श्री श्रीनारायण दास :
श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा : }

क्या **गृह-कार्य** मंत्री ८ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या २३० के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों की पेंशन वृद्धि अथवा अन्य सुविधाएं देने का जो प्रश्न विचाराधीन था उसके बारे में क्या निर्णय किया गया है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : मामला अभी विचाराधीन है।

अध्यापक कल्याण समिति

†३८७. { **श्रीमती रेणुका राय :**
श्री सुरेन्द्रपाल सिंह :
श्री प्रकाशवीर शास्त्री : }

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) ५ सितम्बर को अध्यापक दिवस पर शुरु किये गये अध्यापक कल्याण निधि के के लिए रुपये के लिए अपील के सम्बन्ध में लोगों की क्या प्रतिक्रिया रही है ; और

(ख) दिल्ली और प्रत्येक राज्य में कितना रुपया जमा हुआ है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) लोगों की प्रतिक्रिया काफी संतोषजनक है।

(ख) जानकारी इकट्ठी की जा रही है और यथा समय पटल पर रख दी जायेगी।

जम्मू और काश्मीर में कोयला

३८८. { **श्री भागवत झा आजाद :**
श्री भक्त दर्शन :
श्री प्र० के० देव : }

क्या **खान और ईंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भूगर्भ शास्त्रियों को जम्मू और काश्मीर के जंगलगली क्षेत्र में कोयला मिलने की संभावनाओं का अनुमान है ; और

(ख) यदि हां, तो इसका विवरण क्या है ?

खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरनवीस) : (क) जी हां।

(ख) भारतीय भूगर्भीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा जंगलगली क्षेत्र में किये गये प्रारम्भिक सर्वेक्षण ने कोयले की दो या तीन स्तरों, जिनमें से प्रत्येक की मोटाई अधिकतर ०.६ मीटर से लेकर १.५ मीटर तक हैं, के साथ कोयले का एक ऊपरी 'क्षितिज' को सूचित किया। फिर

†मूल अंग्रेजी में

भी भारतीय भूगर्भीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा मुत्तल–लेन क्षेत्र में उत्तरोत्तर किये गये व्यधन कार्य ने कई स्तरों के साथ निम्न श्रेणी के कोयले की क्षितिज की विद्यमानता को सिद्ध किया है। इन स्तरों में से एक की मोटाई ६.४ मीटर से अधिक है ।

नकली चावल

†३८९. {**श्री मुरारका :**
{**श्री राजेश्वर पटेल :**

क्या **वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि नकली चावल बनाने में अब तक क्या प्रगति हुई है ?

†**वैज्ञानिक अनुसन्धान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायुंन कबिर) :** टेपिचका मेकारोनी नामक वस्तु (जिसे पहले नकली चावल कहा जाता था) केन्द्रीय खाद्य टेकनोलाजिकल अनुसंधान संस्था मैसूर द्वारा अग्रिम संयन्त्र पैमाने पर तैयार किया गया है। १८ महीनों तक उपभोक्ताओं द्वारा प्रयोग से इस की उपयोगिता सिद्ध हो चुकी है ।

सबरूम पर आदिम जाति विश्रामगृह

†३९०. **श्री दशरथ देव :** क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सबरूम पर आदिम जाति विश्रामगृह के पास पानी का कोई प्रबन्ध नहीं है;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार उसके पास किसी नल-कूप या तालाब का प्रबन्ध करेगी; और

(ग) यदि हां, तो यह कब तक किया जायेगा?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) :** (क) नहीं। उसके पास एक रिंग-वेल है।

(ख) और (ग). उत्पन्न नहीं होता ।

पंजाब में पूर्ण मद्य निषेध

†३९१. **श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :** क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पंजाब सरकार ने राज्य में पूर्ण मद्यनिषेध लागू करने के लिए दिसम्बर में जनमतगणना करने का निर्णय किया है ; और

(ख) ऐसी घोषणा करने से पहले राज्य सरकार ने केन्द्रीय सरकार और योजना आयोग से सलाह की थी ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार) :** (क) जनमतगणना करने के बारे में पंजाब सरकार के प्रस्ताव का उद्देश्य केवल यह है कि इस सीमित प्रश्न पर राय जानी जाये क पूर्ण मद्यनिषेध को राज्य में तुरन्त लागू किया जाये या एक क्रमवार कार्यक्रम के अनुसार लागू किया जाये, ताकि यह तीसरी योजना के अन्त तक सारे राज्य में लागू हो सके ।

(ख) जी नहीं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

सरकारी कर्मचारियों के कार्य की दशा

३९२. { **श्री भक्त दर्शन :**
श्री भागवत झा आजाद :

क्या **गृह-कार्य** मंत्री २१ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ४९२ के उत्तर के सम्बन्ध में निम्न बातों की जानकारी देने वाला एक विवरण सभा-पटल पर रखने की कृपा करेंगे:

(क) केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों की कार्य की दशा का अध्ययन करने के बारे में जो अन्तर्विभागीय समिति नियुक्त की गई थी उसके द्वारा की गई मुख्य सिफारिशें;

(ख) समिति की सिफारिशों पर सरकार द्वारा किये गये निर्णय; और

(ग) उक्त सिफारिशों को कार्यान्वित करने की दिशा में की गई प्रगति?

गृह-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्रीमती चन्द्रशेखर) : रिपोर्ट की एक प्रतिलिपि तथा रिपोर्ट के १०६ से ११४ पृष्ठों पर दी गई सिफारिशों के बारे में स्थिति का एक विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है । **[पुस्तकालय में रखा गया, देखिए संख्या एल० टी० ५२११।६२]**

दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र क लिये शिक्षा संहिता

३९३. { **श्री भक्त दर्शन :**
श्री भागवत झा आजाद :
श्री बिशनचन्द्र सेठ :

क्या **शिक्षा** मंत्री २९ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ६६९ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या दिल्ली के संघीय क्षेत्र के लिये इस बीच नई शिक्षा संहिता को अन्तिम रूप दे दिया गया है ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली): शिक्षा संहिता को जल्दी ही अन्तिम रूप दे देने की आशा है ।

पटियाला में खेलों की राष्ट्रीय संस्था

†**३९४. श्री कर्णीसिंहजी :** क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या पटियाला में खेलों की राष्ट्रीय संस्था में एक राइफल, पिस्तोल और क्ले पिजन ट्रेप और शीट शाखा शुरु करने का विचार है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) :** माननीय सदस्य ने ३० अगस्त, १९६१ को संस्था के संचालक को ऐसा सुझाव दिया था । संचालक ने माननीय सदस्य से जानकारी मांगी है । जानकारी प्राप्त हो जाने पर, इस पर आगे कार्यवाही की जा सकेगी ।

शिक्षा अनुसंधान की राष्ट्रीय परिषद्

†**३९५. श्री यशपाल सिंह :** क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सितम्बर, १९६१ में स्थापित की गई शिक्षा अनुसंधान सम्बन्धी राष्ट्रीय परिषद् में कितना काम हुआ है और किस प्रकार का;

†मूल अंग्रेजी में

(ख) राष्ट्रीय शिक्षा संस्था की इमारत पर कितने खर्च का अनुमान है; और

(ग) यह कब तक तैयार हो जायेगा?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) से (ग). एक विवरण पटल पर रखा जाता है। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ५१]**

भारतीय महिलाओं का राष्ट्रीय संघ

†**३९६. श्रीमती मैमूना सुल्तान** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या इस वर्ष अक्तूबर में हुए भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय संघ के चौथे सम्मेलन में एक मांग पत्र पेश किया गया था;

(ख) यदि हां, तो उसमें मुख्य मांगें क्या थी; और

(ग) उस सम्बन्ध में सरकार का निर्णय क्या है?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) सरकार को संघ से कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ।

(ख) और (ग). उत्पन्न नहीं होते।

कालेज की फीस

†३९७. { **श्री श्यामलाल सर्राफ** :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री बसुमतारी :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को विदित है कि संघ राज्य क्षेत्रों में सरकार या निजी न्यासों या संस्थाओं द्वारा चलाये जाने वाले कालेजों के विद्यार्थियों से ली जाने वाली फीसों में कोई एक रूपता नहीं होती; और

(ख) क्या सरकार का ऐसे उपाय करने का विचार है जिनसे इस विषय में प्रक्रिया में एक रूपता लाई जा सके?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) जी हां।

(ख) जी नहीं।

पालम का हवाई अड्डा

†३९८. { **श्री श्यामलाल सर्राफ** :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री बसुमतारी :

क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को विदित है कि पालम पर पुलिस स्टेशन द्वारा विदेशी विमान

†मूल अंग्रेजी में

सेवाओं द्वारा आने वाले यात्रियों के सम्बन्ध में पूछ-ताछ करने के लिए प्रबन्ध पर्याप्त नहीं हैं; और

(ख) स्थिति को सुधारने के लिए सरकार क्या कार्यवाही कर रही है?

†**गृह कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) और (ख). पालम और सफदरजंग के हवाई अड्डों पर पिछले कुछ वर्षों में पुलिस की संख्या बढ़ा दी गई हैं। तथापि यातायात में बढ़ौत्री के कारण इस ओर बढ़ाने के सवाल पर विचार किया जा रहा है।

चमोली मुख्यालय में रिहायशी और कार्यालयों के लिये स्थान

३९९. श्री भक्त दर्शन : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उत्तर प्रदेश में सीमावर्ती चमोली जिले के हेडक्वार्टर चमोली में कर्मचारियों के निवास और सरकारी कार्यालयों के निर्माण की योजना कार्यान्वित करने के लिये उत्तर प्रदेश सरकार ने भारत सरकार से कोई सहायता मांगी है; और

(ख) यदि हां, तो केन्द्रीय सरकार उक्त योजना के लिये सहायता स्वरूप कितनी रकम देने के लिये तैयार हो गई है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार): (क) और (ख). उत्तर प्रदेश की सरकार ने इस बारे में कोई विशेष प्रस्ताव नहीं रखा है। हां, भारत सरकार, उत्तर खंड डिवीज़न में तैनात अपने विशिष्ट अधिकारियों और उनके निजी कर्मचारियों की रिहायश और कार्यालयों के लिये भवन बनाने या हासिल करने पर लगने वाली लागत देने को सिद्धांततः सहमत हो गई है।

अंकलेश्वर तेल

†४००. { **श्री प्र० चं० बरुआ** :
श्री ज्योति स्वरूप : }

क्या **खान और इंधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) अगस्त, १९६१ से अंकलेश्वर के तेल के क्षेत्रों में कितना तेल पैदा किया गया है;

(ख) इस तेल को कहां साफ़ किया गया; और

(ग) इस कच्चे तेल के उत्पादन से विदेशी मुद्रा की कितनी बचत हुई है ?

†**खान और इंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** (क) अक्तूबर, १९६२ के अन्त तक २५८,३७६ मेट्रिक टन।

(ख) बम्बई में बर्माशेल और एसो तेल शोधक कारखानों पर।

(ग) लगभग १८३ लाख रुपये।

दूतावास की कारों द्वारा यातायात की विधियों का उल्लंघन

†**४०१. श्री विद्याचरण शुक्ल** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या दिल्ली में बहुत सी शिकायतें प्राप्त हुई हैं कि सी० डी० नम्बर प्लेटों वाली कारों द्वारा यातायात विधियों का उल्लंघन किया जाता है; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि हां, तो इसके रोकने के लिए क्या कार्यवाही की गई है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) १९६१ में ऐसी कारों द्वारा उल्लंघन के १०९ मामले थे, ३१-१०-६२ तक १०४ मामले थे। ये मामले अनुचित पार्किंग, बहुत तेज़ गाड़ी चलाने, निषिद्ध सड़कों पर चलाने, यातायात सिगनल का उल्लंघन, रोशनी के बिना चलाने या अत्यधिक रोशनी से चलाने के बारे में होते हैं। ये मामले दिल्ली प्रशासन द्वारा उपयुक्त कार्यवाही के लिए वैदेशिक कार्य मंत्रालय को भेजे गये थे।

(ख) इन मामलों में की गई कार्यवाही के बारे में जानकारी एकट्ठी की जा रही है।

केन्द्रीय शिशु कल्याण बोर्ड

†४०२. **श्री बिशनचन्द्र सेठ** : क्या **शिक्षा** मंत्री २१ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ४७९ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या शिशु कल्याण के लिए एक केन्द्रीय बोर्ड स्थापित करने के प्रस्ताव पर विचार कर लिया गया है;

(ख) यदि हां, तो इस के उद्देश्य क्या हैं; और

(ग) यदि हां, तो विलम्ब के कारण ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)**: (क) से (ग) प्रस्ताव पर विचार कर लिया गया है और अब यह निर्णय किया गया है कि एक पृथक् बोर्ड स्थापित किया जाये।

अनुसूचित जातियों के लिए आवास योजनाएं

†४०३. **श्री दलजीत सिंह** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) अनुसूचित जातियों के लिए आवास योजना के लिए अब तक १९६१–६२ और १९६२–६३ में पंजाब राज्य को कितनी राशि निर्धारित की है; और

(ख) उसी अवधि में पंजाब सरकार ने कितना धन मांगा है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : (क) और (ख) जानकारी देने वाला एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है।

विवरण

वर्ष	मांगी गई राशि			निर्धारित की गई राशि		
	राज्य क्षेत्र	केन्द्रीय क्षेत्र	कुल	राज्य क्षेत्र	केन्द्रीय क्षेत्र	कुल
१९६१–६२ .	१.८३	५.००	६.८३	१.८३	२.३२	४.१५
१९६२–६३ .	१.७०२	१.९६	३.६६२	१.७०२	१.९६	३.६६२
कुल	३.५३२	६.९६	१०.४५२	३.५३२	४.२८	७.८१२

†मूल अंग्रेजी में

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदान

†४०४. **श्री दलजीत सिंह** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि देश में कितने विश्वविद्यालयों ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा १९६१–६२ में दिये गये अनुदानों का पूर्णतया प्रयोग नहीं किया है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : एक विवरण संलग्न है।

विवरण

निम्नलिखित तीन शीर्षकों के अन्तर्गत १९६१–६२ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालयों को अनुदान दिये हैं :—

(१) पहले मंजूर की गई योजनाओं के पूरे हिसाब के लिए दी गईं अनुदानें
(२) उन कामों को जारी रखने के लिए जो एक वर्ष से अधिक समय में पूरे होंगे दिये गये अनुदान
(३) उसी वर्ष में पूरी की जाने वाली योजनाओं के लिए दिये गये अनुदान।

आयोग ऊपर लिखी गई (२) के लिए अनुदानों का प्रयोग का निरीक्षण और हिसाब उस समय करेगा जब योजना पूरी हो जाये। जहां तक ऊपर लिखी गई (१) से (३) तक के लिए अनुदानों के प्रयोग का सम्बन्ध है, आयोग को कार्य निष्पादन के प्रमाण पत्र और सम्बन्धित वर्ष के लिए विश्वविद्यालय के लेखा परीक्षा किये गये लेखों की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। साधारणतया जिस वित्तीय वर्ष में अनुदानें दी जाती हैं उस के समाप्त होने के लगभग दो वर्ष बाद लेखा परीक्षा लेखे आते हैं अर्थात १९६१–६२ के लेखा परीक्षित लेखे १९६३–६४ में मिलने की आशा की जा सकती है। अतः इस समय आयोग यह नहीं बता सकना कि १९६१–६२ में दिये गये कितने अनुदानों को प्रयोग में लाया गया है।

त्रिभाषीय सिद्धान्त

†४०५. **श्री अ० ना० विद्यालंकार** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उन राज्य सरकारों के नाम क्या हैं जिन्होंने त्रिभाषीय सिद्धान्त को मान लिया है और उसे जारी करने के लिए सहमत हो गये हैं;

(ख) उन राज्य सरकारों के नाम क्या हैं जिन्होंने इसे चालू करने से इन्कार कर दिया और उनके भी जिन्होंने कोई निर्णय नहीं किया है; और

(ग) क्या विभिन्न राज्यों ने किस तरीके से इस सिद्धान्त का कार्यान्वियन आरम्भ कर दिया है यह जानकारी देने वाला विवरण सभा पटल पर रखा जायेगा ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) से (ग). सब राज्यों ने स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार कुछ परिवर्तन करके त्रिभाषीय सूत्र को मान लिया है। आधुनिकतम जानकारी देने वाला विवरण संलग्न है। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ५२]**

अंग्रेजी का पढ़ाया जाना

†४०६. **श्री अ० ना० विद्यालंकार** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कई राज्यों ने तृतीय प्रारम्भिक स्तर से अंग्रेजी का पढ़ाना आरम्भ करने का निर्णय किया है;

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि हां, तो क्या, उन मंत्रालय ने इस सम्बन्ध में इन राज्यों को कोई सलाह दी है;

(ग) क्या यह सच हे कि बुनियादी शिक्षा की प्रणाली के विशेषज्ञों ने बुनियादी स्कूलों में इतनी आरम्भिक अवस्था में मातृभाषा से भिन्न कोई दूसरी भाषा आरम्भ करने के विरुद्ध कड़ा एतराज़ किया है; और

(घ) यदि हां, सब प्रारम्भिक स्कूलों में बुनियादी शिक्षा प्रणाली आरम्भ करने में बाधा न होने के लिए किस समायोजन का सुझाव दिया है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)** : (क) से (घ). सभा पटल पर एक विवरण रखा जाता है ।

विवरण

(क) हां, श्रीमान् ।

(ख) इस विषय पर अगस्त, १९६१ में हुए मुख्य मंत्रियों और केन्द्रीय सरकार के मंत्रयों के सम्मेलन में चर्चा की गई थी जिस में यह सफारिश की गई थी कि अंग्रेज़ी और हिन्दी का अध्ययन प्रारम्भिक कक्षाओं में आरम्भ होना चाहिए । यह सिफारिश जानकारी और आवश्यक कार्यवाही के लिए राज्य सरकारों को भेजी जा चुकी है । अब प्रत्येक राज्य सरकार को निश्चय करना है कि स्थानीय परिस्थितियों और आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए दूसरी भाषा का अध्यापन कब आरम्भ करना चाहिए । अगस्त, १९६१ में हुए मंत्रियों के सम्मेलन और अक्तूबर, १९६१ में हुई राष्ट्रीय एकता परिषद् की बैठक में की गई यह सिफारिश कि यदि अंग्रज़ी का ठीक प्रकार से अध्ययन करना है तो वह प्रारम्भिक कक्षाओं में आरम्भ होना चाहिए, आवश्यक कार्यवाही के लिए राज्य सरकारों को भज दी गई थी ।

(ग) कुछ लोगों ने यह विचार व्यक्त किया है ।

(घ) यह राज्य सरकारों को निश्चय करना है कि इस सम्बन्ध में उन की नीति क्या होगी ।

हरी पत्तियों से दूध

†४०७. **श्री इन्द्रजीत गुप्त** : क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान ब्रिटिश अनुसन्धानकर्ताओं की इस तथाकथित खोज की ओर दिलाया गया है जिस के अन्तर्गत हरी पत्तियों से दूध निकाला जा सकता है ;

(ख) क्या यह सच है कि मैसूर की अनुसन्धानशाला ब्रिटिश अनुसन्धानकर्ताओं के साथ यह काम कर रही है ; और

(ग) क्या सरकार ने भारत जैसे देश में इस प्रकार के दूध के संभावित मूल्य के बारे में कोई छानबीन की है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य-मंत्री (श्री हुमायून कबिर)** : (क) अखबारों में इस आशय के कुछ समाचार मिले हैं ।

(ख) जी नहीं, लेकिन सेन्ट्रल फूड टेक्नालाजिकल रिसर्च इंस्टिट्यूट, मैसूर पत्ते की प्रोटीन पर कुछ काम कर रहा है ।

(ग) हरी पत्तियों से तैयार किया गया दूध जैसे तरल पदार्थ में गहरी गन्ध होती है और उसका रंग हरा होता है और उसे दूध के स्थानापन्न स्वीकार नहीं किया जा सकता ।

---

†मूल अंग्रेजी में

एण्ड्र्‌ूजगंज में विस्फोट

४०८. { **श्री मोहन स्वरूप :**
श्री राम रतन गुप्त :
महाराजकुमार विजय आनन्द : }

क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को ज्ञात है कि ५ अक्तूबर, १९६२ को एण्ड्र्‌ूजगंज, नई दिल्ली में एक झोंपड़ी में एक जोर का धमाका हुआ था ;

(ख) क्या यह भी सच है कि उक्त घटनास्थल से सैनिक किस्म के १५ बम बरामद किये गये ; और

(ग) यदि हां, तो इसका क्या ब्यौरा है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : (क) हां ।

(ख) और (ग). १४ सैनिक किस्म के अधिस्फोटक (डीटोनेटर) उस झोंपड़ी से बरामद हुये जिसमें विस्फोट हुआ था ।

निर्धन विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्तियां

४०९. **श्री तन सिंह** : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने धनहीन व योग्य छात्रों को छात्रवृत्तियां देने के लिए कोई नौ करोड़ रुपये की योजना स्वीकार की है ; और

(ख) इस योजना को किस प्रकार कार्यान्वित किया जायेगा ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) जी नहीं ।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

उत्तर प्रदेश में खनिज पदार्थ

४१०. **श्री सरजू पाण्डेय** : क्या **खान और ईंधन** मंत्री १८ जन, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ३२९७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) चमोली और मिर्जापुर में जिन खनिज पदार्थों का पता लगा था क्या उनकी खुदाई का काम शुरू हो गया है ; और

(ख) यदि हां, तो अब तक कितने और कौन-कौन से खनिज पदार्थ निकाले जा चुके हैं ?

खान और ईंधन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री हजरनवीस) : (क) इन क्षेत्रों में भारतीय भूगर्भीय सर्वेक्षण विभाग । भारतीय खान ब्यूरो द्वारा अभी अन्वेषण कार्य हो रहा है। इसलिए, फिलहाल, चमोली और मिर्जापुर ज़िलों में चूनापत्थर के अतिरिक्त किसी खनिज पदार्थ की व्यापारिक पैमाने पर खुदाई नहीं हो रही है ।

(ख) मिर्जापुर ज़िले से चूना पत्थर का वार्षिक उत्पादन लगभग ३,००,००० टन है ।

व्यायाम प्रशिक्षण

४११. श्री सरजू पाण्डेय : क्या **शिक्षा** मंत्री १३ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ६३६ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) शारीरिक शिक्षा तथा मनोरंजन केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड ने उच्च अध्ययन या देशी शारीरिक क्रियाकलापों तथा शारीरिक शिक्षा में अनुसन्धान के लिए जिस योजना की सिफारिश की थी उसका विवरण क्या है ; और

(ख) क्या इसके लिए कुछ छात्रवृत्तियां दी गई हैं ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) केन्द्रीय शारीरिक शिक्षा और मनोरंजन सलाहकार बोर्ड ने ६ और ७ जुलाई, १९६२ को हुई बैठक में अपनी अनुसंधान उप-समिति को यह निर्देश दिया था कि वह देशीय शारीरिक क्रियाकलापों के लिए छात्रवृत्तियां प्रदान करने और शारीरिक शिक्षण की योजना के बारे में ब्यौरे तैयार करे । उप-समिति ने १९ अक्तूबर, १९६२ की अपनी बैठक में कुछ प्रारंभिक कार्य किया है और कुछ अतिरिक्त आंकड़े भी मांगे हैं, जिनके आधार पर समिति को आशा है कि वह दिसम्बर १९६२ में होने वाली अपनी अगली बैठक में योजना तैयार कर लेगी और उसके पश्चात वह योजना अनुमोदन के लिए बोर्ड को भेजी जाएगी ।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

सरकारी इंजीनियरी कालेज, चंडीगढ़

†४१२. { **श्री रामेश्वर टांटिया** :
श्री भागवत झा आजाद :

क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकारी इंजीनियरी कालेज, चंडीगढ़ में देश में अपने किस्म का पहला पाठ्यक्रम, उत्पादन इंजीनियरी पाठ्यक्रम चालू किया गया है;

(ख) यदि हां तो यह पाठ्यक्रम विदेशी सहयोग से चालू किया गया है या वह पूरी तौर से भारतीय प्रयास है ; और

(ग) ऐसा पाठ्यक्रम देश में अन्यत्र कहां तक चालू किया जायेगा ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून कबिर)** : (क) विभिन्न औद्योगिक उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण देने के लिए चंडीगढ़ इंजीनियरी कालेज में मैकैनिकल इंजीनिअरिंग का एक विशेष डिप्लोमा कोर्स चालू किया गया है ।

(ख) इसमें कोई विदेशी सहयोग नहीं है ।

(ग) ऐसा पाठ्यक्रम चालू करने के लिए किसी भी राज्य सरकार ने अभी तक कोई योजना नहीं बनायी है ।

हिमाचल प्रदेश भूमि सम्पदा अधिनियम का रद्द किया जाना

†**४१३. श्री हेम राज** : क्या **गृह-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या हिमाचल प्रदेश में बड़ी भूमि सम्पदा अधिनियम संशोधित करने की मांग है ; और

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार को कोई अभ्यावेदन प्राप्त हुए हैं और क्या उसमें कोई संशोधन करने का कोई विचार है और किस प्रकार ?

†गृह-कार्य मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) : (क) और (ख). जी हां। इस बात को देखते हुए कि हिमाचल-प्रदेश में विधान सभा स्थापित की जायेगी, यह विचार है कि विधान सभा इस प्रश्न पर अधिक उपयुक्त ढंग से विचार करे।

रूस में भारतीय वनस्पतिशास्त्रियों का दल

†४१४. **श्री इन्द्र जीत लाल मल्होत्रा** : क्या वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारतीय वनस्पतिशास्त्रियों का एक दल अक्तूबर, १९६२ में रूस गया था ; और

(ख) यदि हां तो इस दल की यात्रा का विशिष्ट उद्देश्य क्या था ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (डा० म० मो० दास)** : (क) जी हां। वह दल अभी भी रूस में है।

(ख) पौधों के नमूने, बीज, पौधे इकट्ठे करना और सोवियत संघ के विभिन्न प्रदेशों की खोजबीन। यह यात्रा भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक और वैज्ञानिक आदान-प्रदान कार्य-क्रम के एक अंग के तौर पर १९६१ में रूसी वनस्पतिशास्त्रियों की यात्रा के प्रत्युत्तर में है।

संयुक्त राष्ट्र संघीय शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संगठन के साथ सहयोग के लिए भारतीय राष्ट्रीय आयोग

†४१५. { **श्री प० मंडल** :
श्री म० ला० द्विवेदी :
श्री स० चं० सामन्त :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि संयुक्त राष्ट्र संघीय शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संगठन के साथ सहयोग के लिए भारतीय राष्ट्रीय आयोग के पांचवें सम्मेलन में किन-किन बातों पर चर्चा की गयी है ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : २६–२७ सितम्बर, १९६२ को भारतीय राष्ट्रीय आयोग ने अपने पांचवें सम्मेलन में १९६०–६२ के लिए आयोग की कार्यवाहियों के संबंध में सेक्रेटरी-जनरल की रिपोर्ट, आयोग के सहयोगी सदस्यों के तौर पर ग़ैर-सरकारी संगठनों की भरती के लिए नियमों, सहयोगी सदस्यों के तौर पर भरती के लिए गैर-सरकारी संगठनों से आवेदनपत्रों, यूनेस्को पूर्व-पश्चिम बड़ी परियोजना के लिए राष्ट्रीय सलाहकार समिति के पुनर्गठन, १९६३–६४ के लिए यूनेस्को के प्रस्तावित कार्यक्रम और बजट तथा आयोग के भावी कार्यक्रम पर विचार किया।

पंजाब में आदिम जातियों के लिए मकान बनाने की योजना

†४१६. **श्री दलजीत सिंह** : क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि अब तक १९६२–६३ में पंजाब राज्य में आदिमाजतियों के लिए मकान बनाने की योजना के लिए कुल कितनी रकम नियत की गयी है ?

---

†मूल अंग्रेजी में।

†गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार): तीसरी पंचवर्षीय योजना के पिछड़े वर्ग क्षेत्र में, पंजाब में आदिमजातियों के लिए मकान बनाने की कोई योजना नहीं है।

प्राइमरी स्कूलों में विद्यार्थी

४१७. श्री किशन पटनायक : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) प्राथमिक स्कूलों में भर्ती होने वाले बच्चों की संख्या में १९६१–६२ में कितनी वृद्धि हुई है ;

(ख) उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में कितनी वृद्धि हुई है ; और

(ग) यदि पश्चिम बंगाल और कलकत्ता में बहुत कम प्रगति हुई है तो इसके क्या कारण हैं ?

शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली) : (क) से (ग). राज्य सरकारों और संघीय क्षेत्रों से सूचना एकत्र की जा रही है और यथा समय सभा पटल पर रख दी जाएगी।

राजाओं द्वारा राष्ट्रीय रक्षा कोष में दान

४१८. { श्री रघुनाथ सिंह :
श्री प्र० चं० बरुआ :

क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि भारत के कितने राजाओं ने अपने प्रिवी पर्स में भारतीय सुरक्षा कोष निमित्त कटौती की है तथा अपनी संचित धन राशि में से कितना सोना दिया है ?

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार) : सब नरेशों से भारतीय सुरक्षा कोष में नकदी और सोना देने तथा प्रत्येक त्रैमासिक किस्त पर अमने प्रिवी पर्स का १० प्रतिशत (५०,०००– रुपये वार्षिक या इससे कम प्रिवी पर्स पाने वाले नरेशों के सम्बन्ध में ५ प्रतिशत) का निश्चित अंशदान देने के लिए प्रार्थना की गई है। राजकुमारों से भी रक्षा बोर्डों में उदारतापूर्ण धन लगाने की प्रार्थना की गई है। उत्तर अभी प्राप्त हो रहे हैं। अब तक ५८ नरेशो ने राष्ट्रीय रक्षा कोष में नकद धन देने की स्वीकृति दी है। दो नरेशों ने क्रमशः १६७० ग्राम तथा ४५ तोले सोना दिया है।

दिल्ली के लिए मेट्रोपोलिटन काउंसिल

†४१९. श्री प्र० चं० बरुआ : क्या गृह-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या दिल्ली नगर निगम ने यह सुझाव दिया है कि दिल्ली में कारपोरेशन की जगह पर मेट्रोपालिटन काउंसिल स्थापित की जाये; और

(ख) यदि हां, तो इस प्रस्ताव पर सरकार का क्या निश्चय है ?

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दातार)**: (क) दिल्ली नगर निगम से अभी तक एसा कोई सुझाव प्राप्त नहीं हुआ है।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

†मूल अंग्रेजी में।

पेट्रोलियम टेक्नोलाजी

४२०. { **श्री बड़े :**
      श्री कछवाय :

क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पेट्रोलियम टेक्नोलाजी कोर्स भारत में कहां-कहां और किन-किन संस्थाओं में पढ़ाये जाते हैं;

(ख) क्या इंडियन स्कूल आफ माइंस, धनबाद में भी उक्त शिक्षण दिया जाता है ;

(ग) यदि हां, तो क्या सभी सरकारी उपक्रमों में उक्त संस्था के विद्यार्थियों को डिग्री देने के बाद नौकरी पर रखा नहीं जाता; और

(घ) धनबाद के इंडियन स्कूल आफ माइंस में से सन् १९६१ तथा १९६२ में कितने विद्यार्थी डिग्री लेकर उत्तीर्ण हुए?

वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून कबिर) : (क) और (ख). दो संस्थाएं इस विषय की शिक्षा दे रही हैं। इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलौजी खड़गपुर में पेट्रोलियम रिफाइनरी इंजीनियरी में एक पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स की व्यवस्था है और इंडियन स्कूल आफ माइंस धनबाद में पेट्रोलियम टेक्नोलौजी में प्रथम डिग्री कोर्स की शिक्षा दी जाती है।

(ग) छात्रों को तेल और प्राकृतिक गैस आयोग और दूसरे अन्य सरकारी तथा निजी संगठनों में काम दिया जाता है।

(घ) १९६१—   २६
    १९६२—   १९

दिल्ली के स्कूलों के छात्रों के लिए वर्दियां

†४२२. { **श्री बूटा सिंह :**
       श्री गुजराल :

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि दिल्ली में सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों के छात्रों को उन-उन स्कूलों के प्रबन्धक स्कूल की वर्दी खरीदने के लिए मजबूर करते हैं ;

(ख) क्या सरकार को गरीब अभिभावकों से ऐसी शिकायतें मिली हैं जिनमें उन्होंने अपनी वित्तीय असमर्थता व्यक्त की है और बताया है कि स्कूल अधिकारियों के ऐसे आदेश पालन करने में वे असमर्थ हैं; और

(ग) यदि हाँ, तो इस मामले में क्या कार्यवाही की गयी है ?

†**शिक्षा मंत्री (डा० का० ला० श्रीमाली)**: (क) जिन स्कूलों में वर्दियां निर्धारित की गयी हैं; वहां छात्रों को वर्दियों में आना जरूरी होता है।

(ख) जी नहीं।

---

†मूल अंग्रेजी में।

(ग) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

तकनीकी छात्रों को छात्रवृत्तियां

†४२३. { **श्री बूटा सिंह :**
श्री गुलशन :

क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि उन छात्रों को जिन्हें योग्यता तथा योग्यता-व-साधन छात्र-वृत्तियाँ प्राप्त हुई हैं उन्हें संपूर्ण भारत में इंजीनियरी कालेजों में होस्टल बकाया के तौर पर ७५ रु० प्रति मास से अधिक खर्च करना पड़ता है;

(ख) क्या सरकार छात्रवृत्ति की रकम बढ़ाने की किसी योजना पर विचार कर रही है ताकि छात्रगण किताबें और लिखाई पढ़ाई के सामान ही की खरीद पर अपना खर्च पूरा कर सकें; और

(ग) यदि हाँ, तो सरकार का निश्चय क्या है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून कबिर) :** (क) इंजीनिअरी कालेजों में दी गयी योग्यता-व-साधन छात्रवृत्तियों का मूल्य होस्टल फीस आदि जैसी अनेक बातों पर अखिल भारतीय आधार पर विचार करने के बाद ७५ रुपये निर्धारित किया गया है। इसके अलावा, छात्रवृत्ति लेने वालों को ट्यूशन फीस माफ होती है। इसलिए यह रकम पर्याप्त समझी जाती है।

(ख) और (ग). फिलहाल ऐसी छात्रवृत्तियों का मूल्य बढ़ाने की कोई योजना नहीं है।

तकनीकी छात्रों को छात्रवृत्तियां

†४२४. { **श्री बूटा सिंह :**
श्री गुलशन :

क्या **वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि भारत के अधिकांश इंजीनिअरिंग कालेज तकनीकी छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृत्तियों (योग्यता तथा योग्यता-व-साधन, दोनों ही) के संबंध में शैक्षणिक वर्ष के अन्त तक निश्चय नहीं करते;

(ख) क्या यह भी सच है कि फीस आदि पेशगी देने से गरीब छात्रों को अपनी पढ़ाई जारी रखने में काफी कठिनाई हो रही है, और

(ग) यदि हाँ, तो पहला सत्र समाप्त होने से पहले छात्रवृत्ति निश्चित रूप से दी जाने के लिए सरकार ने क्या कार्यवाही की है या करने वाली है ?

†**वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक-कार्य मंत्री (श्री हुमायून कबिर):** (क) से (ग). कुछ शिकायतें पिछले साल आयी थी और इस बात के लिए कदम उठाये गये हैं कि अधिक-

---

†मूल अंग्रेज़ी में

तर छात्रों को शैक्षणिक वर्ष समाप्त होने से पहले उनकी छात्रवृत्तियां दे दी जायें। चालू सत्र में कोई शिकायत नहीं प्राप्त हुई है।

अनुदानों की अनुपूरक मांगें (सामान्य) १९६२-६३

†**वित्त मंत्री (श्री मोरारजी देसाई)**: मैं एक विवरण पेश करता हूं जिसमें वर्ष १९६२–६३ के आय-व्ययक (सामान्य) के सम्बन्धों में अनुदानों की अनुपूरक मांगें दिखाई गई हैं।

आपात की उदघोषणा तथा चीन के अतिक्रमण के बारे में संकल्प—(जारी)

†**अध्यक्ष महोदय** : अब सदन ८ नवम्बर, १९६२ को प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तावित संकल्पों पर आगे चर्चा आरंभ करेगा।

†**श्री ओझा** (सुरेन्द्रनगर): मैं प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तावित दोनों संकल्पों का हार्दिक समर्थन करता हूं। चीन ने हमारे देश पर आक्रमण कर के हमारे साथ जो दगा की है, उससे सारे राष्ट्र को धक्का पहुंचा है।

हमारी विदेश नीति किसी संतुलित दृष्टिकोण से नहीं बल्कि विश्व शान्ति को ध्यान में रखकर बनाई गई है। ऐसी बात नहीं कि इस नीति से वर्तमान स्थिति का मुकाबला नहीं किया जा सकता। यह नीति जो शान्ति के समय के लिए उपयोगी है, संकट के समय के लिए भी उपयोगी है। यदि हम इसे अब बदलने की कोशिश करें, तो अन्य देश हमारी आलोचना करेंगे।

वर्तमान परीक्षा की घड़ी में हमें अपनी समस्त शक्ति आक्रामक को देश से निकालने में लगा देनी चाहिये। हमें जनता के सामने एक ठोक कार्यक्रम रखना चाहिये। यदि आवश्यक हो, तो चाय, चीनी कपड़ा और तेल जैसी वस्तुओं की खपत के बारे में नियम बनाये जाने चाहियें।

जैसा कि हमारे नेता ने कहा है, संघर्ष काफी लम्बा होने की सम्भावना है। हमें अपने युवकों को प्रारंभिक सैनिक प्रशिक्षण देना शुरू कर देना चाहिये ताकि आवश्यकता पड़ने पर उन्हें कमीशन दी जा सके।

सभी स्तरों पर, सरकारी, सामाजिक और व्यक्तिगत स्तरों पर सब अनावश्यक व्यय बन्द होना चाहियें और पूरी मितव्ययता बरती जानी चाहिये।

†**श्री रवीन्द्र वर्मा** (तिरुवेल्ला) : चीन यह नहीं सहन कर सकता था कि एशिया में उस के मुकाबले का कोई और देश भी हो, जोकि प्रजातंत्रीय तरीके से आगे बढ़ रहा हो। वह चाहता है कि भारत को विकास पर खर्चा करने की बजाय प्रतिरक्षा पर खर्च करने के लिये मजबूर किया जाये।

यह भी याद रखना चाहिये कि चीन साम्यवादी देश है और वह मानता आया है कि साम्यवाद के लिये युद्ध अनिवार्य है और शान्ति केवल युद्ध की तैयारी है। चीन ने जो युद्ध छेड़ा है, उस का उद्देश्य साम्यवाद के सीमान्तों का विस्तार करना है।

---

†मूल अंग्रेजी में

मैं तटस्थता की नीति का पूरा पूरा समर्थन करता हूं, क्योंकि यही हमारे अपनी नीति का निर्णय करने के अधिकार की पक्की गारंटी है। इस नीति को छोड़ना खतरनाक और बुद्धिमत्ता से रहित होगा। यह नीति हमें अन्य देशों से सैनिक सहायता लेने से नहीं रोकती है।

चीन ने जो युद्ध कौशल अपनाया है उस की हमें पूरी जानकारी प्राप्त करनी चाहिये। हमें शत्रु का सैनिक, आर्थिक विचारधारा एवं राजनयिक आधार पर सामना करना चाहिये। हमें सीमान्त की जनता को गोरिल्ला युद्ध सिखाना चाहिये और समस्त देश को नागरिक सुरक्षा में प्रशिक्षण देना चाहिये। आर्थिक क्षेत्र में, हमें उत्पादन बढ़ाना चाहिये, संभरण का प्रबन्ध करना चाहिये और वितरण का ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये कि मुनाफाखोरों के लिये कोई जगह न रहे।

†**श्री त्रिदिव कुमार चौधरी** (बरहामपुर): राष्ट्र में अभूतपूर्व राष्ट्रीय जोश आया है, जो हमारे आक्रामकों को निकाल फेंकने के दृढ़ निश्चय का चिन्ह है। किन्तु हमें स्थिति की वास्तविकता का भी विचार करना चाहिये। हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि हम ने उत्तर पूर्व में चीनियों को प्रमुख दर्रों पर कब्ज़ा कर लेने दिया है। लद्दाख में भी हमारी आगे की चौकियां साफ हो चुकी हैं। हमारे पूर्वोत्तर एवं पश्चिमोत्तर दोनों सीमान्त बहुत दुर्गम क्षेत्र हैं। तिब्बत को स्वतंत्र कराने का सैनिक भार अपने ऊपर लेने की बात ऐसी है जो समझ से परे है।

आजकल लड़ाइयां केवल सैनिक कार्यवाहियों से नहीं की जाती हैं। कूटनीतिक प्रचार भी उतना ही आवश्यक है। भारत को चीन द्वारा विदेशों में शान्ति प्रस्ताव के सम्बन्ध में किये गये प्रचार का प्रतिवाद करना चाहिये। इस सम्बन्ध में रेडियो पर और कूटनीतिक मिशनों द्वारा ऐसे प्रचार का मुकाबला किया जाना चाहिये।

श्री विश्वनाथ राय (देवरिया): अध्यक्ष महोदय, चीन ने भारत-भू पर जो आक्रमण किया है, उस से न केवल भारतीय समाज को, बल्कि सारे संसार को यह शिक्षा मिली है कि किसी देश पर शासन करने वाला अधिनायक-तंत्र, चाहे वह व्यक्ति का हो और चाहे दल या गुट का, जब शक्तिशाली होता है, तो वह राजनीतिक संतुलन खो देता है और इस प्रकार मानव-समाज और अपने पड़ोसी राष्ट्रों के लिये घातक सिद्ध होता है।

जो चीन अभी कुछ दिन पहले तक पंचशील की हामी भरता रहा, जो विश्व-शान्ति की बात करता रहा, जो सह-अस्तिव का नारा लगाता रहा, आज वह अपने एक पड़ौसी राष्ट्य और उस मित्र-राष्ट्र पर आक्रमण कर रहा है और गोले बरसा रहा है, जिस ने उस के नये शासन को राजनीतिक गम्भीरता दिलाने में काफी हाथ बंटाया है। यह इस बात का प्रमाण है कि भारत पर जो आक्रमण हुआ है, वह केवल सीमा-विवाद के कारण नहीं है, बल्कि चीन की महत्वांकक्षा के कारण है, जिस से प्रेरित हो कर वह न केवल इंडोनेशिया और वियतनाम आदि छोटे मोटे देशों पर अपना आधिपत्य जमाना चाहता है, बल्कि जन-संख्या की दृष्टि से संसार के दूसरे नम्बर के देश पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है। इस तरह से वह सारे एशिया के जन-समूह पर अपना आधिपत्य जमाने के बाद दूसरे राष्प्रों का शोषण करने के लिये—वह शोषण राजनीतिक हो अथवा आर्थिक—सारे विश्व पर स्वामित्व करने की आकांक्षा रखता है।

हमारे देश के उत्तर में जो संघर्ष हो रहा है, उस को इस समय इस देश में भी और बाहर भी एक सीमा-विवाद समझा जाता है, लेकिन सम्भव है कि आगे चल कर यह विवाद विचारों का

---

†मूल अंग्रेजी में

संघर्ष हो जाये। वह संघर्ष लोकतांत्रिक सिद्धांतों को मानने वाली शक्तियों और ऐसे लोगों या ऐसे दलों का संघर्ष होगा, जो एकतंत्र, अधिनायकतंत्र या डिक्टेटरशिप में विश्वास करते हैं। इसलिये, जैसाकि प्रधान मंत्री ने पहले ही कहा है, हमें आज के लिये ही नहीं, बल्कि बहुत दिनों के लिये पूरी तरह से तैयार होना है, क्योंकि यह युद्ध, यह संघर्ष, थोड़े दिनों का नहीं, अपितु बहुत दिनों तक चलने वाला है।

यह अच्छा हुआ कि भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के जिस सेनानी, वर्तमान प्रधान मंत्री, के नेतृत्व में भारत ने एक हो कर साम्राज्यवाद का अन्त किया, उसी के जीवन-काल में—यद्यपि उन के वृद्ध होने पर—वह समय आ गया है कि अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की जाये। मुझे पूरा विश्वास है कि जिस तरह से राष्ट्र ने पराधीनता से मुक्ति पाने के लिये एक झंडे के नीचे एकत्र हो कर संसार के सब से शक्तिशाली साम्राज्यवाद का नाश किया था, उसी तरह से वह प्रधान मंत्री के नेतृत्व में, इस युग में जो बहुत बड़ा संकट हमारे देश पर आया है, उस का मुकाबला करेगा और उस को दूर करने में ही नहीं, बल्कि चीन की महत्वाकांक्षा का विध्वंस करने में भी सफल होगा। आज हम देखते हैं कि चाहे खेत हो, चाहे फैक्टरी और चाहे दिल्ली जैसे बड़े बड़े शहर, हर स्थान के लोगों की एक ही आवाज है और वह यह कि "नेहरू जी आगे बढ़ें, हम उन के साथ हैं, हम उन के झंडे के नीचे हैं।"

मैं देश के उस हिस्से से आता हूं, जो उत्तरी सीमा के पास है। वहां पर शिक्षा आदि की कमी है और बाढ़ आदि आकस्मिक विपत्तियों से लोग पीड़ित हैं, लेकिन फिर भी वहां पर उत्साह इतना है— मैं ने देखा—कि एक साठ सत्तर बरस का बूढ़ा, जो खेत में काम कर रहा था, कह रहा था कि यदि चीन देश पर आता है, तो यदि कुछ नहीं रहेगा, तो फावड़े से ही उस का सिर कांटेंगे। यही नहीं, पांच छः वर्ष के छोटे छोटे बच्चे भी, जोकि पढ़-लिख भी नहीं सकते हैं, कहते हैं कि हमें क्या करना है। कई बच्चे तो यह कहते हैं कि हम लड़ाई पर कब जायेंगे। हम ने उन को कहा कि नेहरूजी से पूछना, वही बतायेंगे।

यह ठीक है कि जो राष्ट्रीय संकट कभी कभी हम पर आते हैं, उन के कारण आर्थिक दृष्टि से जनता को कष्ट होता है और उस को और भी कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन ऐसे संकट राष्ट्र की एकता को बढ़ने, पनपने और सुदृढ़ होने का अवसर प्रदान करते हैं। हमारे देश में पिछले समय में राष्ट्रीयता की कमी हो गई थी और चारों ओर भाषावाद, साम्प्रदायिकता, फूट और क्षेत्रीयता का बोलबाला था। उन सब बातों को भूल कर आज सब लोग एक हो रहे हैं और भारतीय राष्ट्रीयता को बलवान् बना रहे हैं। लेकिन हमारी राष्ट्रीयता को सुदृढ़ और बलवान् बनाने का अर्थ यह नहीं है कि हम दूसरे राष्ट्रों का शोषण करेंगे, जैसाकि चाइना करना चाहता है, बल्कि हम तो दूसरे राष्ट्रों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करते हुए उन को स्वतंत्रता को बनाये रखने या प्राप्त करने और उन के विकास और प्रगति में अपना योग देना चाहते हैं। हमारी इसी नीति के कारण विश्व के अधिकतर देश इस समय हमारे साथ हैं और हम को सहायता दे रहे हैं। भले ही कुछ कम्यूनिस्ट देश हमारे साथ खुल कर न हों, लेकिन उन के मन हमारे साथ हैं। मुझे आशा है कि संसार के सब राष्ट्र, चाहे वे किसी भी गुट में हों, हम को सहायता और प्रोत्साहन देते रहेंगे।

लेकिन हम को इस बारे में सचेत रहना चाहिये कि यह संघर्ष केवल दस बीस बरस चलने वाला नहीं है। आज चीन जैसा बलवान् और बहुत बड़ी जन-संख्या वाला राष्ट्र हमारा विरोधी बन

[श्री विश्वनाथ राय]

रहा है । इसलिये हम को शताब्दियों तक उस के आक्रमण का मुकाबला करने और संघर्ष करने के लिये तैयार रहना चाहिये । हमारे राष्ट्र में दर्शन का सदा से प्रभाव रहा है और हम लोग सैद्धांतिक बातों में दिलचस्पी लेते आये हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम में मार्शल स्पिरिट बढ़े । आज हम को देश में यह भावना पैदा करनी चहिये कि यदि कोई दुश्मन देश पर आक्रमण करता है, तो हम डट कर उस का मुकाबला करेंगे ।

अन्त में मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि उत्तरी सीमा से लगे हुए क्षेत्रों, नागालैंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब और जम्मू काश्मीर आदि में सैनिक शिक्षा की जल्दी से जल्दी व्यवस्था की जाये । मुझे खुशी है कि सरकार स्कूल-कालेजों में इस का आयोजन करने जा रही है । लेकिन सब से पहले उत्तरी सीमा पर इस का काम शुरू किया जाना चाहिये ।

श्री मा० ला० वर्मा (चित्तौड़गढ़) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने सुझाव ही आप के सामने रखने के लिये खड़ा हुआ हूं । पांच दिन से यहां पर इस विषय पर बहस चल रही है और इसमें सभी दलों के माननीय सदस्यों ने एक मत से हमारी जो नीति है, नान-एलाइनमेंट की, उसमें तथा हमारे प्रधान मंत्री जी में बिश्वास प्रकट किया है । हालांकि मैं जानता हूं कि कुछ लोगों ने अपनी पार्टी की दृष्टि से भी कुछ बातें कही हैं । हमारे कम्युनिस्ट भाइयों ने देश के पक्ष में प्रस्ताव पास किया है । लेकिन इस के बावजूद भी उन को कोसने का यह समय नहीं था, ऐसा मैं समझता हूं । उन्हों ने देश का साथ देने का वचन दिया है और ऐसी हालत में हमें कोई अपशब्द उन के बारे में नहीं कहने चाहियें थे । मैं ने पेकिंग रेडियो को सुना है । उसने कम्युनिस्ट कंट्रीज़ के टीटो साहब को गद्दार बताया है । इस के साथ ही साथ उस ने हमारे डांगे जी को भी गद्दार बताया है । यह मैं ने खुद सुना है । चाहे किसी भी कारण से हो, मगर जो आज हमारे साथ है, ज़ाहिरी तौर पर साथ है, उस को ख्वाम ख्वाह हम धक्का दें, यह सही चीज़ नहीं है । जब उन्हों ने एक राय से प्रस्ताव पास किया है, तो हमारा यह फ़र्ज हो जाता है कि हम उन को भी अपने साथ ले कर चलें ।

आज जो एम० पीज़० हैं वे भी देश सेवा करने के लिये उत्सुक हैं । काम करने का उन को तजुर्बा है । इन में से कई हमारे देश की आज़ादी के लिये लड़े हैं । उन्हों ने देश को आज़ाद कराने की जो जद्दोजहद हुई थी, उसमें अपनी जिन्दगियां गाली हैं, उन से काम लिया जाय । बड़ी भारी ताक़त है इनमें । वे चाहते हैं कि हाउस जल्दी से जल्दी बन्द किया जाय और हम को काम सौंपा ज़ाय । हमें २१ रुपये की भूख नहीं है । आज लोग इस चीज़ को नहीं चाहते हैं, वे हर कुर्बानी करने को आतुर हैं ।

यह चमन यों ही रहेगा और सैंकड़ों बुलबुलें ।
अपनी बोली बोल कर खाली यूं ही उड़ जायेंगी ।।

मैं होम मिनिस्टर साहब को बधाई देता हूं कि उन्हों ने देश-द्रोही कम्युनिस्टों को गिरफ्तार किया है । मगर याद रखिये हमारे में से भी कुछ सफेदपोश ऐसे हैं जो हमारे प्रधान मंत्री के बारे में कहते हैं कि शान्ति के मौके पर हमें एक प्रधान मंत्री की जरूरत है और युद्ध के मौके पर दूसरे ही प्रधान मंत्री की जरूरत है । मैं चाहता हूं जो इस तरह की देश-द्रोह की बातें करते हैं, उन को भी गिरफ्तार किया जाय । यही न समझ लिया जाय कि घर के बाहर ही सांप है, घर में भी सांप घुसे हुए हैं ।

श्री रामेश्वरानन्द : कम्युनिस्ट भी हैं, इनको भी याद रख लीजिये ।

अध्यक्ष महोदय : स्वामी जी, आराम से बैठना चाहिये, आप तो बोल चुके हैं ।

श्री मा० ला० वर्मा : मैं यही कहना चाहता हूं।

लबासे रफी के सफर में लुटेरे
खुदा के लिए इनसे बच कर निकलना
ये अहले सियासत न तेरे न मेरे।

मैं पत्रकारों को भी बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने बड़े संयम से काम लिया है। हमारे यहां कई एसे मौके आए, कई भाषण हुए लेकिन पत्रकारों ने एक लाइन भी नहीं लिखी। जिन पत्रों ने इनको भेजा हुआ है, जिन संवाददाताओं को भेजा हुआ है, उन्होंने भी देश भक्ति का सबूत दिया है और देश में सुरक्षा का वातावरण बनाये रखने में सहयोग प्रदान किया है। इसके लिए उनको भी धन्यवाद दिया जाना चाहिये।

हमारे प्रधान मंत्री जी रात दिन काम कर रहे हैं और उनको कभी भी फुर्सत नहीं मिलती है। उन्होंने जिन्दगी भर काम किया है। लेकिन मैं समझता हूं कि आज उनका हौसला और भी बढ़ गया है। कांग्रेस में भी अगर कोई ऐसे लोग हैं जो उनके खिलाफ हैं, उनको भी हम समझ लेंगे, और निपट लेंगे।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य को मैं इसी वक्त नहीं निपटने दूंगा।

श्री मा० ला० वर्मा : अब मैं जो मुझे सुझाव देने हैं, उनको आपके सामने रखता हूं। मेरा पहला सुझाव यह है कि विकास खंड बिल्कुल बन्द कर दिये जायें और विकास अधिकारी, ग्राम सेवक, ग्राम सेविकाओं का उपयोग युद्ध जनित कार्यों में किया जाए।

इसी प्रकार विकास तथा अन्य अनावश्यक कार्यों में लगी हुई जीपों का उपयोग सुरक्षा कार्यों में हो।

कृषि, सिंचाई, यातायात, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, ऋण, तकावी इत्यादि काम का बटवारा पुराने सरकारी विभागों के हाथों से हो और सत्ता विकेन्द्रीकरण की संस्थाओं द्वारा यह सब सेवायें चालू रहें।

फिल्मों, रेडियो इत्यादि पर प्रेम तथा विलासितापूर्ण प्रदर्शन, संगीत आदि बिल्कुल बन्द कर दिये जायें और वीर रस पैदा करने वाले कार्यक्रम चालू हों।

युद्ध मोर्चे की तैयारी के लिए यूनिवर्सिटी, कालजों इत्यादि के छात्रों को ट्रेनिंग दी जाने की घोषणा हो चुकी है। मगर कालेजों में राइफल्ज़ का इंतिज़ाम नहीं है। महाराजा कर्णीसिंह जी ने घोषणा की है कि १८०० राइफलें वह देने को तैयार हैं। दूसरे राजा महाराजाओं को भी ऐसा ही करना चाहिये और इस सब राइफल्ज़ का उपयोग किया जाना चाहिये। ज्यादा से ज्यादा लोगों को इसकी ट्रेनिंग दी जानी चाहिये।

भारत साधू समाज ने अपील की है और कहा है कि हम साधू शामिल होने के लिए तैयार हैं। यह बड़ी खुशी की बात है। मैं कहना चाहता हूं कि इस मौके पर नौजवान साधुओं को इस काम में लगाया जाए और उनको मोर्चे पर भजा जाए।

अध्यक्ष महोदय : स्वामी जी बैठे रहें। उन्होंने साधुओं का नाम लिया है, स्वामियों का नहीं लिया है।

श्री मा० ला० वर्मा : विलासिता की सामग्री का आयात और प्रयोग बन्द कर दिया जाए। हमारे कमल नयन बजाज जी ने अपील की है कि ऐसी सामग्री का आयात बन्द कर दिया जाए। मैं यह भी उन बहनों से अपील करूंगा जो इस सदन की सदस्यायें हैं कि वे लिपस्टिक जो लगा कर आती हैं, वह भी लगानी बन्द कर दें।

अध्यक्ष महोदय : ऐसी बात और ऐसा सुझाव नहीं देना चाहिये।

श्री मा० ला० वर्मा : विदेशों में फीस फाउंडेशन के नाम पर कुछ लोग चले जाते हैं, उनको बिल्कुल भी विदेशी मुद्रा न दी जाए और इसकी हर सम्भव तरीके से बचत की जाए। इससे पीस होने वाला नहीं है। आज यह फिजूल का खर्चा है।

विदेशी बैंकों में भारतीयों की अमानत, मुद्रा, सोना इत्यादि जो जमा है, उसको तुरन्त भारत में मंगाया जाए और उसका उपयोग देश रक्षा के काम में किया जाए।

विदेशों में ट्रेनिंग प्राप्त इंजीनियर्स को, चाहे वे बाहर सर्विस में लग गये हों, वापिस बुलाया जाए और उनकी सेवाओं से लाभ उठाया जाए।

सांस्कृतिक प्रोग्राम बिल्कुल बन्द कर दिये जायें। इस वक्त बच्चों को नाच नचाने की जरूरत नहीं, उनके हाथ में तलवार पकड़ाने की जरूरत है।

केन्द्र और राज्यों में जो कर्मचारी बड़ी संख्या में हैं, उनकी तादाद कम की जाए। इसी प्रकार अंडर सैक्रेटरी, असिस्टेंट सैक्रेटरी, ज्वायट सैक्रेटरी भारी तादाद में हैं, उनकी तादाद को भी कम किया जाए।

इस संकट के समय में किसी भी पदाधिकारी को एक हजार से अधिक वेतन नहीं लेना चाहिये।

†**श्रीमती लक्ष्मीकान्तम्मा (खम्मम)**: आज भारत और प्रधान मंत्री को अलग नहीं किया जा सकता। भारत हमारा प्रधान मंत्री है और प्रधान मंत्री भारत। देश का यह सौभाग्य है कि इस समय उसे प्रधान मंत्री जैसा नेता प्राप्त है। वह हमें अवश्य ही विजय पथ पर ले जायेंगे।

सेना के लिए खाद्य का बहुत महत्व है। अब हमें उनके लिए खाद्य हवाई जहाज से गिराना पड़ता है। मेरा सुझाव है कि जवानों की अच्छी किस्म की खाद्य टीन के डिब्बों में देनी चाहिये।

मेरा एक और सुझाव है कि हमें अपने शस्त्रास्त्रों और गोलाबारूद के संभरण और आवश्यक वस्तुओं के वहन सम्बन्धी रहस्य प्रकट नहीं करने चाहिये।

भूतपूर्व सैनिक कर्मचारियों की सेवायें प्राप्त की जानी चाहियें। देश की सेना में महिलायें पुरुषों से कभी पीछे नहीं रही हैं। वें कई प्रकार से युद्ध के सम्बन्ध में सेवा कर सकती हैं। इस समय उनकी सेवाओं का सर्वोत्तम उपयोग करने का एक स्पष्ट कार्यक्रम बनाया जाना चाहिये।

हमें अपनी आय का १/६ भाग राष्ट्रीय प्रतिरक्षा कोष में देना चाहिये और बचत का २/३ भाग प्रतिरक्षा बांडों में लगाना चाहिये।

†**श्री जसवन्त मेहता (भावनगर)**: मैं प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तावित संकल्प का समर्थन करता हूं। प्रधान मंत्री ने चीनी आक्रमण का स्वरूप स्पष्ट कर दिया है। देश की यह प्रतिक्रिया

†मूल अंग्रेजी में

बिल्कुल ठीक है कि जब तक चीनियों को निकाल बाहर न किया जाये, तब तक आक्रमणकारियों से कोई समझौता नहीं होना चाहिये ।

यह देश को मजबूत बनाने का बहुत अच्छा मौका है। प्रधान मंत्री ने महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री को केन्द्रीय मंत्रिमंडल में लेकर ठीक कदम उठाया है। इस समय केन्द्रीय सरकार को और भी मजबूत बनाने की आवश्यकता है । मैं इस सुझाव का समर्थन करता हूं कि सब युवकों और समर्थ व्यक्तियों को अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये । देश के समस्त साधनों का पूरा उपयोग करने के लिए एक योजना बनाई जानी चाहिये ।

भारत के साम्यवादी दल के बारे में, मेरा सुझाव यह है कि या तो उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन से सम्बन्ध तोड़ देना चाहिये या चीनी अतिक्रमण की पोल खोलने के लिये साम्यवादी देशों को शिष्टमंडल भेजना चाहिये ।

मैं तटस्थता की नीति के पक्ष में हूं । मैं यह भी समझता हूं कि हमें जिस भी देश से शस्त्रास्त्र मिल सकें, ले लेने चाहियें ।

राजनैतिक दलों को अपने छोटे मोटे मतभेद दूर करने चाहियें । देश में राष्ट्रीय नेतृत्व उत्पन्न किया जाना चाहिये ।

†**श्री ज० रा० मेहता** (पाली): जैसा कि गृह-कार्य मंत्री ने कहा है, चीनी आक्रमण का एक परिणाम यह हुआ है कि देश में राज्यों की सीमाएं समाप्त हो गई है । जातियों और दलों के भेद भी समाप्त हो गये हैं । अब केवल एक जाति रह गई है और वह है क्षत्री जाति, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अब एक सिपाही है ।

साम्यवादी दल का पिछला रिकार्ड चाहे कुछ भी हो, अब उन्होंने हमें जो समर्थन दिया है, उसका हमें स्वागत करना चाहिये ।

यह कहना भी गलत है कि हमारी तटस्थता की नीति गलत है और हमें इसे छोड़ देना चाहिये । यह याद रखना चाहिये कि ४० राष्ट्रों ने भारतीय पक्ष का समर्थन किया है ।

सभी लोग यह समझ सकते हैं कि यह संघर्ष काफ़ी लम्बा और गम्भीर होगा । हमारा देश बड़ा है किन्तु चीनी सिपाहियों की संख्या बहुत अधिक है । हमें आत्म संतुष्ट नहीं रहना चाहिये । हमें भी उन के मुकाबले की सेना और वायु सेना खड़ी करनी चाहिये । शस्त्रास्त्रों के मामले में भी हमें नवीनतम हथियार लेकर उन की बराबरी करनी चाहिये ।

सेना में भरती होने के लिए लोगों में अपूर्व उत्साह है । यह देखना सरकार का फ़र्ज़ है कि कोई भी व्यक्ति निराश वापस न जाने पाये ।

मेरे विचार में राजस्थान की सीमा की रक्षा की ओर उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा । हमें इस सीमा पर भी सावधान रहना चाहिये ।

श्री न० प्र० यादव (सीतामढ़ी): अध्यक्ष महोदय, आप ने मुझे जो बोलने का अवसर दिया है, उसके लिए धन्यवाद ।

चीनी आक्रमण के कारण आज हमारा देश एक महान् संकट की स्थिति में से गुज़र रहा है । पंचशील के सह-अस्तित्व के सिद्धान्त का गला घोंट कर चीन ने हमारे साथ जिस विश्वासघात

†मूल अंग्रेजी में

[श्री न० प्र० यादव)

का परिचय दिया है, वह इतिहास के काले पन्नों में कोसने वाली काली कहानी भर बन कर रह जायेगी। युद्ध को घृणा की वस्तु समझने वाली और "जियो एवं जीने दो" के नारे में विश्वास करने वाली मानवता की पीढ़ी किन शब्दों में चीन को धिक्कारेगी, इस का निर्णय बस केवल समय करेगा।

अपनी आक्रामक और विस्तारवादी नीति के कारण साम्यवादी चीन ने साम्यवाद के उसूलों का भी कत्ल कर दिया है। भारत के लोग एक ओर जहां मानव के दिल में मानव के लिए प्यार, सहयोग और अमन-चैन के आधार पर कल्याणकारी राज्य की स्थापना में व्यस्त हैं, वहां दूसरी ओर साम्यवादी चीन अपनी विस्तारवादी और साम्राज्यवादी नीति के कारण भारत के साथ साथ सम्पूर्ण विश्व को तीसरे विश्व-युद्ध को धधकती ज्वाला में जबरन ढकेल कर भस्म कर देना चाहता है।

चीन के द्वारा पैदा की गई यह लड़ाई हम पर थोपी गई है और इस युद्ध का परिणाम चाहे जो कुछ भी हो, पर हमें चीन द्वारा दी गई इस चुनौती को स्वीकार करना है। भारत की सम्पूर्ण जनता का स्वाभिमान आज जाग उठा है। हम ने बड़े गर्व के साथ चीन की चुनौती को स्वीकार किया है और इस के लिए हम सब कुछ न्योछावर कर देंगे। जब तक भारत के एक एक बच्चे में भी खून की अन्तिम बूंद तक शेष रहेगी, तब तक हम भारत की एक इंच भूमि भी चीन के अधिकार में नहीं छोड़ेंगे।

चीन ने भारत की उस सीमा को ललकारा है, जो सदियों से हमारा संतरी रहा है। आज चीन की दृष्टि हमारे पवित्र हिमालय की ओर है, जो हिमालय हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की जननी है। हिमालय हमारी मां है, जहां से हमारी सभ्यता और संस्कृति गंगा, जमुना और ब्रह्मपुत्र आदि नदियों के रूप में निकलती है। हमारी सांस रहते कोई भी हमारी मातृभूमि का बाल बांका नहीं कर सकता।

भारत की बढ़ती हुई प्रगति शायद चीन को अच्छी नहीं लगी। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद एक ओर तो हम पंच-वर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश को सब तरफ़ से खुशहाल बनाने की कोशिश करते रहे और दूसरी ओर चीन अपने यहां के लोग को भूखा रख कर युद्ध की तैयारी करता रहा है। अब लगता है कि आज से कुछ वर्षों पहले का "हिन्दी-चीनी भाई भाई" वाला नारा चीन के लिए एक ढोंग और मजाक था और हम अनजाने अपने बहुत बड़े दुश्मन को भाई समझते रहे।

भारत में एक के बाद एक सफल होती हुई योजनायें और तीव्र गति से हो रहा भारत का विकास शायद चीन की नजरों में खटकने लगा है और चीन ने आक्रमण कर के हमारी प्रगति की राह में एक रोड़ा अटकाना चाहा है। शान्तिप्रिय होने के कारण एशिया के साथ संपूर्ण विश्व में भारत का प्रभाव बढ़ता गया है। परन्तु चीन को यह बात शायद अच्छी नहीं लगती कि भारत विश्व का एक अगुआ राष्ट्र बन जाये। चीनी आक्रमण ने भारत के समक्ष एक प्रश्न-चिह्न खड़ा कर दिया है कि हम इस परिस्थिति में क्या करें, कहां जायें।

आज हमें अपनी सुरक्षा के लिए अच्छी तरह तैयारी कर लेनी है। इस परिस्थिति में हमें सभी प्रकार की आलोचनाओं को छोड़ कर प्रधान मंत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरू, के नेतृत्व में एक हो कर चीनी आक्रमण का मुंहतोड़ जवाब देना है, जिस से फिर कभी चीन भारत की ओर नज़र उठाने की कोशिश न करे। कालेजों में सैनिक शिक्षा को अनिवार्य कर के प्रत्येक व्यक्ति को तैयार

करना है। आज देश के नौजवानों को अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह समझनी है। भारत के एक एक व्यक्ति को आज देश की रक्षा के लिए शक्तिशाली सिपाही बन जाना है। सरकार द्वारा सीमा पर पड़ने वाले राज्यों में सैनिक शिक्षा को अनिवार्य कर देने के निर्णय का मैं स्वागत करता हूं। परन्तु यह काम शीघ्रता से और सभी राज्यों में होना चाहिए। आज हमें प्रत्येक व्यक्ति को जगाना है और अपना सब काम बड़ी लगन से करना है, क्योंकि व्यक्ति की चेतना ही स्वतंत्रता की कुंजी होती है।

आज की इस परिस्थिति में तो सब से बड़ा खतरा हमारी तटस्थतापूर्ण नीति पर आ पड़ा है। हमारे कुछ अजीज़ दोस्त यह तर्क पेश करते हैं कि भारत को अपनी रक्षा के लिए किसी फ़ौजी गुट में शामिल हो जाना चाहिए। परन्तु मैं खुले शब्दों में कहूं कि ऐसे लोग एक ओर से भारत को बचा कर दूसरी ओर इस की विजय को किसी गुट के हाथों सौंप देना चाहते हैं। यही विपत्तिकाल तो हमारे साहस और धैय की अग्नि परीक्षा का काल है। तटस्थता की नीति के कारण ही संसार के दोनों ही गुट भारत को श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते हैं।

हमारी सम्पूर्ण प्रगति की तह में हमारी तटस्थ नीति ही है। अतः हमारे लिए यह लाज़िम नहीं कि हम किसी गुट में शामिल हों। हम ने मित्रता के आधार पर सारे मित्र देशों से सहायता मांगी है और हमें मिली भी है। आज का वर्तमान संकट केवल भारत का नहीं, वरन् शान्ति और चैन से जीने वाले एशियाई और अफ्रीकी देशों के लिए भी है। आज हमारा सिर स्वभावतः ही उन मित्र देशों के प्रति आदर से झुक जाता है, जो किसी न किसी रूप में भारत की सहायता कर रहे हैं। तटस्थता हमारे समाजवादी समाज की स्थापना का आधार है और इस प्रकार की समाज-स्थापना हमारा लक्ष्य है।

चीनी आक्रमण के कारण हमारे देश के अन्दर भी कई प्रकार के संकट उत्पन्न हो जाने की आशंका है, जिस के लिए सरकार को सजग रहना चाहिए। इस अवसर का लाभ उठा कर मुनाफ़ाख़ोरी और मूल्यों में अधिक चढ़ाव हो सकता है। हर्ष की बात है कि आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों की बढ़ती को रोकने के लिए सरकार ने कदम उठाना प्रारम्भ कर दिया है और मुझे विश्वास है कि जनता का सहयोग पा कर राष्ट्र-विरोधी तत्व सिर नहीं उठा सकेंगे।

इस परिस्थिति में हमें अपने अन्य पड़ौसी देशों के साथ भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को मजबूत करना है। पड़ौसी और मित्र-राष्ट्र नेपाल के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को हमें और भी दृढ़ करना होगा। पाकिस्तान के कुछ पत्रों ने भी भारत-विरोधी कदम उठाया है और ये सारे कुचक्र चीनी खुफ़ियों के हैं। चीन के कुछ समर्थक अपने देश में भी प्रश्रय पा रहे हैं, जिन पर कड़ी निगरानी रखी जानी चाहिए। इस समय समाचारपत्रों की ज़िम्मेदारी बहुत अधिक बढ़ जाती है कि वे किसी प्रकार के ऐसे समाचारों को .स्थान न दें, जिस से जनता में ग़लतफ़हमी पैदा हो।

देश की सुरक्षा की तैयारी ज़ोरों से होनी चाहिए, क्योंकि अगर संकट कुछ समय के लिए टल भी गया, तो इस की आशंका बनी रहेगी। देश के कुछ औद्योगिक यूनिटों को अस्त्र-शस्त्र बनाने के काम में भी लेना अधिक उचित होगा। फिर भी तीसरी पंच-वर्षीय योजना की सफलता के प्रति भी हमें सावधान रहना है। हमें विश्वास है कि तीसरी योजना भी सफल होगी और विजय भी हमारी ही।

आज देश की जनता जिस शूरता और वीरता का परिचय एक हो कर दिखा रही है, वे इस बात का संकेत है कि हमारा प्रजातंत्र टूटेगा नहीं और स्वतंत्रता कायम रहेगी। चीन ने हमारी जिस भूमि पर अधिकार कर लिया है, उस को ले लेने का हम को व्रत लेना है।

[श्री न० प्र० यादव]

आज हमारा मस्तक उन जवानों के प्रति झुके बिना नहीं रहता, जो अपनी जान की बाज़ी लगा कर सर्दियों में देश-रक्षा के महान् काम में व्यस्त हैं। वे हमारी स्वतंत्रता के प्रहरी हैं।

एक बार हम फिर उन जवानों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जो देश की रक्षा करते हुए वीर-गति को प्राप्त हुए हैं। भगवान उन की दिवंगत आत्मा को शान्ति दे। ये शहीद भारत के भावी अध्याय की मूल्यवान कड़ी हैं।

इन शब्दों के साथ मैं प्रधान मंत्री द्वारा रखे गये दोनों प्रस्तावों का समर्थन करता हूं।

†**श्री मुथिया** (तिरुनेलवेली) : प्रधान मंत्री ने जो दो संकल्प प्रस्तुत किये हैं मैं उन का हार्दिक स्वागत करता हूं। जिन जवानों ने देश की स्वतंत्रता पर अपने जीवन की बलि दे दी है उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैं उन सब राजनैतिक नेताओं को भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने प्रधान मंत्री का समर्थन किया है। इस समय देश में जैसी एकता है वह हमारे इतिहास में अभूतपूर्व है। संसार के समस्त सभ्य देशों ने चीन के आक्रमण की निन्दा की है।

हमारे प्रधान मंत्री ने पिछले पांच वर्ष से बातचीत द्वारा इस झगड़े को निपटाने की कोशिश की है, परन्तु सफलता नहीं हुई। जब चीन सर्वथा अविश्वसनीय सिद्ध हुआ है तो शान्ति की बात का कोई अर्थ नहीं रह जाता। बातचीत तभी हो सकती है जबकि वे हमारा सम्मान करें।

कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन अधिकतम बढाया जाना चाहिये और उपभोक्ता वस्तुओं का सम्भरण सुनिश्चित करना चाहिये। मोर्चे पर अपने सैनिकों को खाद्यान्न, शस्त्रास्त्र तथा गोलाबारुद निरन्तर भेजते रहना चाहिए। हमें विदेशों से आधुनिकतम हथियार प्राप्त करने चाहिये और उन का भारत में उत्पादन करने के लिए भी कदम उठाये जाने चाहियें।

मित्र देशों से सैनिक सहायता लेते हुए हमें तटस्थता की बुनियादी नीति नहीं छोड़नी चाहिये।

हमें इस समय पाकिस्तान और नेपाल के साथ अपने सम्बन्ध सुधारने चाहियें। साथ साथ हमें अपने पाकिस्तान के साथ सीमान्त के सम्बन्ध में सतर्क भी रहना चाहिये।

हमें सैनिकों और लोगों के वर्तमान उत्साह को बढ़ाये रखना चाहिये। इस काम के लिए आकाशवणी द्वारा प्रचार करना चाहिये।

लोगों को धन इत्यादि से सरकार की सहायता करनी चाहिये। शीघ्र ही हज़ारों व्यक्तियों को सैनिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये। नागरिक प्रतिरक्षा को मजबूत करना चाहिये। एन० सी० सी० और होम गार्ड से भी पूरी तौर से काम लेना चाहिये। हवाई हमलों से बचने के लिये भी प्रबन्ध किये जाने चाहियें।

श्रीमती सावित्री निगम (बांदा) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रधान मंत्री जी के प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन करने के लिये खड़ी हुई हूं। शान्ति के समय में उन्हें बहुमत प्राप्त था, आज जब भारत पर संकट आया है तो उन्हें देश का पूर्ण समर्थन प्राप्त है। वे आज शान्ति के अग्रदूत के रूप में और भारत की महान् आत्मा के रूप में हमारे सामने उपस्थित हैं। रामलीला मैदान में उन्होंने कहा कि हम चीनी हमलावरों को पूरी ताकत से हरायेंगे उनसे लड़ेंगे और बाहर खदेड़ेंगे उन्होंने यह भी कहा कि मैं राष्ट्र को बहादुर बनाना चाहता हूं, उसे बहादुर बना हुआ देखना

†मूल अंग्रेजी में।

चाहता हूं पर मैं राष्ट्र को न्यूट्रलाइज नहीं करना चाहता। नान-एलाइनमेंट की पालिसी का मैं अब भी समर्थन करता हूं और किसी कीमत पर भी उसे छोड़ने के लिये तैयार नहीं हूं। इससे हम लोगों को ऐसा लगा मानों सरदार पटेल की दृढ़ता और साहस, महात्मा गांधी की सत्य और अहिंसा में निष्ठा और शान्ति के अग्रदूत नेहरू की क्रियात्मक शान्ति, साकार हो कर प्रधान मंत्री के रूप में बोल रही हो। हम जाग उठ हैं। ४४ करोड़ नर-नारी आज तन कर खड़ हैं और तब तक दम न लेंगे जब तक चीनी हमलावरों को भारत की भूमि से बाहर न खदेड़ देंगे। इसमें सन्देह नहीं कि विजय हमारी होगी।

इसमें भी कोई सन्देह नहीं है कि सारी दुनिया के शान्तिप्रिय लोग हमारा साथ देंगे। पर जिस कपट, छल तथा बर्बरता से चीनियों नें हम शान्तिप्रिय लोगों पर हमला किया है उसने हमें मजबूर कर दिया है कि हम आत्मरक्षा के लिये शस्त्र उठायें और लड़ें। जिस मनोवृत्ति का परिचय चीन ने दिया है, उसका मुझे क्या सभी को क्षोभ है। पर सब से बड़ा क्षोभ और दुख इस बात का है कि न्यूकलीयर वार के खतरे से भयभीत संसार और मानवता के सारे शान्ति प्रयासों को, आधी शताब्दी की करोड़ों आदमियों की दुनिया में शान्ति लाने की कोशिश को, चीनियों ने इस हमले के द्वारा नेस्तोनाबूद और बर्बाद कर दिया है। शान्ति की इन कोशिशों को उसने दो सौ साल पीछे धकेल दिया है।

इसनें जो धक्का भारत को पहुंचाया है वह तो पहुंचाया ही है पर कम्युनिज्म और उसके तमाम तथा कथित सिद्धान्तों को उसने बिल्कुल ढहा कर चकनाचूर कर दिया है और बिल्कुल मिट्टी में मिला दिया है। यहां तक कि कम्युनिस्ट विचारों को तो इस चीनी हमले ने कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रखा है। इसीलिये सच्चे सिद्धान्तों के रक्षक कम्युनिस्ट, श्रीमन्, हमारा साथ दे रहे हैं और हमारे साथ हो गये हैं।

इस सदन के द्वारा मैं मिस्टर ख्रुश्चव से पूछना चाहती हूं कि क्या कम्युनिज्म और उसके द्वारा स्पोटिंग पीस के यही अर्थ हैं कि धोखा दे कर किसी शान्तिप्रिय राष्ट्र पर क्रूर तथा बर्बर हमला कर दो। आज व या अन्य कम्युनिस्ट देशों के नेता इसे कैसे बर्दाश्त कर रहे हैं। आज चंगेजखां की क्रूरता, नादिर शाह की बर्बरता और नेपोल्यिन बोनापर्ट की शिश्व विजय की घृणित आकांक्षा और हिटलर की खून की प्यास ले कर चाऊ एन लाई ने लाखों लाचार तिब्बतियों के खून से अपने हाथ रंग कर शान्तिप्रिय भारत पर हमला किया है और आगे बढ़ रहा है। मैं पूछना चाहती हूं आज कि उन्होंने क्यों मौन साध रखा है क्या यह छिपा है कि बेच रे असहाय तिब्बती बंदूक और तलवार की नोक पर बिना राशन पानी के बर्फीले पहाड़ों में कुत्ते बिल्लियों की तरह मारे जा रहे हैं? मुझे तरस आता है उस निरीह भूखी तथा भोली भाली विवश चीनी जनता पर जिसे युद्ध में पागल हुए चाऊ एन लाई गोली या तलवार की नोक पर जबर्दस्ती मरने को भेज रहे हैं। यह कौन सा कम्युनिज्म का सिद्धान्त है, कहां की शान्तिप्रियता है। भूख ने चीन में हाहाकार मचा रखा है। मैं श्री ख्रुश्चेव से अपील करती हूं कि मानवता की रक्षा के लिये, उस शान्ति की रक्षा के लिये जिसके वे समर्थक थे और हमेशा से समर्थन करते रहे हैं, तुरन्त चीनी बर्बरता और बोनापार्टीज्म को रोकें और कम्युनिज्म के नाम पर जो बड़ा कलंक लगने वाला है, उससे उसे बचा लें वर्ना उनकी शान्ति मरघट की शान्ति बन जायेगी, कब्रिस्तान की शान्ति बन जायेगी। मैं चाहती हूं कि वे अपने परम-मित्र भारत का खुल कर साथ दें। मैं संसार के तमाम डिमाक्रेटिक देशों से यह अपील करती हूं कि वे इस हमले को केवल भारत पर किया हुआ हमला न समझें, बल्कि यह हमला पूरी मानवता पर है, पूरी शान्तिप्रिय और डिमाक्रेटिक नेशन्स पर है। जो खतरा तृतीय महायुद्ध

[श्रीमती सावित्री निगम]

के समय हिटलर से विश्व को हुआ था, वही खतरा आज एशिया नहीं वरन् पूरे संसार को चाऊ एन लाई के बोनापार्टिज्म से हो रहा है। सेकेन्ड वार में जो देर की गई, जो भूल की गई, मेरा अनुरोध है कि संसार के डिमाक्रेटिक देश फिर वही भूल न करें। जब हिटलर ने आधे संसार को बरबाद कर दिया तब वे संगठित हुए। यह बहुत अच्छा समय है,अब और बरबादी बढ़ने से पहले हम संगठित हो कर और पूरी ताकत से चीनियों का मुकाबला करें। क्योंकि यह हमला मानवता पर है इसलिये हम लोग बिना किसी रोक-टोक के, बिना किसी बन्धन के बिना किसी हिचक के जो हेल्प जिस देश से मिलती हो, उसे खुशी से हासिल करें। हम लोग भारत को बचाने के लिय ही नहीं, बल्कि शान्ति और मानवता को बचाने के लिये यह मदद ले रहे हैं। यह मदद हमें नहीं मिल रही है बल्कि हम उन की मदद कर रहे हैं।

इसी तरह से मैं देशवासियों से भी एक अपील करना चाहती हूं और अपने देश की सरकार से अपील करना चाहती हूं, कि हमें जितने भी बचत के तरीके हो सकते हैं उन को अपनाना है, नानएसेंशल कांस्ट्रक्शन से हम को बचना है। हमारे देश के बड़े बड़ पूंजीपतियों और व्यवसायियों ने बड़ी बड़ी रकमें दी हैं, लेकिन मैं अदब से कहना चाहती हूं कि उन की वे रकमें आम तौर से शअरहोल्डर्स के रुपयों में से दी गई हैं। मैं उन से अनुरोध करूंगा कि वे और बड़ी बड़ी रकमें दें अपने मुनाफों अथवा अपने कमिशन में से।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहती हूं कि इस देश के बहुत से सच्चे भारत माता के सपूत बड़े बड़े राजे महाराजे, दोनों हाथों से खुल कर मदद कर रहे हैं, लेकिन मैं उन से कहूंगी कि यह समय है, यह देश की मांग और पुकार है, कि वे अपने आप अपनी प्रीवी पर्सेज में कट करायें। मैं देश के तमाम मन्दिरों के पुजारियों और उन धर्मवीर लोगों से प्रार्थना करना चाहती हूं कि उन के मन्दिरों में आज २५ लाख तोले सोना जो रक्खा हुआ है तथा रजवाड़ों में जो लाखों तोले सोना पड़ा हुआ है उसे व तुरन्त देश की रक्षा के लिय दें। यदि आज दस लाख तोले सोना भी हम को मन्दिरों और रजवाड़ों से मिल सकेगा तो मुझ विश्वास है कि हमारे यहां का आर्थिक स्तर बहुत ऊंचा हो जायगा। साथ ही जो सोने की कमी आज हमारे यहां दिखाई देती है उस को हम बहुत हद तक पूरा कर सकेंगे। उन से मेरा अनुरोध है कि एसे परीक्षा के अवसर इतिहास में सदियोंमें एक आध बार ही आते हैं। क्यों न आज वे लोग भी अपने रुपयों में से अपनी प्रीवी पर्सेज में से कुछ दें, क्यों न देश के पुजारी और धर्मवीर लोग अपने सोने में से देश के लिय कुछ दें? आज भी देश में सच्चे देशभक्तों की कमी नहीं है, मुझे विश्वास है कि यदि सारे देश के लोग इस तरह से एकत्रित हो कर इस मुकाबले पर डट जायें तो शीघ्र ही विजय हमारी होगी। इस में कोई सन्देह नहीं है।

श्री रणंजय सिंह (मुसाफिरखाना) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं सब से पहले आप को धन्यवाद देता हूं कि आप ने मुझे बोलने का समय दिया।

मैं तो आज से नहीं, बहुत पहले से इस बात का मानने वाला हूं कि "वीरभोग्या वसुंधरा"। संसारम वीरों का ही आदर होता है। "देवोपि दुर्बल घातक" : इस प्रकार हमारे देश में भी हमारे उठने को आवश्यकता थी, जगने की आवश्यकता थी। ब्रिटिश काल में भी १५ फरवरी, १९२९ को और वर्तमान समय में ३० मई, १९६२ के अपने भाषणों में मैंने इस बात की प्रार्थना की थी कि हमारे देश में ऐसा प्रबन्ध होना चाहिये जिस में कि हमारी शक्ति बढ़े। और हमारे देश में आधुनिक शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित सेना होनी चाहिये। वह जो सेना होगी वह अहिंसा को मानने वाली होगी

और संसार से हिंसा को दूर करेगी और अहिंसा की स्थापना करेगी, अशान्ति को दूर कर के शान्ति की स्थापना करेगी। इस प्रकार से मैं ने पहले भी निवेदन किया था और आज मुझे यह सुन कर सन्तोष हो रहा है कि सभी ओर से यह मांग की जा रही है। पहले कभी भी हमारे ऊपर ऐसा दायित्व नहीं आया था इसलिये हम अपनी सैनिक आवश्यकताओं को अनुभव नहीं कर रहे थे, लेकिन मैंने आज यहां देखा कि पहले जो बातें होती थीं उन में बड़ा परिवर्तन हो गया है, और मुझे इस बात का हर्ष है कि हमारा वीर भारत फिर से जाग उठा है और आज स्थान स्थान पर वीर भारत के बच्चे तैयार हो रहे हैं इस बात के लिये कि वे अपने देश की रक्षा करेंगे, भारत माता के मुकुट हिमालय की रक्षा करेंगे और जो भी आवश्यकता होगी उस में अपना सर्वस्व अर्पण करेंगे। जैसा यहां पर एक माननीय सदस्य ने कहा कि हिस्ट्री रिपीट्स इटसेल्फ, उसी प्रकार से हम देखते हैं कि महाभारत के समय भी यही हुआ था कि अर्जुन ने हथियार रख दिये थे। वह उस समय ममता और मोह में पड़ गया था क्योंकि हमारे देश की नीति "वसुधैव कुटम्बकम्" की थी। सब अपने हैं, सब को मिल जुल कर चलना है। मेल होने की नीति बड़ी अच्छी है किन्तु किसी दुर्दान्त लोगों से, जोकि अपने सिद्धान्त के विरुद्ध हों, बिल्कुल विपरीत हों, और जिस से ऐसी आशा न हो कि वे शान्ति की रक्षा करने के लिये तत्पार होंगे, पाला पड़े तब इस नीति से कैसे काम चलेगा ? इस सम्बन्ध में भारत में यह बात आई और उसी अर्जुन ने, जिस ने हथियार रख दिये थे, जो लड़ने में संकोच करता था, यह प्रतिज्ञा की :

"अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे, न दैन्यं न पलायनम्"

इसी प्रकार से हम भी तैयार हुए। मैं देखता हूं कि हमारे देश में जिस वीर रस का संचार किया जा रहा है अगर वह उत्तरोत्तर बढ़ता रहा सदैव और स्थायी रूप से हमारे देश में वीरता का संचार होता रहा और संगठन रहा तो हम अधिक से अधिक शान्ति की स्थापना कर सकें। चीन बहुत बड़ा देश है अगर उस हाथी ने भारत पर आक्रमण किया है तो भारत भी शेर है और उस हाथी को पछाड़ने के लिये यह बहुत शक्तिशाली है और वह दब नहीं सकता है। इसलिये हाथी और शेर की इस लड़ाई में जोकि चल रही है दुर्दान्त चीन को पता चल जायेगा कि उस ने किस को छेड़ा है।

जैसा यहां कई माननीय सदस्यों ने कहा है, यह मानी हुई बात है, और मैं भी इस बात को मानता हूं कि चीन वाले हम से ईर्षा-द्वेष रखते हैं। उन लोगों ने भारत को दबा लेना चाहा। उन्हों ने समझा कि भारत की जो नीति है उस से अनुचित लाभ उठा कर भारत को वे दबा लेंगे और पहले एशिया में और फिर संसार में अपना प्रभुत्व बढ़ा लेंगे। लेकिन अब उन्हों ने समझ लिया है कि भारत दबने वाला नहीं है। इसलिये मैं समझता हूं कि हमें बराबर तैयार रहना है। मुझे भी यदि गोली चलाने का अवसर मिले तो यह मेरे लिये परम सौभाग्य होगा। मैं जानता हूं कि इन चीनियों को निकाले बिना न तो संसार में शान्ति स्थापित होगी और न भारत में शान्ति होगी। मान लीजिये कि हमारे मार्ग में कठिनाइयां हैं तो हम उन कठिनाइयां को दूर करेंगे। मैं जानता हूं :

> रास्ता बहुत कठिन है तो भी हमें परमात्मा पर विश्वास रखते हुए बहादुरी से चलना है।

इस प्रकार से हमें करना है। हमारी भारत माता जो है उस की सेवा के लिये हम सब तत्पर हैं। यहां सब ओर से कहा गया कि हमारे यहां वीरता का संचार हो। रेडियो के कार्यक्रमों में भी वीरता का भाव हो। राष्ट्रीय गान हों। इसी प्रकार से उस पर जो बैंड बाजे बजें वे लड़ाई के बजें। आज देश में सैनिक शिक्षा का प्रचार किया जाये आज मैं यह नहीं कह सकता कि मैं कोई बहुत काम कर सकता हूं, लेकिन जैसा बीकानेर के महाराज ने कहा, मैं उस का पूरा समर्थन करता हूं और उसी के अनुसार हमें तैयार होना चाहिये और देश को तैयार रहना चाहिये। जिस से जो कुछ हो सके उस में उस

[श्री रणजय सिंह]

को संकोच नहीं करना चाहिये । जो कुछ मैं कर सकता हूं उस के लिये मैं तन, मन और धन से तैयार हूं । आप मुझ से हर एक सेवा ले सकते हैं । अगर आप को राइफलों की आवश्यकता हो, तो मेरे पास भी कुछ हैं, मैं आप को उन्हें अर्पित कर सकता हूं । देश की रक्षा के लिये, जैसा माननीय सदस्यों ने कहा अगर सैनिक शिक्षा की आवश्यकता है तो मुझे जो भी कार्य सौंपा जायेगा उस को करने के लिये मैं सहर्ष अवैतनिक रूप से तैयार हूं ।

इस के बाद मैं अधिक समय नहीं लेना चाहता । केवल अपने स्वर्गीय भाई श्री रणवीर सिंह की इन पंक्तियों में प्रार्थना करूंगा कि :

"हिमधर किरीटे जाह्नवी हर शुभ्र,
परिकर शुचिविन्ध्यालंकृते रत्नगर्भे ।
सलिलनिधि सुसेव्य धौतपादाब्जदिव्ये,
वसुमति सुरवन्द्ये मातृभूमे नमस्ते ।।"

श्री ह० च० सौय (सिंहभूमि) : अध्यक्ष महोदय, मुझे जो दो मिनट का समय दिया गया है उस का हिसाब रखा जाये ।

अध्यक्ष महोदय, जब हमारे बहादुर जवान चीनी हमलावरों का मुकाबला नेफा और लद्दाख क्षेत्र में कर रहे हैं और जब हम सारे देश में तन, मन और धन से टोटल मोबिलाइज़शन की तैयारी कर रहे हैं, उस वक्त भी हम यह मान रहे हैं कि हमारी वैदेशिक नीति और पंचशील की नीति दुरुस्त है । मगर यह भी बिल्कुल सही है कि वैदेशिक नीति क: उपयोगिता को हम ने बहुत ज्यादा सींचा । उस को ज्यादा से ज्यादा सींचने के कारण ही हम यह महसूस नहीं कर सके कि तिब्बत पर जो हमला हो रहा था उस से हम को क्या खतरा था । अक्साई चिन क्षेत्र में जो सड़क बन रही थी उस वक्त भी हम ने खतरा महसूस नहीं किया । पांच बरस गुजर गये, हम ने इस बीच में खतरा की गहराई को महसूस नहीं किया । चीनी हमलावरों ने हमें काफी समय दिया । तो मैं अब यह सवाल उठाना चाहता हूं कि ये जो महंगी भूलें हम से हो गयी हैं, हम इन से कौन-सा सबक सीखें ।

जहां हम चीनी हमलावरों को निकाल बाहर करने में लगे हुए हैं वहां हम को अपने उस सिवाने पर जो पाकिस्तान के साथ लगा हुआ है नजर रखनी चाहिये, यह न हो कि हम उस को बिल्कुल भूल ज'यें । इस सारी तैयारी के हिसाब में उस का भी हिसाब रखा जाना चाहिये और हम उस ओर भी काम करें ।

यह अच्छी बात है कि पाकिस्तान के प्रेसीडट अयूब साहब ने कल एक ऐसा वक्तव्य दिया जिस से लगता है कि वह हमारा साथ देंगे । लेकिन हम याद रखें कि पिछले १५ सालों में उन्हों ने जो भी हमारे साथ किया है वह दोस्ती का बरताव नहीं है हालांकि हिन्दुस्ताब के लोगों ने हमेशा उन की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया । इसलिये अगर उन्हों ने दो शब्द कह दिये तो हम को उस से खुश नहीं हो जाना चाहिये । उस सिवाने की भी हम को पूरी तैयारी करनी चाहिये ।

मैं इस सुझाव का स्वागत करता हूं कि हम को अपनी उत्तरी इलाके में लड़ने के लिये खास तौर की फौजें तैयार करनी चाहियें । हम को एक हिमालयन आर्मी और हिमालयन फोर्स तैयार करनी चाहिये । मैं आप के जरिये से सदन को बतला देना चाहता हूं कि हमारे देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जोकि हिमालयन क्षेत्र में काम कर सकते हैं । कल एक माननीय सदस्य ने बतलाया कि सारे उत्तर प्रदेश में ऐसे लोग काफी हैं । हमारे छोटा नागपुर के इलाके में इस प्रकार के आदि-

वासी और अन्य पहाड़ी लोग काफी हैं जो पहाड़ी क्षेत्रों में बहादुरी से लड़ सकते हैं बशर्तेकि उन को फौजो ट्रेनिंग दी जाये । उन में से अभी भी बिहार रेजिमेंट में हैं । इस रेजिमेंट में यह निहायत जरूरी है, उन के अपने ही अफ़सर भी हों ।

एक और चीज मैं आप के जरिये सदन को बतला देना चाहता हूं । यह अच्छी बात है कि हम लोगों ने कांगो में अपनी फौजें भेजी हैं और गाजा में भी अपनी कुछ फौजें भेज रखी हैं । इस प्रकार जो हम ने संयुक्त राष्ट्र संघ के काम में भाग लिया यह एक अच्छी बात है, लेकिन जब हमारा अपना इतना जबरदस्त युद्ध चल रहा है तो ऐसे समय में हम को उन फौजों को अविलम्ब बुला लेना चाहिये और अपने युद्ध के क्षेत्र में उन को लगा देना चाहिये ।

एक और चीज । जहां हम इतनी सारी तैयारी कर रहे हैं, हम को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि चीजों के मूल्य न बढ़ने पावें । कल एक माननीय सदस्य ने छत्तीस गढ़ की बात कही । मैं बतलाना चाहता हूं बिहार और उड़ीसा के जिन क्षेत्रों में हमारे कारखानों में आवश्यक सामान बन रहा है वहां अन्न के दाम बेतरह बढ़ गये हैं । इस पर हमें रोक लगानी चाहिये । उस इलाके में हमारे जो कारखाने हैं उन में हम फौजी सामान बनाना चाहते हैं । इसलिये यह जरूरी है कि जो लोग वहां काम करें उन पर बेहद महंगाई का असर न पड़े ऐसा प्रयास हम को अविलम्ब करना चाहिये ।

एक और चीज है । उस का मैं स्वागत करता हूं । कल हमारे गृह मंत्री जी ने राज्य सभा में कहा था कि हमारा जो इनफारमेशन और ब्राडकास्टिंग विभाग है उस का इस लड़ाई के जमाने में एक खास रिआरिएंटेशन किया जा रहा है । यह बड़ी अच्छी बात है । जैसाकि प्रधान मंत्री जी ने कहा, और जैसाकि हम जानते हैं, यह युद्ध एक दो बरस चलने वाला नहीं है, हो सकता है कि यह कई बरसों तक चले । इ लिये इस लम्बे अरसे के लिये हमारी युद्ध की जो तैयारी हो वह तेजी से चलनी चाहिये और जनता में जो जोश और उत्साह है चीनी हमलावरों को निकाल बाहर करने का वह कायम रहे इस बात पर भी हमें विशेष ध्यान रखना होगा । इसलिये जो हमारी इनफारमेशन और ब्राडकास्टिंग की मैशीनरी है उस को नये ढांचे में ढाला जाना चाहिये ।

इस के अलावा हमारे केन्द्र में और राज्यों के प्रशासनों में जो भी पबलिक रिलेशन्स के विभाग हैं उन को भी नये साचे में ढाला जाये ।

मैं एक और चीज का समर्थद करता हूं जोकि यहां कही गई है । इस इमरजेंसी के समय में वे विभाग जो अनावश्यक समझे जा सकते हैं, जैसे सांस्कृतिक विभाग है, और इस तरह के जो और विभाग हैं उन को समाप्त कर देना चाहिये । कम्युनिटी डेवलपमेंट विभाग से भी हम को जितना लाभ होना चाहिये था नहीं हो सका है । इसलिये यह बिल्कुल सही होगा अगर कम्युनिटी डेवलपमेंट विभाग की जो जीपें हैं उन को फौजी काम में लगा दिया जाय और इस विभाग में जो सोशल आरगेनाइजर आदि लोग बेकार पड़े हैं और कोई विशेष काम नहीं कर रहे हैं उन को हम युद्ध के काम में इस्तैमाल करें ।

एक और चीज है, वह यह कि मिलिटरी प्रिपेरेशन के लिये हमारे जितने भी कारखाने हैं जिन में इंजीनियरिंग का सामान बनता है उन को हम फौज के काम में लगा दें । यह बहुत जरूरी है ।

†**श्री अ० ना० विद्यालंकार** (होशियारपुर): यह बहुत जरुरी है कि इस समय ऐसी कोई बात न कही जाए जिससे लोगों के विचारों पर प्रभाव पड़े । इस संबंध में विद्यालयों

---

†मल अंग्रेजी में

[श्री अ० ना० विद्यालंकार]

पर विशेष उत्तरदायित्व है। हमारे नेताओं की आलोचना की जाती है। सरकार की आलोचना की जाती है यह सब बन्द होना चाहिए।

बहुत से लोगों ने हमारी शांति और तटस्थता की नीतियों को गलत समझा है। हमारी शांति की बातों से हमारी कमजोरी जाहिर नहीं होती है। यदि दूसरा पक्ष बातचीत से रास्ते पर नहीं आयेगा तो हम युद्ध के लिए भी तैयार हैं। यह हमारे शास्त्रों की शिक्षा है।

पहाड़ी क्षेत्रों के विकास पर अधिक ध्यान देना चाहिये ताकि वहां आने वाले विदेशी लोग उनकी गरीबी का लाभ न उठा सकें।

हमें जीवन के प्रत्येक काम में आत्म संयम से काम लेना चाहिए। हमें अफवाहों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

जो हमारे फौजी सीमा पर लड़ रहे हैं हम उनका आदर करते हैं। जो सिपाही कारखानों और खेतों में लड़ रहे हैं उनका आदर भी करना चाहिए।

जैसाकि पंजाब ने किया है वैसे ही अन्य राज्यों में भी सरकारों का मोर्चे पर लड़ने वाले सैनिकों के परिवारों से सम्पर्क रखना चाहिए और उनकी कठिनाईयां दूर करने के लिए कार्यवाही करनी चाहिये।

श्री गहमरी (गाजीपुर): डिप्टी स्पीकर साहब, सर्वप्रथम में भारतीय सेना के उन जवानों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जोकि शत्रु का मुकाबला करते हुए वीर-गति को प्राप्त हुए हैं। इसके बाद में माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रस्तावों का हृदय से समर्थन करता हूं।

मेरे क्षेत्र में चीनी हमले के बाद जो प्रतिक्रिया हुई है, मैं उसको इस सदन के सामने रखना चाहता हूं। मैं गहमर गांव का रहने वाला हूं, जो देश का सबसे बड़ा गांव है। उसकी बीस हजार की आबादी है और हमारे लगभग दो हजार जवान फ्रंट पर हैं। मेरा लड़का, मेरा भाई, मेरा चचेरा भाई और भतीजा भी फ्रंट पर हैं। गांव में कोई ऐसा परिवार नहीं है, जिसके दो तीन लड़के फ्रंट पर नहीं हैं। हिन्दुस्तान में कोई ऐसा गांव नहीं है—पंजाब को लेकर मैं कहता हूं—जिसमें इतने सैनिक हों। जो जवान छुट्टी पर गहमर आए हुए थे, तार आने पर वे सैकड़ों की तादाद में खुशी खुशी फ्रंट पर चले गए। मिलिटरी गाड़ियां गहमर स्टेशन से रोज पास करती थीं और कोई गाड़ी ऐसी नहीं जाती थी, जिसमें दो चार जवान गहमर के शरीक न हों। वे लोग जयजयकार करते हुए और हंसते हुए नीफा की तरफ जा रहे हैं।

एक जवान की हाल ही में शादी हुई है और डा० रामसुभग सिंह के गांव की तरफ की वह लड़की है। वह गौने में आई हुई थी। बक्सर स्टेशन पर उसको अपने शौहर से मुलाकात हो गई। पल्टन वालों को सिविलयन लोगों से बात करने की इजाजत नहीं होती है। लेकिन मुलाकात होने पर उस लड़की ने अपने पुरुष को टीका लगाया और कहा कि दुश्मन को पीठ न दिखाना।

हमारे गांव में एक मीटिंग हुई और हजारों की तादाद में मर्द-औरत जमा हुए। सब लोगों ने यह संकल्प किया, यह प्रस्ताव पास किया, कि अगर किसी का बेटा मरे, किसी औरत का पुरुष मरे, तो गांव के लोगों और घर वालों को आंसू नहीं बहाने हैं, क्योंकि इससे दुश्मन को बल मिलेगा। यह दृढ़ निश्चय वहां पर किया गया।

इस सदन के कम्युनिस्ट सदस्य, श्री सरजू पाण्डेय, जानते हैं कि हमारे अगल-बगल में राजपूत पठानों के गांव हैं। हर गांव से सौ, दो सौ पठान रोज भरती होने आते हैं और कहते हैं कि बिना तन्ख्वाह के हम देश के लिए लड़ेंगे।

हमारे दोस्तों ने फौजियों की तनख्वाह बढ़ाने का सुझाव दिया है, पेंशन बढ़ाने का सुझाव दिया है। मैं फौजी गांव का रहने वाला हूं। मैं सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमारे यहां के सिपाही पेंशन बढ़ाने के आज हक में नहीं है, वे नहीं चाहते हैं कि इसको बढ़ाया जाए। आज हमको तनख्वाह न दी जाए, तब भी हम लड़ने को तैयार हैं। हमारे बूढ़े, हमारे बुजुर्ग जो १९१४ और १९४० में रिटायर हुए हैं, जो फौज में जा चुके हैं, वे कहते हैं कि गहमरी, क्या बात करते हो, दुनिया में कोई सिपाही नहीं है जो हिन्दुस्तानी सिपाहियों का मुकाबला कर सके, उनके मुकाबले में खड़ा हो सके। अगर कोई खड़ा हो सकता है तो जापानी और जर्मन सिपाही ही खड़ा हो सकता है। सब देशों के सिपाहियों का मुकाबला हमारे इलाके के सिपाही कर चुके हैं। फ्रांस में सैंकड़ों आदमियों की कब्र बन चुकी है, हमारे गांव के लोगों की कब्र मैसोप्टोमिया में बन चुकी है। हमारा गांव बहादुर आज का है हीं, अंग्रेजी राज का बहादुर चला आता है। जब १८५७ में बगावत हुई थी, उस वक्त जितने सूबेदार थे, वे सब बागी हो गए थे। वहां पर कितने पलटनी आदमी थे, वे १९४२ में जो आन्दोलन छिड़ा था, उसमें शरीक हुए थे। वे भी गुलामी करते थे लेकिन देश के प्रति जो उनकी भावना थी, वह मैं आपको बताता हूं, उसका एक नमूना बताता हूं। बर्मा बटालियन फोर्स के नायक कमांडेंट श्री नारायण सिंह थे। उनके मकान को डिनामाइट से १९४२ में उड़ाया गया। सन् १८५७ में गांव तोपों से बरबाद कर दिया गया। यह उस गांव की हिस्ट्री है।

जो उत्साह और जो उमंग मैंने अपने हल्के इलाके में देखी, उसको देखकर मैं चकित रह गया। सन १९२० से मैं कांग्रेस में हूं। मैंने देश में इतनी एकता कभी नहीं देखी है। हिन्दू, मुसलमान, हरिजन और यहां तक कि चमार सभी हमारे खित्ते में आज एक हैं। मैं आपको यह भी बतलाना चाहता हूं कि बक्सर में चौसा में जो १८५७ की लड़ाई हुई थी, उसमें एक चमार ने सैंकड़ों अंग्रेजों को मौत के घाट उतारा था। हमारे फौजियों का आज मौरेल बहुत ऊंचा है और इतना ऊंचा है कि कोई हिसाब ही नहीं है। मैं जब यहां आया तो यहां का नजारा देखकर मुझे कुछ तकलीफ हुई। बाहर के नजारे में और यहां के नजारे में मुझे फर्क मालूम पड़ा। यहां के बहस मुबाहिसे को सुन कर मुझे कष्ट पहुंचा। विरोधी पार्टियों के कुछ लोगों ने ऐसा व्यवहार किया जैसे उनका फर्स्ट टारजेट माओ त्से तुंग नहीं, चाऊ एन लाई नहीं, बल्कि उनका फर्स्ट टारजेट नेहरु है। मैं उन पार्टियों का नाम लेना नहीं चाहता। मैं तो यह समझ कर आया था कि आज देश के लोग यह सोचेंगे कि देश हर पार्टी से ऊंचा है, कोई पार्टी की बात आज नहीं करेगा, पार्टी की बात करना गुनाह समझा जाएगा, पार्टी देश से नीचे समझी जाएगी। इस प्रस्ताव का यहां पर समर्थन तो किया गया है लेकिन कुछ लोगों ने रिजर्वेशन के साथ किया है। मैं मुस्लिम लीग का आभारी हूं उसके लिए जो रुख उसने अपनाया है। इसमाईल साहब ने बहुत ही सोबर स्पीच की है।

[श्री गहमरी]

में उनका कायल हो गया हूं। स्वतंत्र पार्टी के कुछ लोगों ने काफी कुछ कहा है। कुछ ने नेहरुजी की लीडरशिप के बारे में कहा है। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि हमारे पास कोई आल्टरनेंटिव भी तो नहीं है। किसको लीडर बनायें? क्या लोहिया साहब को बनाकर काम चल सकता है? आज हमारे सामने कोई आल्टरनेटिव नहीं है। ऐसी अवस्था में तथा ऐसे वक्त में हमको सर्वसम्मति से इस संकट की घड़ी में उनको नेता मान कर उनके पीछे चलना है। आज दुनिया में उनसे अच्छा कोई दूरसरा प्रीमियर नहीं है। मैं कहता हूं कि हिन्दुस्तान नहीं बल्कि दुनिया में सबसे अच्छे प्रीमियर वही हैं। उनके पीछे हम चलें, यही मेरा सुझाव है।

†**श्री रामचन्द्र मलिक** (जयपुर): जब हम चीन से दोस्ती कर रहे थे, उसने हमारे ऊपर आक्रमण कर दिया था। शास्त्रों में लिखा है कि पापी का सदैव विनाश होता है। धर्म की सदा विजय होती है।

देश भर में सब प्रकार की सहायता पेश की जा रही है। हम सब को इस संकट काल में छोटी छोटी बातों को भूल जाना चाहिए और एक होकर चीनियों को मातृभमि से खदेड़ बाहर करना चाहिये।

डाक्टर, इंजिनीयर, टैक्नीकल आदमी, जो विदेशों में हैं उन्हें देश लौटना चाहिए और संकट काल में देश की सेवा करनी चाहिए। समाचार पत्रों, लेखकों और कवियों को देश के लोगों में उत्साह पैदा करना चाहिये।

भारत उन मित्र देशों का आभारी है जिन्होंने बिना हिचकिचाहट के देश की सहायता करनी चाही।

श्री योगेन्द्र झा (मधुबनी): उपाध्यक्ष महोदय, देश की अखंडता तथा स्वतन्त्रता की रक्षा में शहीद हुए सैनिकों को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

राष्ट्र पिता गांधी के नेतृत्व में भारत में विश्व साम्राज्यवाद की जड़ को हिला दिया तो पंडित नेहरु के नेतृत्व में भारत विश्व साम्यवाद की साम्राज्यवादी लिप्सा को भी मिटा देगा। हम साम्राज्यवाद के खिलाफ हैं, चाहे वह पूंजीवादी हो अथवा साम्यवादी, पश्चिमी हो या पूर्वी।

इस बहस के दौरान किसी सैनिक गुट में शरीक न होने की हमारी विदेश नीतिक चर्चा की गई है। स्वतन्त्र पार्टी तथा जनसंघ ने इस नीति का विरोध किया है। समझ में नहीं आता कि भारत किसी सैनिक गुट में क्यों शरीक हो? अपनी आजादी की रक्षा के लिये दूसरों से अस्त्र-शस्त्र लेकर लड़ना और सैनिक गुट में शरीक हो कर संसार में संहार की व्यूह रचना करना दोनों दो बातें हैं। जहां हम अपनी आजादी की रक्षा करना चाहते हैं वहां संसार में शांति भी चाहते हैं। सैनिक गुटबन्दी का आधार ही गलत है। सैनिक गुटबन्दी विश्व युद्ध यानी संसार के सर्वनाश की व्यापक तैयारी है। निस्सन्देह गांधी का भारत इस नीति के खिलाफ है। किन्तु क्या साम्यवादियों को नानअलाइनमेंट में आस्था है? नानअलाइनमेंट किस से? रुस तथा अमेरिका की सैनिक गुटबन्दी से। क्या साम्यवादी दल में यह नैतिक

†मूल अंग्रेजी में

हिम्मत है कि वह रुसी सैनिक गुटबन्दी की निन्दा करे? पूर्वी योरप के देशों में रुसी फौज की उपस्थिति का विरोध करे? हंगरी की क्रान्ति के क्रुर दमन का विरोध करे? तिब्बत पर चीनी हमले के विरोध की बात तो दूर रही दलाई लामा को भारत में शरण देने का विरोध किया इन साम्यवादियों ने। बहुत दिनों तक साम्यवादियों ने इस बात का प्रचार किया कि चीन ने हमला नहो किया होता, अगर हमने दलाई लामा को शरण न दी होती। क्या यह साम्यवादी दल की नानअलाइनमेंट की नीति है? सी० पी० आई० ने आज तक कभी विश्य साम्यवादी सम्मेलन के सामने यह सुझाव रक्खा न कि रुस अपनी सैनिक गुटबन्दी को तोड़ दे? विदेशों से सैनिक अड्डे हटा ले? नानअलाइनमेंट का तकाजा है कि हम अमेरिका के सैनिक अड्डे के खिलाफ हैं और रुसी अड्डे के खिलाफ भी, चाहे वह अड्डा पाकिस्तान में हो, टर्की में हो अथवा क्यूबा में। साम्यवादी दलने आज तक अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर जितने प्रस्ताव पास किये सभी रुसी नीति के आधार पर। यह बात अलग है कि कम्यूनिस्ट कम्यूनिस्ट दल को भी नानअलाइन्ड ही समझ बैठे हों। कम्युनिस्टों को मेरी एक ही सलाह है "परोपदेशे पाण्डित्यं" क्यों? एक हिंसक के मुंह से अहिंसा का उपदेश शोभा नहीं देता।

कम्यूनिस्टों की नजर में हमारे प्रधान मंत्री बराबर बदलते रहे हैं। यह तो प्रधान मंत्री ही कहेंगे कि साम्यवादियों की धारणा किस हद तक सच्ची है। रजनी पाम दत्त, भारतीय साम्यवादियों के गुरु, की एक किताब है **"ब्रिटेन्स क्राइसिस आफ एम्पायर।"** प्रथम तो उस ने भारत को स्वतन्त्र माना ही नहीं तथा प्रधान मंत्री को **निग्रो इम्पीरियलिस्ट, जनिअर पार्टनर आफ ऐंग्लोअमेरिकन इम्पीरियलिज्म, डार्लिंग आफ इम्पीरियलिज्म** आदि घिनोने शब्दों से विभूषित किया।

भारतीय साम्यवादियों का इतिहास देशद्रोह तथा अविश्वास का रहा है। आजादी की अन्तिम लड़ाई में उस पार्टी के लोगों ने खुफियागिरी की, देश भक्तों के घर जलवाये तथा राष्ट्रीय नेताओं को अपमानति किया।

आजादी के तुरन्त बाद पी० सी० जोशी के नेतृत्व में **"आल सपोर्ट टू नेहरू गवर्नमेंट"** कहा। फिर १९४८ में बी० टी० रणदिव के नेतृत्व में यह कहा कि भारत आजाद नहीं है। मुक्ति संग्राम छेड़ दिया। कत्ले आम किया। जब यह मुक्ति संग्राम विफल हुआ तो पुनः राजेश्वर राव के नेतृत्व में नारा दिया।क भारत में चीन की तरह की क्रान्ति होगी। आज उस की नीति सरकार का समर्थन करने की है। पता नहीं कल क्या नीति होगी। नीति बदलने में इन लोगों को ज्यादा समय नही लगता। एक नेता को डिनाउंस कर देंगे, नीत बदल लेंगे। कोई शर्म इस में उन को नहीं होगी। इतिहास से सबक ले कर अगर इस दल ने आज भी सही कदम उठाया, अपने कलंकित इतिहास को बदला, देशभक्त का परिचय दिया, तो फिर देखा जायेगा। हम उन के ऊपर विश्वास कर लेंगे। अभी तो देखना है।

चीन ने हमारे ऊपर हमला क्यों किया? साम्यवादी दल के मुख्य पत्र **न्यू एज** में श्री डांगे के वक्तव्य के आधार पर एक विश्लेषण छपा है। उस में कहा गया है कि चीन हमारी जमीन नहीं चाहता क्योंकि उसका अपना देश बहुत बड़ा है। धन नहीं चाहता। अगर धन चाहता तो हांगकांग नजदीक है, जहां अधिक धन है। साम्राज्य नहीं चाहता। अगर साम्राज्य चाहता तो और भी छोटे देश हैं। उस ने लिखा है कि चीन को हमारी नीति समझने में धोखा हो गया है, गलतफहमी हो गई है। क्या यह विश्लेषण साम्यवादी दल की देशभक्ति की निशानी है? देश भर में यह मांग हो रही है कि साम्यवादी दल चीन समर्थक अपने सदस्यों को पार्टी से निकाल दें। किन्तु साम्यवादी दल ने इन भारतीय चीनियों की गिरफ्तारी का विरोध किया है। गुस्सा

[श्री योगेन्द्र झा]

जाहिर किया है । उनको क्यों इतना मोह रणदिवे से है? रणदिवे लाइन के अनुसार भारत को आजाद होना अभी बाकी है । रणदिय ने जिस मुक्ति संग्राम का शुरूआत की थी उसकी पूर्णाहुति करने चीनी फौज आ रही है । चीन हमारी जमीन चाहता है, धन चाहता है । पूर्वी योरप के रूसी साम्राज्य की तरह वह चीनी साम्राज्य चाहता है ताकि एशिया में जनतन्त्र का नाश हो जाये ।

पाकिस्तान चीन तथा रूस से दोस्ती चाहता है । चीन की परवाह नहीं, किन्तु हमें सतर्क रहना है कि उस रूस पाकिस्तान का साथ नहीं दे । अगर रूस-चीन-पास्तिान का एक गुट हो तो हमारे लिये यह मौत का रास्ता है । हर कोशिश होनी चाहिये कि पाकिस्तान के साथ हमारा बैर खत्म हो । पाकिस्तान भी सोचे कि चीन ने मैकमोहन रेखा को यह कह कर अस्वीकार किया है कि मैकमोहन रेखा तो ब्रिटिश साम्राज्य की सृष्टि है । और पाकिस्तान किस की सृष्टि है, इसका उत्तर देने की जरूरत नहीं है ।

अन्त में दो शब्द नेतृत्व के प्रसंग में । स्वतन्त्र पार्टी के नेता ने प्रधान मंत्री को युद्धकालीन नेतृत्व के लिये अयोग्य बतलाया है । यह गैर जिम्मेदारी की बात है, जिस तरह स्वातन्त्र्य संग्राम में गांधी जी का विकल्प नहीं था, उसी तरह आज स्वातन्त्र्य रक्षा संग्राम में हमारे प्रधान मंत्री का विकल्प नहीं है । राष्ट्र पिता के नेतृत्व में हमने आजादी प्राप्त की । नेहरू जी के नेतृत्व में हम उसकी रक्षा का व्रत लें । आज उन का जन्म दिवस है । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह उनको दीर्घ जीवन और सुन्दर स्वास्थ्य दे ।

†**श्री ब्रजराज सिंह कोटा**(झालावाड़) : हमें इस समय नीतियों की आलोचना नहीं करनी चाहिये । हमें इस समय कम बात करनी चाहिये ।

अमेरिका, इंग्लैंड, कनेडा और फ्रांस जिन्होंने हमारी सहायता की है हम उनके कृतज्ञ हैं ।

समय है कि हम अपनी सेना को बढ़ाएं तथा विमान बल को भी बढ़ाएं ताकि हम अपने सीमान्त क्षत्रों की रक्षा कर सकें । अधिक ऊंचाई पर लड़ाई के लिए जिस विशेष सामग्री की आवश्यकता है वह भी लेनी चाहिए ।

एन० सी० सी०, ए० सी० सी०, प्रादेशिक सेना अदि को एक केन्द्रीय कमान के अन्तर्गत रखा जाय हमें उन्हें एक ही संगठित एकक के अन्तर्गत रखना चाहिये ।

राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् को स्थापित करना बहुत अच्छी बात है । यह परिषद् न केवल आपात के लिए तैयार ही करे, परन्तु हमारी प्रतिरक्षा नीति म ठोस अंशदान दें ।

हमें अपने सीमान्त मार्गों जैसे संचरण साधनों को सुदृढ़ बनाना चाहिये । सड़कों को असैनिक परिवहन से खाली रखा जाय ता कि हमारे युध की तैयारी में भी बाधा न पड़े ।

हमें अपनी प्रतिरक्षा प्रतिष्ठानों की सुरक्षा की निश्चित व्यवस्था करनी चाहिए । पुल, बांध, फैक्टरियों तथा सभी औद्योगिक संस्थापनाओं को हवाई हमले की सावधानी की अधीन ले लेना चाहिए ।

†मूल अंग्रेजी में

जब हम अपने दुश्मन से लड़ र हैं तो आवश्यक है कि हम जानें कि हम वहां लड़ रहे हैं। हमें अपनी सैनिक गुप्त चर्चा का सुधार करना चाहिए। चीनियों के सैनिक-प्रसारणों का "मौनिटिंग" किया जाय।

हमें अच्छाई की शक्तियों के साथ सहयोग करना चाहिए। स्वाधीनता की रक्षा के लिए कोई कीमत अधिक नहीं है।

†**श्री सुब्बारायन** (मदुरै) : चीनी अतिक्रमण की सारे देश में एक ही प्रतिक्रिया है। सारे देश ने समझ लिया है कि चीनी अतिक्रमण हमारे देश और उसकी स्वतन्त्रता के लिए एक खतरा है। फिर भी उस बुराई एक अच्छी बात हुई है इससे हमारी एकता और आक्रमण का सामना करने की भावना सुदृढ़ हो गई है। इसका देश के लाभ के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। इस जोश को देर तक कायम रखने के लिए सब कदम उठाए जाने चाहिएं।

चीनियों को बाहर खदेड़ने की ओर सभी कोशिश होनी चाहिए। गैर आवश्यक बातों को अभी छोड़ देना चाहिए।

सभी सरकारी विभागों की कठोर से कठोर मितव्ययता की जाए।

यह ज्ञात हो नहीं सकता कि युद्ध क्या स्थिति धारण कर ले। अतः हमें अधिक कुर्बानी करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

हमें स्वयं विधि तथा व्यवस्था बनाई रखनी चाहिए। पुलिस को अपने सामान्य कर्तव्यों से हटा कर प्रतिरक्षा की दूसरी पंक्ति के रूप में काम में लाया जाए।

तटस्थता की नीति से हमें सहायता मिली है और उससे हमारी प्रशंसा हुई है। इस में पुनरावृत्ति का कोई अवसर नहीं है।

वर्तमान स्थिति में हम सब को कुर्बानी करनी है। चाहे हम किसान हों, मजदूर हों, जमीनदार हों, उद्योगपति हों, व्यापारी हों, या डाक्टरों हों हमें सबको मेहनत करनी चाहिए। और अधिक से अधिक उत्पादन करना चाहिए।

†**श्री दामले** (मिराज) : मैं संकल्प का समर्थन करता हूं, परन्तु सबसे पहिले मैं अपनी श्रद्धा, आदर और सत्कार उन जवानों के प्रति व्यक्त करता हूं जो अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए फ्रंट पर लड़ रहे हैं। प्रधान मंत्री ने ठीक कहा है कि स्थिति गम्भीर है, चीनी आक्रमण के पैमाने तथा गम्भीरता के परिणामों का कम अनुमान करना ख़तरनाक होगा। हमें प्रयत्न करके शत्रु के इरादों को अपनी जनता तक प्रकट करने चाहिए।

चीनी आक्रमण का देश पर जो प्रभाव हुआ है वह हमारे सामने है। सारा राष्ट्र एक मन होकर श्री जवाहरलाल नेहरू चे पीछ खड़ा हो गया है। पूरी आशा है कि वह देश को सफलता की ओर ले ही जायेंगे।

मेरा निवेदन है कि एक सशक्त आन्तरिक मोर्चे की स्थापना कर दी जानी बहुत आवश्यक है जिसमें युद्ध प्रयत्नों में सहायता के लिए नपुण परामर्श की व्यवस्था हो। हमारी प्रचार व्यवस्था तो बहुत ही ढीली है, उसके सम्बन्ध मैं तो बहुत कुछ करना बाकी है। प्रचार व्यवस्था को बहुत ही सावधानी से ठीक किये जाने की जरूरत है।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री दामले]

इसके अतिरिक्त तटस्थता नीति के होते हुए भी जो राष्ट्र हमें इस आपातकालीन स्थिति में सहायता दे रहे हैं, उनका हम आभार मानते हैं और उनकी सराहना करते हैं । इसी संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि वर्तमान सामान्य खतरे को देखते हुए पाकिस्तान और नेपाल से कोई समझौता कर लेना चाहिए । आसाम और नेफा के लोग अपने साहस के स्तर को बहुत ऊंचा रख रहे हैं, परन्तु मेरा मत यह है कि यदि आसाम का राज्यपाल किसी सैनिक को बनाया जाये, तो अच्छा रहेगा । इससे लोगों का और सेना का नैतिक साहस बढ़ेगा ।

मैं इस बात पर भी बल देना चाहता हूं कि यह अच्छा होगा यदि संसद का एक सप्ताह का सत्र हो ताकि उन्हें पता चलता रहे कि क्या हो रहा है तथा वे अपने सुझाव दे सकें । इन शब्दों से मैं प्रधान मंत्री के संकल्प का समर्थन करता हूं ।

श्री उटीया (शहडोल) : उपाध्यक्ष महोदय, भारतीय भूमि पर चीनी आक्रमण के सम्बन्ध में हम जब भी विचार करते हैं तो हमारे सामने मूलभूत प्रश्न उठता है कि यह संघर्ष किस भू-भाग पर हो रहा है । हमें इतनी बड़ी असफलता क्यों देखनी पड़ती है, और भविष्य में हम क्या करें ताकि हमारे लोग बाग की तथा मुल्क की सुरक्षा कायम हो सके । यह अघोषित युद्ध उस भू-भाग पर हो रहा है जो जंगली और बर्फीला प्रदेश है, और प्रधान मंत्री के शब्दों में जहां घास पात भी नहीं उगती और जहां इन्सान का रहना भर है । साथ ही यह वह भूमि है जिसे चीनियों ने अब्रख, तेल, मछलियों और जंगली जड़ी बूटियों की खान बतलाया है । हम समझें या न समझें, हमारा देश आज भी सोने की चिड़िया है जिस का शिकार तुर्क, मंगोल, हूण आदि जातियों ने बार बार करने की कोशिश की । हम पर आक्रमण किये, मगर हमने अपना बचाव भरसक किया । आज परिस्थितियां कुछ बदली हुई हैं ।

आज चीन का इरादा क्या है ? यह बात एकदम स्पष्ट है । वह एशिया में भारत को सर्वोत्कृष्ट राष्ट्र देखना पसन्द नहीं करता । किन्तु भारत सर्वोत्कृष्ट एशिया में ही नहीं विश्व में रहेगा । जब सिथियन और अन्य लोगों के आतंक से आर्य जाति तंग आ गई तो उनकी बुद्धि को ठीक करने के लिये बौद्ध धर्म के अनुयाई वहां गये, और अपने अपूर्व नेतृत्व से उनका उद्धार किया । किन्तु आज फिर उनके मस्तिष्क में चोट चूहे खाने से रोग लग गया है, और वे हमारी जड़ी बूटियों का अपहरण करने पर तुल गये हैं । स्पष्ट है कि चीनी हमला चीनियों के लिये भले ही नई बात हो लेकिन भारत के लिये नहीं, चाहे भारत सरकार अब भी हजारों साल पुरानी मैत्री का ख्वाब क्यों न दखती हो ।

हाल में प्रधान मंत्री महोदय ने दिल्ली की दो लाख जनता की भीड़ में भाषण करते हुए कहा कि लड़ाई में हमें चीनियों से एक सबक मिलता है, हम भी उनकी नकल करेंगे, अपना रवैया बदल कर अपने को मजबूत करेंगे । मैं जानना चाहूंगा कि उन्होंने लंका यात्रा से पूर्व पालम पर अपनी शक्ति आजमाये बिना क्यों शत्रु को खदेड़ देने का ढिंढोरा पीट दिया ? और जब वे उलटे हमें खदेड़ने लगे तो ८ सितम्बर सिर पर सवार हो गया । अगर ८ सितम्बर की स्थिति मंजूर थी तो यह बला क्यों मोल ली ? हम तो चाहते हैं कि ८ सितम्बर नहीं बल्कि आठ शताब्दी ई० पू० तक चले जायें, लेकिन वे जाना नहीं चाहते । यह सही है कि उन्होंने चीन की दीवार बना कर अपनी सीमा की रक्षा की और हम विरोध पत्रों का दूसरा हिमालय खड़ा करने में लगे रहे । उन्होंने हमारी भूमि में अक्षय चीन सड़क का निर्माण किया है, कन्टोनमेंट और चौकियां कायम की हैं और हमें पता तक न चला । ये स्वयम् तो सोते रहे और देश से कहते रहे : जागो, जागो ।

देश जग गया पर सरकार नहीं जगी । आखिर हमें यह मात खानी पड़ रही है । हमने कई गलतियां कीं । भारत सरकार की प्रचार व प्रसार शक्ति का पूरा उपयोग न करके, केवल यही स्वीकार किया गया कि आज चीनियों ने यहां घुस पैठ की, कल पाकिस्तानियों ने वहां घुस पैठ की, और एक एक विरोध पत्र भेज दिया । अगर पाकिस्तानी हमारी सीमा से कर्नल भट्टाचार्य को खींच कर जबर्दस्ती गिरफ्तार कर सकते हैं और चीनी हमारी चौकी के निहत्थे जवानों को कैद करके यह साबित कर सकते हैं कि वे उनकी भूमि में गश्त करते हुए पकड़े गये तो क्या यह भारत की अकर्मण्यता नहीं ? जब वे हमारे जवानों को घसीटे ले जा रहे थे तो भारत सरकार यहां कुछ विरोधी सदस्यों को घसीट रही थी, और उसी घसीट में दुर्भाग्य से सुरक्षा मंत्री जी भी आ गये । फर्क इतना ही रहा कि वे जेल नहीं गये । हमारे मित्र जेल भी हो आये । हालांकि हमारे सुरक्षा मंत्री देश की दी हुई २० करोड़ रुपये की रकम सन् १९६०-६१ सैन्य शक्ति मजबूत करने में खर्च नहीं कर सके और निहत्थे जवानों को गलत कमांड में सीमा पर भेज कर सफाया करा दिया । खैर भारत माता के करोड़ों पुत्र और मिल जायेंगे । अब तो रिजर्व सैनिकों को बुलाया गया है । हम ने अपना पक्ष सम्भालने के खयाल से सीमा संघर्ष के विषय में संसार के सभी राष्ट्रों से सम्पर्क स्थापित करके परामर्श किया । दक्षिणी अफ्रीका और पुर्तगाल से इसलिये पत्र व्यवहार नहीं हुआ कि हमारे दौत्य सम्बन्ध उनसे नहीं हैं । जब गोआ जैसी छोटी पुलिस कार्रवाई में हमारे सम्बन्ध टूट गये, चाहे वह कार्रवाई वोटों पर असर डालने के ध्येय से ही क्यों न हुई हो, तो हमारी समझ में नहीं आता कि चीन से अब तक यह सम्बन्ध क्यों कायम हैं । पंडित नेहरू आज उस देश के उत्कृष्ट पद पर हैं जिस के नरेश चक्रवर्ती भरत और प्रधान मंत्री चाणक्य रह चुके हैं । पुस्तकालय में चाणक्य का अर्थशास्त्र और पंडित नेहरू की डिस्कवरी आफ इंडिया एक ही जगह दोनों ग्रन्थ रखे हैं । फर्क भाषा का है । हमारे वर्तमान हिन्दुस्तानी प्रधान मंत्री की भाषा अंग्रेजी है । अर्थशास्त्र भारतीय पढ़ते हैं । डिस्कवरी आफ इंडिया अंग्रेज पढ़ते हैं । इन्हीं पंडित नेहरू की वजह से काश्मीर का मामला टेढ़ी खीर बन कर रह गया है और जब तक पाक हिन्दुस्तान रहेंगे यह समस्या बनी रहेगी काश्मीर चाहे जिसके हाथ में हो । यह तो सरदार पटेल जैसे राजनीतिज्ञ की करामात थी कि ६०० रियासतों को एक करके जनतंत्र का बिगुल फूंका था ।

अगर हमने लंका के राजा के शत्रु भाई विभीषण का राजतिलक अपनी भूमि में कर दिया था तो क्या धर्मनिष्ठ दलाई लामा को विभीषण नहीं बनाया जा सकता । क्या अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त करके प्रधान मंत्री मानसरोवर और कैलाश का महत्व भूल गये ।

सोने का स्मगलिंग करना कानूनी अपराध था । आज संकट काल में उसे कानूनी रूप में वैध मान कर सुरक्षा कोष में लिया जा रहा है । हम तो कहेंगे कि एक तिथि नियत करके सारा सोना जब्त कर लिया जाये और उस तिथि के बाद सोना रखना अवैध करार किया जावे । ठीक है, देश का सहयोग तन, मन और धन से मिलना ही चाहिए ।

लेकिन फिर योजनाओं में कटौती करें और वह भी पैसा सुरक्षा कोष में भर कर इस्तैमाल करें यह कहां तक उचित है । सरकार को साधनों की कमी कभी नहीं रही । सरकार ने उसका उचित उपयोग नहीं किया । सुरक्षा मंत्री का इस्तैफा इस का सबूत है ।

अब क्या हम यह भरोसा करें कि पार्टी का भेदभाव छोड़ कर उन व्यक्तियों के सुझावों पर सरकार अमल करेगी जो राष्ट्र को दसियों साल से उचित राय देते आ रहे हैं । चाहे वे किसी पार्टी के हों उनकी राय से ही नये सुरक्षा मंत्री का चुनाव करना ज्यादा हितकर होगा ।

श्री कामले (लाटूर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस सदन में जो प्रस्ताव माननीय प्रधान मंत्री जी की ओर से रखा गया हैं उस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए मैं अपने विचारों को रखने का प्रयत्न करता हूं।

भारत की इस समय की परिस्थिति संकटावस्था होते हुए भी चैतन्यपूर्ण है। यह देश अपने विकास के हेतु कार्यरत है। आजादी के बाद लोकतंत्र प्रणाली के अनुसार जनता ने अपने प्रतिनिधियों द्वारा न केवल पार्लियामेंट या विधान सभाओं का शासन संभाला बल्कि जिला बोर्ड, तालुका, पंचायत और ग्राम पंचायतों को भी अपने हाथों में ले कर काम करना आरम्भ किया। प्रजातंत्र की जड़ें देश भर में फैल गयीं और देश अपने विकास में मग्न हो गया।

ऐसे समय इस लोकतंत्रीय भारत पर चीन ने सीमा विवाद उपस्थित कर योजनाबद्ध सशस्त्र हमला किया। देश चौकन्ना हो गया। सारी जनता क्रोधित हो उठी। एक ज्वाला सी फैल गयी। सीमा पर हमला क्या, यह तो हमारी आज़ादी पर आघात, ऐसे शब्द जब भारत के लोकप्रिय नेता पं० जवाहरलाल जी ने कहे, तब क्या पक्ष, क्या धर्म, और पंथ, क्या बूढे, जवान और बालक, क्या गरीब और क्या धनी, सबने अपने मतभेदों को भुला कर एक आवाज से कहा कि जब आजादी को खतरा है, तब हम अपना बलिदान दे कर भी इस खतरे को मिटायेंगे। यह देश की आज की अवस्था है।

उपाध्यक्ष महोदय, कुछ माननीय सदस्यों ने इस समय भारत की तटस्थ नीति की चर्चा करते हुए आलोचना की और नीति परिवर्तन की मांग की है। लेकिन उन्होंने कोई नया उपाय नहीं बताया। हमारी तटस्थ नीति अब तक कामयाब रही है, अब भी कामयाब है और भविष्य में भी कामयाब रहेगी। इस से हटने का कोई प्रश्न इस समय नहीं है न होने की जरूरत है।

कुछ माननीय सदस्यों ने चीनी आक्रमण की निन्दा करते हुए शासन के दोषों को बतलाने की चेष्टा की है। मैं उनसे विनम्रता से कहूंगा कि दोष निकालने का यह समय नहीं है, जब पैर में कांटा चुभता है तो उसको तुरन्त निकाल फेंका जाता है। इस पर चर्चा नहीं होती कि कांटा किस झाड़ का है, कहां पड़ा था, कैसे चुभा। कांटा निकालने के बाद जरूरत हो तो सोचा जाता है। हमारे सिर पर संकट है। हम पहले संकट को दूर करें और बाद में जब फुरसत हो तब चर्चा करेंगे, दोष भी निकालेंगे। माननीय सदस्य को कहीं किसी बात का खतरा महसूस हो तो वे सीधे प्रधान मंत्री के पास अपनी बात कह सकते हैं। यहां सदन में रक्षा विभाग के सम्बन्ध में रहस्य की जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न न करें। अगर लोकतंत्र के नाम पर हम अपने भेदों को प्रकट करेंगे तो शत्रु पक्ष उसका लाभ उठायेगा। शत्रु पक्ष की बहुत सी बातों का और हलचल का हमें आसानी से पता नहीं चलता। दोषों की चर्चा करके आपसी मतभेद को न आने दें। युद्ध के समय दो बातों का परहेज नितान्त आवश्यक होता है। एक है आपसी मतभेद और दूसरा अपने रहस्य का स्फोट। हमें जरूर लोकतंत्र प्रणाली के अनुसार चलना है किन्तु समय पर यथायोग्य अपने कदम को रख कर चलें।

उपाध्यक्ष महोदय, लोकतंत्रीय, तटस्थ नीति के शान्तिप्रिय भारत पर आक्रमण की खबर सुनते ही दुनिया के बहुसंख्यक देशों ने भारत के प्रति सहानुभूति प्रकट की। अमरीका और ब्रिटेन ने तो ऐसे संकट के समय में सक्रिय साथ दिया। बिना किसी शर्त के अपने हथियार भारत को रवाना कर दिये। इन देशों के प्रति भारत सदा कृतज्ञ रहेगा। अन्य देशों ने भी भारत के लिए धन और शस्त्र देने की घोषणा की है। उन के प्रेम को भी भारत नहीं भूल सकता।

अब भारत एक नये मोड़ पर खड़ा है। अब हमें सजग हो कर संकट का सामना करना है। लड़ाई सोमा पर ही है, सोमित है, ऐसा हम न समझें। सीमा पर लड़ने वाले सैनिक तो लड़ेंगे ही। वे केवल सैनिक ही नहीं हैं, वे तो मातृभूमि के रक्षक हैं और उसी भावना से संकट का मुकाबला कर रहे हैं। जिन्होंने इस संकट में अपनी प्राणाहुति दी, उनके प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पण करता हूं। सारा देश श्रद्धांजलि अर्पण करता है।

उपाध्यक्ष महोदय, एक तरफ तो सशस्त्र सेना की तैयारी करनी है, दूसरी तरफ देश में जीवनोपयोगी वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाना है ताकि हमें अन्य देशों के सामने इसके लिये हाथ न फैलाना पड़े। हमारी योजनाओं को हमें सफल बनाना होगा। खेती का उत्पादन बढ़ाने के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद तथा औजार की सप्लाई करनी पड़ेगी और किसान की अवस्था को ध्यान में रख कर आवश्यक सहायता देने का प्रबन्ध शीघ्र गति से हो ताकि आने वाले नये वर्ष में अन्न धान्य की वृद्धि सहज गति से हम कर सकें। इस समय शस्त्र के अतिरिक्त अन्य कोई भी वस्तु बाहर से मंगवाने की जरूरत न पड़े ऐसा यत्न होना चाहिए। शस्त्र भी अपने ही देश में बनने लगें तो ज्यादा अच्छा है चाहे इस काम में थोड़ा समय लग।

ऐसे समय में हमारी आर्थिक अवस्था सुदृढ़ करने की नितान्त आवश्यकता है। इस समय ऐसे खर्च जो न करने पर भी हमारा कोई खास नुकसान नहीं होता, बन्द कर देने चाहिए, जैसे कल्याण विभाग और सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि को बन्द कर देना चाहिए। इनके बारे में फुरसत के समय सोचा जाएगा। इन कार्यक्रमों को रोकने से लाखों रुपयों की बचत हो सकती है। माननीय सदस्य श्री ढेबर भाई के उस उस सुझाव का मैं अनुमोदन करता हूं जो उन्होंने डेवलपमेंट ब्लाक्स की चीजों के सम्बन्ध में दिया था। उनको सरकार अपने उपयोग में ले ताकि काम करने में सुविधा हो सके।

उपाध्यक्ष महोदय, हो सके तो ऐसे संकट के काल में केन्द्रीय मंत्रिमंडल तथा प्रान्तीय मंत्रिमंडलों के सदस्यों की संख्या कम कर दी जाए। ऐसा करने से भी खर्चे में बचत हो सकती है।

सिनेमा, सिगरेट, चाय आदि चैन की वस्तुओं पर टैक्स बढ़ा कर आमदनी में वृद्धि की जा सकती है। चाय के उत्पादन को बढ़ा कर देश की खपत को कम करके उसका बाहर निर्यात करें तो बहुत सी आमदनी बढ़ सकती है। जहां चालीस साल पहले खेती का टैक्स निर्धारित किया गया है उसको बढ़ाया जा सकता है और अन्य साधन भी धन संग्रह के सोचे जा सकते हैं।

अब मैं प्रचार तंत्र के विषय में कहूंगा। प्रति दिन रेडियो और अखबार से समाचार का प्रसारण होता है। लड़ाई की खबरें जब रेडियो पर आती हैं तो हजारों में लोगों की भीड़ लगी रहती है। पाकिस्तान रेडियो और पीकिंग रेडियो भारत के विरुद्ध प्रचार इस तरह से करते हैं कि लोगों में घबराहट पैदा हो जाए। ऐसे प्रचार पर देश में पाबन्दी लगाई जाए। सरकार और नेता ऐसे प्रचार तंत्र का निर्माण करें कि जिससे जनता में बेचैनी पैदा न हो। प्रमुख व्यक्तियों द्वारा रेडियो पर भाषण करावें। गलत अफवाहों को फैला कर समाज में जातीयता और पार्टी के नाम पर कहीं अशान्ति फैलाने का प्रयत्न हो तो उसको शीघ्र गति से रोकने का प्रबन्ध करना चाहिए। आन्तरिक शान्त वातावरण का बनाए रखना नितान्त आवश्यक है।

वस्तुओं के मूल्य में अकारण वृद्धि करने का प्रयास किसी ने कहीं भी किया हो तो उसका शीघ्र प्रबन्ध करे और यथायोग्य दंड दें ताकि कोई ऐसा साहस फिर से न करे।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय (सलेमपुर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज का दिन बहुत ही पवित्र है क्योंकि आज हमारे प्रधान मंत्री महोदय की वर्षगांठ है। आज सारा राष्ट्र उनका अभि-

[श्री विश्व नाथ पाण्डेय]

बादन करता है और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट कर रहा है, और आशा करता है कि वह दीर्घायु हों। उसी के साथ देश यह प्रार्थना करता है कि उनके नेतृत्व में हम विजयी हों और चीनियों को नेफा तथा लद्दाख से खदेड़ दें।

इसके पहले कि मैं कुछ कहूं मैं कहना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री महोदय ने जिस प्रस्ताव को सदन के सामने प्रस्तुत किया है वह राष्ट्र की वाणी है। राष्ट्र इस सदन में और इस सदन के बाहर एक स्वर से उस प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन करता है और मैं भी उसका समर्थन करता हूं।

मैं अपने उन सैनिकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने पुण्य भूमि मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना जीवन प्रदान किया और उन सिपाहियों के प्रति मैं श्रद्धा प्रकट कर रहा हूं जो नेफा और लद्दाख में मोर्चों पर लड़ रहे हैं।

आज विश्वासघाती चीन ने भारत पर हमला किया है, उस भारत पर हमला किया है जिसने उसे मैत्री का विश्वास दिलाया था, जिस भारत देश ने उसे पंचशील का पाठ पढ़ाया था, जिस भारत देश ने हजारों वर्ष से उन्हें सभ्यता और संस्कृति का पाठ पढ़ाया था, जिस भारत देश के वह शिष्य रहे। जिस भारत देश के महात्मा बुद्ध ने उन्हें अहिंसा और मानवता का पाठ पढ़ाया, उस भारत पर उन्होंने हमला किया और ऐसा करके उन्होंने एक अनैतिक कार्य किया है। लेकिन हमको इससे घबराना नहीं चाहिए। हिमालय जो भारत का प्रहरी रहा है उसका उन्होंने भेदन किया है।

लेकिन वे भूल गये कि उस हिमालय के बाद एक दूसरी पंक्ति है इस देश की ४४ करोड़ जनता की। उस जनता का मनोबल, त्याग और तपस्या ऐसी है, जो उनको पीछे धकेल देगी और उनको नेफ़ा और लद्दाख़ से पीछे हटना पड़ेगा। उनको झुकना पड़ेगा और उनका मुंह काला हो जायेगा। उनको विश्वास हो जायगा कि उन्होंने भारतवासियों के साथ जो अन्याय किया है, वह ग़लत है और उसको सहन नहीं किया जायगा।

हमारे देश के बहादुर जवान संसार के जिस किसी युद्ध-क्षेत्र में भी लड़े हैं, वहां उन्होंने बहादुरी का ख़िताब हासिल किया है और उन्होंने साबित कर दिया है कि अगर संसार में कोई सब से बलिष्ठ और बहादुर कौम है, तो वे भारतवासी हैं, इसमें शक नहीं है।

चाइना ने एक विस्तारवादी नीति का अनुसरण किया है, इसमें कोई शक नहीं है, लेकिन उसकी यह नीति हिन्दुस्तान पर नहीं चल सकती है, जब कि हिन्दुस्तान में जन-जागरण हो चुका है और उसमें चेतना आ गई है। चीनियों ने एक झटका दिया और हिन्दुस्तानी जाग उठे। उन्होंने हिन्दुस्तान पर एक ईंट फेंकी और हिन्दुस्तान जाग उठा। आज हिन्दुस्तान के नर-नारी बाल-वृद्ध और नौजवान सब जागरूक हैं और इसलिए चीन कभी भी हिन्दुस्तान को अपने कब्जे में नहीं ले सकता है। वह समय शीघ्र आयेगा, जब कि प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में हम उनको अपने देश की सीमा से निकाल कर बाहर करेंगे।

आप भूलें नहीं कि आज युद्ध के दो बड़े भारी अपराधी हैं चू-एन-लाई और माओ-त्सेतुंग। वे एक साम्यवादी देश के रहने वाले हैं, समाजवाद के प्रचारक हैं और फिर भी उन्होंने एक समाजवादी विचार-धारा को मानने वाले देश पर हमला किया है। उनकी वही गति होगी जो कि नात्सीवाद और फ़ासिस्टवाद की हुई थी। उनका हिटलर और मुसोलिनी जैसा अन्त होगा। मुझे विश्वास है कि वे अपनी भूल को स्वीकार करेंगे। इतिहास इस बात का साक्षी रहेगा।

कम्यूनिस्ट भाइयों के प्रति बहुत कुछ कहा गया है। यह पहली मर्तबा है, जब कि कम्यूनिस्ट भाइयों ने राष्ट्रीय चेतना के समय में सर्व-सम्मति से .....

कुछ माननीय सदस्य : सर्व-सम्मति से नहीं, बहुमत से ।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय : ..... बहुमत से इस आशय का प्रस्ताव पास किया है कि व भारतवर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लेंगे। मैं कहना चाहता हूं कि उनके इस प्रस्ताव का हम सब को आदर करना चाहिए, लेकिन मैं अपने कम्यनिस्ट भाइयों से यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि अपने प्रस्ताव में उन्होंने जो भावनाएं अंकित की हैं, उनको वे कार्यान्वित करें। अगर वे ऐसा करेंगे, तो उनकी वफ़ादारी साबित हो जायेगी, इसमें कोई शक नहीं है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जो भी आदमी, जो भी पार्टी—वे बाहर के हों या भीतर के—हम को समर्थन देती है, उसको कुबूल करना चाहिए ।

लेकिन इसके साथ ही हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि अपने देश में जहां कहीं भी लड़ाई हुई, पंचमांगियों ने उसमें हमको धोखा दिया और उनके कारण हमको हानि उठानी पड़ी। उस तरफ हम सब का ध्यान जाना चाहिए। लेकिन पंचमांगियों से भी बढ़ कर वे लोग हैं, जो कि मुनाफ़ाखोरी, रिश्वतखोरी और काला बाजार करते हैं । उनकी तरफ़ भी हम सब को और सरकार को ध्यान देना चा हए ।

हमारे प्रधान मंत्री ने पंचशील के सिद्धान्तों पर आधारित जो वदेशिक नीति बनाई है, राष्ट्र ने उसको स्वीकार किया है और उसका पालन किया जा रहा है। इस आपत्ति-काल में हमको पंचशील के तत्वों को नहीं छोड़ना है और उन पर दृढ़ रहना है। इस विचार-धारा पर दृढ़ रहने के कारण ही आज पश्चिमी राष्ट्र हमारी मदद कर रहे हैं। इस बात से हमें नहीं घबराना चाहिए कि रूस हमारी सहायता करता है या नहीं। हमें इस बात पर विश्वास होना चाहिए कि हमारे देश के रहने वाले, हमारे नौजवान, बूढ़े और बच्चे हमारे कारखानों और खेतों में काम करने वाले लोग सजग और तैयार हैं, चाहे रशा हमारी मदद करे या न करे ।

इसके साथ ही मैं यह कहना चाहता हूं कि दक्षिणी कोरिया से हमारे सम्बन्ध अच्छे हैं। वहां के लोग चाइना से लड़ चुके हैं। हमको उनका सहयोग प्राप्त करना चाहिए। इसके अलावा पड़ोसी राष्ट्रों, नेपाल और पाकिस्तान आदि, से हमारे सम्बन्ध उत्तम रहने चाहिए। हमें उनको बताना चाहिए कि जिस तरह से आज हमारे देश पर ख़तरा है, कल उन पर भी हो सकता है और इसलिए उनको भी हमारा साथ देना चाहिए ।

अब मैं एक दो सुझाव देना चाहता हूं ।

उपाध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य अब ख़त्म कर ।

श्री विश्वनाथ पाण्डेय : मैं अभी ख़त्म करता हूं। अभी मेरा टाइम है ।

उपाध्यक्ष महोदय : नहीं, श्री तुलशीदास जाधव ।

श्री तुलसी दास जाधव (नांदेड़) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि मुझे आपने आज बोलने का अवसर दिया है ।

इस प्रस्ताव के चार पांच भाग हैं। हमारी सेना के जो नौजवान शत्रु का मुकाबला करते हुए काम आए, मैं उनका अभिवादन करता हूं और उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हमारे जो

[श्री तुलसी दास जाधव]

नौजवान आज वहां पर लड़ रहे हैं, वे हमारी प्रशंसा के पात्र हैं । प्रधान मंत्री के ऐलान के बाद इस देश के सब लोगों ने चीन के आक्रमण का मुकाबला करने का जो दृढ़ निश्चय किया है और इसके लिये वे जो सहायता और सहयोग दे रहे हैं, उसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूं । जिन देशों ने इस संकट-काल में हमारी मदद की है और हमको हथियर वग़ैरह भेजे हैं, उनको भी मैं धन्यवाद देता हूं । जो मित्र विपत्ति के समय सहायता करता है, उसको ज्यादा धन्यवाद देना चाहिए । एक कहावत है :—

"जो दो बार देता है वह जल ही देता है । जो दो से अधिक बार देता है वह प्रेम और हृदय की भावना से देता है ।"

इसलिए जिन देशों ने हमारी मदद की है, उनको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं ।

जिन १११ देशों को हमारे प्रधान मंत्री ने सहायता और सहानुभूति प्राप्त करने के लिए ख़त लिखे, उनमें में ४० देशों ने उस ख़त का उत्तर दिया । उनको मैं धन्यवाद देता हूं । जिन देशों ने हमारे ख़त का उत्तर नहीं दिया है, वहां पर स्थित हमारे एम्बसेडर्ज़ का यह काम है कि वे उन देशों के अधिकारियों के पास जायें और उनको इस बारे में इत्तिला दें और हमारे ख़त का उत्तर देने की सलाह दें ।

चीन के हमले के बारे में मेरी तो यह राय है कि यह चीन की बड़ी भारी भूल है । मुझ से पहले बोलने वाले माननीय सदस्य ने अभी बताया है कि अगर कोई देश दूसरे देश पर हमला करता है, तो उसका नतीजा क्या होता है । उस का नतीजा वही होता है, जो कि नैपोलियन का और अभी अभी १९४५ में हिटलर का हुआ । आज चीन लेनिन, मार्क्स और एंजल्ज के तत्व-ज्ञान पर चलना चाहता है । नैपोलियन ने जब दूसरे देशों पर आक्रमण किया, तो उसके बारे में एंजल्ज की क्या राय थी, वह मैं आप के सामने रखना चाहता हूं। "नैपोलियन के विरुद्ध सामान्य युद्ध राष्ट्रीय भावनाओं की प्रतिक्रिया थी जिसे नैपोलियन ने रौंद डाला ।"
जब कोई दूसरे देशों पर हमला करता है, तो उन देशों में इस प्रकार का रीएक्शन पैदा होता है जो कि हमला करने वाले को खत्म कर देता है ।

ट्राटस्की ने जब "विक्टोरियस मार्च" का नारा लगाया, तो लेनिन ने उस का विरोध किया उस ने स्थायी क्रांति का नारा लगाया था । इस का लेनिन ने विरोध किया । वह वह था जो शान्तिप्रिय सह-अस्तित्व की बात कहता था । उसके विचार में जबरदस्ती क्रांति नहीं की जा सकती । इतना ही नहीं, और भी बहुत सी बातें हैं, जिन में मैं जाना नहीं चाहता हूं । आखिर में कहा गया है :—

इससे लेनिन की दूरदर्शिता का पता चलता है । उसका विचार था कि साम्यवाद के नाम पर हम कहीं स्थायी हितों के समर्थक ही न बन जायें। जब आप अपना उद्देश्य दूसरे देशों पर जबरदस्ती लादना चाहते हैं या लादने का प्रयत्न करते हैं। तो उसका रिएक्शन यहां तक होता है कि करने वाले को खत्म होना पड़ता है, यह लैनिन ने, मार्क्स ने और एंजल्ज ने बताया है ।

इतना होते हुए भी आज चीन ने हमारे ऊपर आक्रमण किया है । उसने ऐसा क्यों किया है, इसको आप देखें । आप देखें कि हमारा शुरू से ही क्या रुख रहा है और हम क्या कहते हैं और क्या करते रहे हैं । आप उस पत्र व्यवहार को देखें जो भारत और चीन के बीच हुआ है । उसको पढ़ने से मालूम होता है कि हमने सदा ही बड़ी मीठी भाषा का प्रयोग किया है, हमने

सदा ही बातचीत से इस समस्या को हल करने की कोशिश की है लेकिन चीनी पत्रों को पढ़ने से जाहिर होता है कि इक्वुअल कंट्रोल का जो उसने जिक्र किया है उसका साफ मतलब है कि चीन ने हमला किया है उसने जबरदस्ती हमारी भूमि पर कब्जा किया है और एक मित्र को पीछे से जम्बिया से मारने की कोशिश की है ।

हिन्दुस्तान ने चीन के लिये क्या कुछ नहीं किया । उसने यू० एन० ओ० में उसको सीट दिलाने का पूरा प्रयत्न किया है । उसको शुरू में ही मान्यता प्रदान की है । तिब्बत को मान्यता प्रदान की है । १९५४ में चाऊ-एन-लाई और माओ-त्से तुंग यहां आए थे और उनसे हमारी बातचीत हुई थी और तब उन्होंने कभी नहीं कहा कि हमारे जो मैप्स हैं, वे मैप्स उनको स्वीकार नहीं हैं और न ही पत्र-व्यवहार जो हुआ है उसमें उसने ऐसा कहा है । उसने मौका पा कर हम पर हमलए किया है जिस तत्वज्ञान पर वह चलना चाहता है, उस तत्व ज्ञान को भी इससे खतरा है, यह चीन को पता नहीं है, वह उसको नहीं समझता है । जिस तात्विक ज्ञान पर वह चलना चाहता है वह फलीभूत नहीं हो सकगा है । उसको सैटबैक मिलेगा, यह उसे याद रखना चाहिये ।

इटली के टौगलियटी जोकि पहले नम्बर के कम्युनिस्ट हैं और जो कम्युनिज्म के पुजारी हैं, उन्होंने कहा है कि दोनों को मिल कर काम करना चाहिये, युद्ध करना ठीक नहीं है । इसका मतलब यह है जि वह हमारी बात को ठीक समझते हैं, नव चीन बात को ठीक नहीं समझते हैं । इसका मतलब यह है कि चीन गल्ती पर है । कहने का तात्पर्य यह है कि इस बोर्डर के झगड़े को मिल बैठ कर, बातचीत से हल करना चाहिये, झगड़ा करना ठीक नहीं है ।

अन्त में मैं कुछ सजैशंज दे कर समाप्त करता हूं । पहला मेरा सजैशन यह है कि जो बोर्डर पर रहने वाले लोग हैं, जो ऐसे इलाके में रहने वाले लोग हैं जो खतरे वाला इलाका है, उनको हथियार दिये जाने चाहियें ।

दूसरी बात यह है कि सोने के बारे में श्री मुरारजी देसाई ने जो वक्तव्य निकाला है, उसका मैं अभिनन्दन करता हूं । फार्वड मार्किट को जो बन्द किया है वह सही किया है ।

तीसरी बात यह है कि पंजाब में मिनस्ट्री को जो रिड्यूस किया गया है वह सही दिशा में कदम उठाया गया है. . . .

कुछ माननीय सदस्य : कहां रिड्यूस किया है ?

श्री तुलसीदास जाधव : इस दिशा में जो वह सोच रहे हैं इसको मैं सही मानता हूं । मैं कहना चाहता हूं कि सैंटर में भी वह चीज हो जाय ।

मेरा यह भी सजैशन है कि पब्लिसिटी ज्यादा होनी चाहिये ।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि देहातों में जो लोग हैं, जो जवान लोग हैं, उनको भी ए० सी० सी० एन० सी० सी० जैसी संस्थाओं में लिया जाना चाहिये और उनको मिलिट्री ट्रेनिंग दी जानी चाहिये ।

महाराष्ट्र के लिये मैं कहना चाहता हूं कि हिमालय को सैयादरी की स्पोर्ट है । देश की रक्षा में महाराष्ट्रियन कभी पीछे नहीं रहेंगे । वे हमेशा इसके लिये तैयार हैं और देश-रक्षा के काम में किसी से पीछे नहीं हैं ।

†**श्री बाल गोविन्द वर्मा** (खेरी) : मैं अपने शहीदों को अपनी श्रद्धा के फूल भेंट करता हूं। हमें इन वीरों के परिवारों की देख भाल करनी चाहिये। जवानों को यह विचार नहीं आना चाहिये कि उनके बाद उनके परिवारों की कोई चिन्ता नहीं करेगा । चीन ने भारत जैसे शान्ति प्रिय देश पर आक्रमण किया है। मेरा मत तो यह है कि तिब्बत पर चीन का अधिकार मान कर हम ने स्वयं ही चीन को भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण दिया ह। अब आक्रांता को पूरी शान्ति से देश से बाहर निकालना है। इस कार्य को बड़ी जागरूकता से करना है। हमारा सामना एक ऐसे शत्रु से है जो कोई भी धूर्ततापूर्ण साधन अपना सकता है।

इन परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि हमारी संस्थाओं का संगठन सुचारू ढंग से हो और सेना के समस्त खंड मजबूत हों। विमान शक्ति की ओर विशष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिये। हमें कोमितांग सरकार को मित्र बनाने का प्रयत्न करना चाहिये जो चीन के लिय दूसरा मोर्चा शुरू कर दे। इसके अतिरिक्त प्रधान मंत्री जी को पर्यंक राजदूत नियुक्त करने चाहिये और विदेशों को निजी दूत भी भजने चाहिये जो मित्र देशों के प्रधानों से मिल कर उनको नवीनतम स्थिति से परिचित कराते रहें।

श्रीमती कमला चौधरी (हापुड़) : उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री ने इस सदन में जो महत्व पूर्ण प्रस्ताव उपस्थित किया है, मैं उसका हार्दिक स्वागत करती हूं और समर्थन करती हूं।

वास्तव में इस आपात्कालीन अधिवेशन में सब से महत्वपूर्ण प्रकरण यह प्रस्ताव है जिस का सारे देश की जनता ने हार्दिक स्वागत किया है। वास्तव में यह हमारे लिय सम्मानपूर्ण भी है, और भारतीय मानव के अनुकूल है क्योंकि चीनियों ने पंचशील के आदर्श को ठुकरा कर, उन सिद्धान्तों को भुला कर, हमारे ऊपर धोखे से आक्रमण किया और जो हमारे वीर मातृ भमि की रक्षा के लिये वहां बैठे थे उन का निर्दयता से रक्त बहाया। सचमुच जिस देश का इतिहास, जिस का साहित्य गौरवपूर्ण गाथाओं से भरा हुआ है वह इस आघात को बर्दाश्त नहीं कर सकता। चीन का यह आघात केवल हमारी सीमाओं पर ही आघात नहीं है, बल्कि भारत के जन जन के हृदय पर चीनियों ने यह आघात किया है और प्राण रहते हमारा देश उस का मुकाबला करेगा और हमारे देश की जनता ने इस का परिचय भी दिया है।

प्रधान मंत्री के संकेत मात्र पर हमारे भाईयों ने अपने धन, अपने स्वर्ण के खजाने खोल दिये हैं, हमारी बहनों ने अपने सोहाग चिन्ह मंगल सूत्र तक रक्षा कोष के लिये अर्पित किये हैं। यह एक वह चिन्ह है जिस को हम अपनी विजय का चिन्ह कह सकते हैं। मुझे पूर्ण आशा है जैसा कि प्रधान मंत्री जी ने भी कहा, अन्त में एक न एक दिन विजय हमारी होगी और सचमुच हम विजय प्राप्त करके रहेंगे

आज दुनिया के सामने यह तथ्य स्पष्ट हो गया, चीन उस पर धोखे का पर्दा नहीं डाल सकता सब को मालूम हो गया कि उस का यह दावा कि उसके द्वारा हस्तगत सीमायें हमारी न हो कर चीन की हैं, यह बिल्कुल असत्य है, यह झूठा है। हमारा साहित्य इस का सबल प्रमाण है कि जिस हिमालय की हम पूजा करते र हैं, जिस पर वह अधिकार जमाये बैठा है, वह बहुत काल से हमारी सीमायें रही हैं। उस हिमालय की गौरव गरिमा का गान हम ने गाया है, और "वह सन्तरी हमारा, वह पासबां हमारा", उस को हम भूल नहीं सकते चीन उसको ले ले यह असम्भव है।

†मूल अंग्रेजी में

मैं निवेदन करना चाहती हूं कुछ शब्दों में कि जैसा हम ने यहां पांच दिन तक देखा, जो वातावरण हमारे माननीय सदस्यों ने उपस्थित किया, उस से जब हम जनता के बीच में जाते हैं तो इस के विपरीत अधिक सहयोगपूर्ण हमें बड़ा सबल वातावरण प्रतीत होता है । आज जबकि हमारी मातृभूमि के ऊपर संकट है, जबकि आज हमारी उस आजादी पर, जिस को हम ने बड़ा त्याग और बलिदान कर के पन्द्रह वर्ष पूर्व हासिल किया, उस पर चीन द्वारा आक्रमण हुआ है, इस संकट के समय अगर हम यहां बैठ कर आपस में नुक्ताचीनी करें, सरकार की गलतियां और भूलें ढूंढते रहें, हम नेहरू जी की गलतियों को देखते रहें, तो यह हमारे लिये शोभनीय नहीं है । मैं बहुत अदब से कहना चाहती हूं कि यह वह समय है जबकि हमारी जनता ने साहस दिखलाया है तो हम भी सारी छोटी छोटी बातों को भूल कर, राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठ कर, जनताा को यह नारा दें कि हम सब को एक हो कर चीनियों का मुकाबला करना चाहिये और देश के संकट में अपनी आहुतियां डालनी चाहियें । मुझे खुशी है कि जिन पोर्टियों से हमारा मतभेद है, वे चाहे जहां भी रहें लेकिन इस यज्ञ में, इस स्वातंत्र्य युद्ध में, हमारे साथ रहेंगी । मैं इस का स्वागत करती हूं, लेकिन साथ ही निवेदन करना चाहती हूं कि इतिहास बहुत अच्छी तरह, बहुत बारीकी से देखेगा कि इस युद्ध में, इस स्वतंत्रता संग्राम में, किसकी आहुतियां सब से अधिक पड़ती हैं ।

मैं सदन का बहुत अधिक समय नहीं लूंगी, केवल दो चार बातें आप के सामने रखना चाहती हूं । हमारी सरकार को इस का ध्यान रखना है कि उस को कुछ वातावरण से लाभ उठाने के लिये कुछ ऐसे क्रान्तिकारी कदम उठाने की हमें जरूरत है जिस से देश में कुछ गम्भीरता उत्पन्न हो । कहीं ऐसा न हो कि आज देश ने जो उत्साह दिखाया है, वह केवल एक उफान बन कर रह जाय । इसलिये हमें अपने प्रचार साधनों की ओर ध्यान देना होगा । सरकार के पास पब्लिसिटी का सब से बड़ा जरिया रेडियो है । उस को थोड़ा बदलना चाहिये । मैं चाहती हूं कि अब हमें वहां से सिनेमा के गाने न सुनाई दें । रेडियो के द्वारा हमें वीर गाथायें सुनने को मिलें और हमारे देश के बच्चों के कानों में मारू बाजों का संगीत सुनाई दे । राष्ट्रीय गीत सुनाई दें जिस से हमारे ऊपर जो बड़ी भारी आपत्ति यह आई है उस में हमारा तन, मन और धन सब कुछ दे कर बड़ी से बड़ी कुर्बानी के लिये तैयार रहे ।

अन्त में मैं शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं ।

श्री विश्राम प्रसाद (लालगंज) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं बड़ी सावधानी से आज छः दिनों से यहां पर भाषण सुन रहा था । यहां पर बहुत अच्छे अच्छे सुझाव दिये गये । देश की जनता को धोखा दिया गया, देश कैसे अन्धकार में था, देश में तैयारी नहीं थी, यह समय अब इस आलोचना का नहीं है । इस समय अब इस की बहस नहीं है । अब यह देखना है कि हमें करना क्या है । एक मसला है :

"बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय"

हमें देश की आजादी को कायम रखने के लिये लड़ने की तैयारी करनी है । इस के लिये थोड़े समय में मैं यह कहूंगा कि हिन्दुस्तान के अन्दर तैयारी हो, युद्ध के हर तरह के आधुनिक औजार बनाये जायें । बाहर से मदद ली जाय और जितनी भी मिल सके, जिस कीमत पर मिल सके, उसे हम को लेना है । सिविल डिफेंस के लिये हमें यह देखना है कि हिन्दुस्तान में शान्ति रहे, अराजकता न फैले । प्रोडक्शन बढ़ाया जाय । प्राइस लाइन, जो कि बहुत जरूरी है, उस को कंट्रोल में रखना है । ब्लैक मार्केटिअर्स से देश को बचाना है और देश के अन्दर डिसिप्लिन कायम रखनी है । यह जो सिचुएशन

[श्री विश्राम प्रसाद]

हमारे सामने आ गई है उस में जरूरी है कि हमारे अन्दर दोस्त और दुश्मन की पहचान हो। असली दोस्त वही है जो मुसीबत में हमारे काम आये ।

कहावत है :

मतलब में जो काम आये वही सच्चा मित्र है ।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा होता है। नादान दोस्तों से मेरा मतलब पाकिस्तान, इंडोनेशिया, रूस आदि से है जिन से सतर्क रहने की जरूरत है ।

तीसरी चीज जिस की ओर मैं आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, वह है :

घर का भेदी लंका ढावे

इस प्रकार के घर के भेदियों से सावधान रहना चाहिये चाहे वे किसी पार्टी के हों ।

तटस्थता के बारे में मुझे यह कहना है कि हम को तटस्थता की नीति पर कायम रहते हुए भी बाहर से जितनी भी मदद मातृ भूमि की रक्षा के लिये मिल सकती है अवश्य लेनी चाहिये ।

साथ ही मैं प्रधान मंत्री जी से यह साफ साफ बताने के लिये प्रार्थना करूंगा कि यह ८ सितंबर की लाइन का क्या महत्व है । जब हम ने यह संकल्प किया है कि हम चीनियों से अपनी एक एक इंच भूमि ले कर चैन लेंगे और उन को अपनी धरती से खदेड़ देंगे, तो यह ८ सितम्बर के क्या मानी हैं ।

कैबीनेट के सम्बन्ध में मैं यह ध्यान दिलाना चाहूंगा कि कैबीनेट में और मंत्रालयों में जितनी कमेटियां आदि बनाई जायें उन के अन्दर फेवरिटिज्म न बरता जाय । यह संकट का समय है । सारी दोस्ती, दुश्मनी और डिफरेंसेज़ को भुला कर उन में ऐसे आदमी रखे जायें जिन की सेवायें नेशन के हित में हों । चापलूसी, हामी भरने वालों, गलत रास्ता बताने वालों और धोखा देने वालों का पूरा ध्यान रखा जाय । यह इम्तहान का समय है । अभी तक जो गलती हुई है उस को तो नेशन ने भुला दिया लेकिन आगे भी अगर इस तरह की गलती हुई तो शायद देश खतरे में पड़ जायगा ।

लीडरशिप के बारे में मुझे यह कहना है कि आज देश तन, मन और धन से सेक्रीफाइस के लिये तैयार है, उस को ऐसी लीडरशिप मिले जिस से कि देश के अन्दर जो यह भावना है वह मिट न जाय और देश का नुकसान न हो जाय ।

इनफार्मेशन और ब्राडकास्टिंग के बारे में मेरा सुझाव यह है कि रेडियो से बहादुरी के गीत सुनाये जायें, सिनेमा के गीत न सुनाये जायें । त्याग, बलिदान, भारत माता की बलिवेदी पर प्राणों की आहुति देने के लिये देश तैयार हो जाय ऐसे गाने सुनाये जायें ।

अखबारों के सम्पादकों से मेरी प्रार्थना है कि वे इस तरह की भावना न फैलावें कि जिस से जनता के ऊपर बुरा असर पड़े । मुझे पता चला है कि नौजवानों में कुछ इस तरह के अखबार जाते हैं जिन से उन पर बुरा असर पड़ता है । ऐसे अखबार उन के पास न जाने दिये जायें ।

यह भी सुनने में आया है कि उन जवानों के ऊपर, जोकि लड़ाई के मोर्चे पर लड़ रहे हैं उन की जमीन आदि के बारे में समन सर्व किये जाते हैं । मेरी प्रार्थना है कि इस प्रकार के मुकदमों वाले समन वहां पर न भेजे जायें । जवानों की जान माल और उन के बच्चों की रक्षा का पूरा ध्यान रखा जाय ।

खर्च की कमी के बारे में मेरा यह कहना है कि जो भी मेम्बर अपनी सरविस आफर कर सकें और मेरी प्रार्थना है कि इस सदन का हर एक मेम्बर अपनी एक एक महीने की तनखाह डिफेंस फंड में दे और जितने मिनिस्टर हैं वे एक हजार से जितना ज्यादा पाते हैं वे डिफेंस फंड में दें। और हर चीज में इकानमी होनी चाहिये, यह मेरी प्रार्थना है।

जब दूसरा महायुद्ध हुआ था तो यहां तरह तरह की प्रेक्टिसेज़ होती थीं, लाइट बन्द रखी जाती थी और खाइयां आदि खोदी जाती थीं। हम को भी इस तरह की चीजें करनी चाहियें क्योंकि पता नहीं कि लड़ाई कब तक चलेगी और कहां तक फैलेगी।

मैं एक दिन अखबार पढ़ रहा था तो मैं ने दक्षिण भारत के एक ज्योतिषी की भविष्यवाणी पढ़ी थी, उस में उस ने कहा है कि यह लड़ाई चार साल तक चल सकती है और यह हिन्दुस्तान तक ही सीमित न रह कर सारी दुनिया में फैल सकती है।

सेल्फ सफीशेंसी के बारे में मेरा यह कहना है कि हम हर मानी में अपने देश को सेल्फसफीशेंट बनायें, खास कर फूड प्रोडक्शन के बारे में हमें सेल्फसफीशेंट होना बहुत आवश्यक है। हमारे फूड मिनिस्टर कहते हैं कि हर महीने ५० हजार मन गेहूं बाहर से मंगायेंगे। मेरा सुझाव है कि इस को कम कर के हम को देश को सेल्फसफीशेंट बनाना चाहिये।

आखिर में मुझे यह कहना है कि रिटायर्ड मिलिटरी और रिट्रेंच्ड आफिसर्स को लड़ाई के कामों में लगाया जाय और यह भी प्रोपोजल है कि रिटायरमेंट की उम्र ५५ से बढ़ा कर ५८ की जाय, रिटायरमेन्ट के प्रश्न को फिलहाल स्थगित रखा जाय जब तक कि लड़ाई चल रही है।

आखिर में मैं उन जवानों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्हों ने लड़ते लड़ते भारत माता की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे दी है। सारा देश आज अपने आपसी भेद भाव भुला कर एक स्वर से इन को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। आज हमारे प्रधान मंत्री जी का जन्म दिन है। उस के लिये उन को बधाई देते हुए मैं प्रार्थना करता हूं कि वे चिरजीवी हो कर हमारा नेतृत्व करते रहें। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक चीनी राक्षसों को भारत भूमि से नहीं निकाल देंगे तब तक चैन से नहीं बैठेंगे।

श्री कुं० कृ० वर्मा (सुल्तानपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, आज हमारे देश पर जो संकट आया है वह इतना गम्भीर है कि हमें बड़ी सतर्कता के साथ कार्य करना है।

हमें इस बात का अफसोस है कि चीन जिस से हमारी सदियों की मित्रता थी उस ने हमारे साथ विश्वासघात किया है। लेकिन हम को इस बात की खुशी भी है कि सन १९४२ में जिस हमारे नेता ने यह ललकार दी थी कि "अंग्रेज़ो भारत छोड़ो" वह नेता आज हमारे बीच में मौजूद है और आज भी उस ने ललकारा है कि चीनियों को हम अपने देश से खदेड़ कर ही दम लेंगे। उस ने भी चीनियों को चुनौती दी है।

मैं समझता हूं कि जिस वक्त यह नारा लगाया गया था कि "अंग्रेज़ो भारत छोड़ो" उस समय, हम सभी लोग जानते हैं कि अंग्रेज़ों का राज्य इतना जबरदस्त था, इतना फैला हुआ था कि उस पर सूरज अस्त नहीं होता था। मैं नहीं समझता कि चीन उन से कहीं बढ़ कर के है, और हम ने उस वक्त में कामयाबी हासिल की थी तो कोई वजह नहीं है कि इस वक्त हमें कामयाबी क्यों न हासिल हो।

[श्री कुं० कृ० वर्मा]

इस वक्त जो भाषण इस सदन में हुए उनको मैं ने गौर से सुना और फिर आज भी कुछ टीका टिप्पणी हमारे नेता की नीति पर की गयी है । एक मसला बार बार उठाया जाता है कि तिब्बत का जो समझौता हुआ वह गलत हुआ, वह नहीं होना चाहिए था । यह बड़ी भारी भूल हुई । मैं समझता हूं कि किसी वक्त में भी विदेश में, विश्व में, क्या स्थिति है, अपने देश में क्या स्थिति है, उसको जब तक हम ध्यान में न रखें तब तक हम सही नतीजे पर नहीं आ सकते हैं । यह सभी लोगों को मालूम है कि सन् १९४७ में हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई और जिस वक्त में कि हम स्वतंत्र हुए उस समय से ही कुछ न कुछ झगड़े और बखेड़े चलते रहे । पाकिस्तान की तरफ से पश्चिमी सरहद पर जो कांड हुए उन से सभी लोग वाकिफ हैं । उन से हमें कितनी परेशानी हुई । हम पर कितना बोझा आया । रिफ्यूजीज का पुनर्वास हमको करना पड़ा । इसके अतिरिक्त जो हमारी देशी रियासतें थीं उनका भी विलीनीकरण हो रहा था और वह एक बड़ी समस्या थी जिसमें कि हम लगे हुए थे । हम यह भी जानते हैं कि उसी बीच पाकिस्तान ने काश्मीर पर हमला किया और हमें काश्मीर में अपनी बहुत सी फौजें भेजनी पड़ीं और उनसे लड़ना पड़ा । जब वहां किसी तरह से युद्ध समाप्त भी हुआ तब भी हम को बहुत सी फौजें वहां पर रखनी पड़ीं और काश्मीर के बारे में जो हमारा सिर दर्द था वह वहीं पर नहीं मिटा बल्कि उसमें और भी गुत्थियां चलती रहीं, यहां तक कि सन् १९५३ में जब शेख अबदुल्ला गिरफ्तार किए गए और उनको नजरबन्द किया गया तब जाकर हमको वहां का संगठन और उसे मजबूत करने का मौका मिला ।

इसके अलावा हम यह भी जानते हैं कि सन् १९४९ में चीन में पीपिल्स रिपब्लिक आफ चाइना स्थापित हुई । उस समय चीन और भारत दोनों ही स्वतंत्रता, एकता और शान्ति का मार्ग अपनाना चाहते थे और दोनों भारत और चीन अपनी पुरानी मित्रता को घनिष्ठ करने के मार्ग पर चले । ऐसी दशा में जब कि नेहरू जी ने नवम्बर १९५९ में ऐलान किया कि मैकमोहन लाइन हमारी उत्तरी सरहद है तो चीन की तरफ से कोई एतराज नहीं हुआ । जब हम ने यह देखा कि उन के नक्शों में भारत की कुछ भूमि दिखलाई गई है और हम लोगों ने इस पर ऐतराज़ किया, तो उस तरफ़ से यह जवाब मिला कि मौका पड़ने पर हम उन नक्शों को सुधार लेंगे, वे पुराने नक्शों के आधार पर बनाए गए हैं । उन्होंने हमारे नक्शों पर कभी ऐतराज़ नहीं किया ।

जब तिब्बत से हमारा व्यापार और आवागमन का समझौता हो रहा था, उस समय भी उन्होंने सीमा का कोई प्रश्न नहीं उठाया । इसी प्रकार जब १९५३ में हमारा तिब्बत से यह समझौता फ़ाइनल सा हुआ, तो उस समय २९ अप्रैल, १९५४ को उस समझौते में जो प्रस्तावना रखी गई थी, उस में पंचशील को स्वीकार किया गया था । मैं नहीं समझता कि उस समय कैसे इस बात पर शुबहा किया जा सकता था कि चीन की नीयत ख़राब है, वह हम से मैत्री नहीं रखना चाहता है और वह हम से धोखा करेगा ।

हमारे देश की स्थिति ऐसी थी कि हम उस समय कोई झगड़ा मोल नहीं ले सकते थे, अपने पड़ौसी देशों के हृदय में कोई शको-शुबहा नहीं पैदा करना चाहते थे । अगर हम ने उस समय कोई समझौता किया और इस प्रकार हम को इस बात का मौका मिल गया कि हम अपने देश की परिस्थिति को सम्भालें, तो कोई भूल नहीं की गई ।

आज नान-एलाइनमेंट की पालिसी पर बहुत ऐतराज़ किया जा रहा है । जो पार्टी यह बात कहती है कि हम को पश्चिमी राष्ट्रों के गुट में जाना चाहिए, मैं नहीं समझता कि वह किस तरह

से ऐसी बात कहती है, क्योंकि पश्चिमी राष्ट्र हम को सहायता दे रहे हैं और वे नहीं चाहते हैं कि हम उस गुट में शामिल हों। वे नान-एलाइनमेंट पालिसी की प्रशंसा करते हैं और उससे सहानुभूति रखते हैं। इस स्थिति में क्या यह कहना कठिन नहीं होगा कि मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त। मैं नहीं समझता कि नान-एलाइनमेंट पालिसी पर क्यों आक्षेप किया जा रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य अब ख़त्म करें। श्री टी० राम।

श्री तुला राम (सोनबरसा) : आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, इस संकट-कालीन अधिवेशन में बहुत से माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं कि हिन्दुस्तान को इस परिस्थिति में क्या करना चाहिए, हमारी नीति क्या होनी चाहिए, आदि। स्वराज्य के पहले और स्वराज्य के बाद भी हम हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर सुनते थे, "हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, आपस में हैं ये भाई भाई।" लेकिन छोटे छोटे सवाल पर जब हम लड़ते झगड़ते थे, आपस में उलझ जाते थ, तो मेरे जैसे कमजोर दिल वाले यह शंका करने लगते थे कि क्या ये शब्द कभी साकार होंगे, क्या ये लफ्ज़ कभी कारगर हो सकेंगे, क्या यह भावना, वह संगठन, कभी देखने को मिलेगा? लेकिन आज चीन के नापाक हमले ने उस नारे को साकार कर दिया है और आज हिन्दुस्तान में एकता और भाई-चारे की जो लहर आई है, उस को देख कर आश्चर्य और प्रसन्नता होती है। आज इस बात की ज़रूरत है कि देश में जो भावना पैदा हो गई है, उस को आगे भी कायम रखा जाये।

हिन्दुस्तान ने चीन के साथ क्या सलूक किया, क्या व्यवहार किया, यह दुनिया जानती है और हिन्दुस्तान के लोग जानते हैं। हिन्दुस्तान ने उस की गवर्नमेंट को रेकगनाइज़ किया, उस के साथ दोस्ताना सलूक किया और राष्ट्र संघ में उस की वकालत की—हर तरह से उस की मदद की। इस सलूक का चीन ने क्या बदला दिया, यह देख कर यह विचार आता है कि क्या उन लोगों में इन्सानियत है या नहीं। आज वे मोर्चे पर "हिन्दी चीनी भाई भाई" का नारा लगा कर हमारे जवानों पर गोली चलाते हैं। मैं कहता हूं कि उन में इन्सानियत नाम की कोई चीज़ नहीं है।

मैं कहना चाहता हूं कि जो देश सत्य और अहिंसा की बुनियाद पर एक साम्राज्यवादी हुकूमत से लोहा ले सकता है, क्या वह आजाद होने पर अपनी गर्दन पर डाले गए चीन के गन्दे, नापाक और फ़ौलादी पंजे को नहीं हटा सकता है? इस देश के लोग चीन के हमले का ऐसा मुंह-तोड़ जवाब देंगे कि उस को सदा के लिए सबक मिल जायगा कि दोस्त के साथ धोखेबाज़ी करने का क्या नतीजा होता है।

जब चीन ने तिब्बत को अपने कब्ज़े में कर लिया, तो मुझे उसी वक्त यह शक था, यह ख़ौफ़ था कि अपनी विस्तारवादी नीति के कारण वह कहीं सिक्किम, भूटान और नेपाल पर अपना दावा न करे। इस बारे में मुझे एक कहानी याद आती है। एक ज़ईफ़ आदमी कहीं जा रहा था, तो रास्ते में एक गुंडे ने उस को चपत मारी। वह ज़ईफ़ आदमी उस गुंडे का मुकाबला नहीं कर सकता था। उस ने पांच रुपए का एक नोट उस गुंडे के हाथ में दे दिया। वह गुंडा यह समझा कि चपत मारने से पांच रुपए मिलते हैं। इस के बाद उस ने एक पंजाबी नौजवान को एक चपत लगाई और उस को चपत लगाने का मज़ा मिल गया। उस को एक नहीं, हज़ारों चपतें मिल गईं और उस का दिवाला बोल गया। मैं समझता हूं कि सिक्किम, भूटान और नेपाल के भविष्य के लिए यह अच्छा है कि हिन्दुस्तान जैसे सद्भावना वाले और शान्तिप्रिय देश पर हमला कर के चीनियों को जूझना पड़ रहा है। इस प्रकार उन देशों की सिक्योरिटी हिन्दुस्तान के द्वारा सुरक्षित कर दी जायगी।

[श्री तुला राम]

मैं देश के नेताओं और ख़ास कर प्रधान मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि इस वक्त हिन्दुस्तान की जनता जात-पांत और धर्म के भेद-भाव को भुला कर एक सूत्र में बंध गई है । नापाक चीनियों को इस देश से जाना पड़ेगा, क्योंकि इस देश के पास एक रूहानी ताकत है, एक आत्मिक बल है । हमें किसी का कुछ छीनना नहीं चाहते और न ही हम किसी को दबाना ही चाहते हैं, लेकिन हम किसी से दबेंगे भी नहीं । मैं एलानिया तौर पर यह कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में जो ग़रीबी, भुखमरी और नाबराबरी है, इस को इसी दौरान में हम मिटा देंगे और हिन्दुस्तान को ऐसे सांचे में ढाल देंगे कि भविष्य में हिन्दुस्तान पर कभी कोई नापाक हमला न कर सके ।

हमारे जो देशभक्त जवान लद्दाख़ या नीफ़ा में, हमारी सीमा पर, शहीद हुए हैं, मैं आप के द्वारा उन के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । जो बहादुर सिपाही देश की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं—और प्रधान मंत्री के शब्दों में सिपाही हर एक क्षेत्र में हैं, वे कारखानों, खेतों और खलिहानों में काम कर रहे हैं—मैं उन को मुबारकबाद देता हूं और कहना चाहता हूं कि हम जोश में होश के साथ काम करें और दुश्मनों के पंजे में हमारी जो ज़मीन चली गई है, उस को शीघ्र से शीघ्र वापस लें ।

†**श्री बाकर अली मिर्जा** (वारंगल) : हमारे देश का इतिहास अत्यंत संकटकालीन समय से गुजर रहा है ।

[**अध्यक्ष महोदय** पीठासीन हुए]

यद्यपि हमें कुछ पराजयों का सामना करना पड़ा है तथापि हमें इससे हताश नहीं होना चाहिये । युद्ध का निश्चय अंतिम जीत या हार से होता है और हमें उसके लिये तैयार रहना चाहिये । प्रसन्नता की बात है कि इस संकटकाल में हम भाषा विवादों, साम्प्रदायिकता इत्यादि सभी बातों को ताक में रख कर संगठित हो कर स्थिति का मुकाबला करने को कटिबद्ध हो गये हैं ।

इससे पता चलता है कि देश के आंतरिक मोर्चे पर हमने विजय प्राप्त कर ली है । यह कोई छोटी बात नहीं है ।

वर्तमान संकट ने यह भी दिखा दिया है कि हमारी विदेश नीति और उद्देश्य ठीक है । भारत को पर्दे के पीछे के कई देशों से सहानुभति और समर्थन के संवाद मिले हैं, हमारी तैयारी न होने पर भी हमने आत्मविश्वास का उल्लेखनीय परिचय दिया है । यह भी हमारी तटस्थता की नीति के परिणामस्वरूप है ।

हमें युद्ध का उन्माद उत्पन्न नहीं करना चाहिये । हमारे विपरीत हमें नैतिक बल के निर्माण में सहायता करनी चाहिये । हम युद्ध नहीं चाहते हैं । हमारा उद्देश्य केवल अपने भू-भाग को खाली करवाना है ।

†**श्री प० रा० पटेल** (पाटन) : चीनी अतिक्रमण न केवल हमारी स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिये खतरा है वरन् एशिया के समस्त राष्ट्रों के लिये खतरा है । पाकिस्तान और नेपाल को अपना खतरा समझना चाहिये ।

---

†मूल अंग्रेज़ी में

भारत संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन का आभारी है । हमें आशा है वे पहिले से भी अधिक अच्छे उपकरण देते हैं ।

किसानों को वर्तमान संकट में बिना मूल्यों का विचार किये उत्पादन दुगुना करना चाहिये । चीन के साथ लड़ाई बहुत समय तक चलेगी । हमें बहुत कठिन समय का सामना करना है ।

प्रत्येक क्षेत्र में मितव्ययता वरती जानी चाहिये । संसद् और राज्य विधान मंडलों के सदस्यों को अपना आधा वेतन नकद लेना चाहिये और आधा डिफेंस बांडों के रूप में ।

†**श्री श० ना० चतुर्वेदी** (फीरोजाबाद) : चीन ने इतिहास में सब से बड़ी दगाबाजी की है । मेरे विचार से चीन की मित्रता तथा उसके हित के लिये किसी भी देश ने इतना प्रयत्न नहीं किया जितना कि भारत ने किया तथापि पांच वर्षों तक भारत के विरुद्ध झूठा प्रचार, जालसाजी और अन्त में खुले आम आक्रमण कर चीन ने हमारी आंखें खोल दीं । तब जाकर हमें चेत हुआ ।

चीन सरकार सत्ता के मद में चूर है । वह केवल बल प्रयोग से ही झुकते हैं । इसलिये हमें अपनी तैयारी करनी चाहिये । हमें विदेशों से मिलने वाली प्रत्येक सहायता को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करना चाहिये ।

हमारे पीछे हटने का कारण संभवतः यह रहा है कि हमारे सैनिक गुप्तचर अपना कार्य नहीं कर सके अथवा उनके द्वारा प्रेषित सूचना को ठीक से नहीं समझा गया । हमारी असफलताओं की विस्तृत जांच करके आगे जिम्मेदारी निश्चित की जानी चाहिये ।

पाकिस्तान से इस समय समझौता करना उचित नहीं होगा । हमें पाकिस्तान के बारे में वही गलती नहीं करनी चाहिये जो हम ने चीन के बारे में की थी । हमें अनुशासन रखना चाहिये तथा लोगों के भावुक जोश का लाभ उठाना चाहिये । हमें चाहिये कि हम एक लम्बे युद्ध के लिये अपनी शक्ति रक्षित रखें ।

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)**: इस संकल्प पर लोक सभा में १६५ सदस्य बोल चुके हैं यद्यपि उन में से अधिकांश सदस्यों ने विषय वस्तु से बाहर की बातें कही हैं और वे काफी ब्योरे पर चले गये हैं, तथापि इतने अधिक सदस्यों के इस चर्चा में भाग लेने, उनके द्वारा विभिन्न सुझाव रखे जाने, अथवा उनकी आलोचनाओं से यह स्पष्ट है कि उन सब ने बुनियादी तौर पर एक ही बात कही है और इससे हमारे देश की एक मात्र भावना व्यक्त होती है ।

मैंने सभा के सम्मुख एक लम्बा संकल्प प्रस्तुत किया है । संकल्प पर दिये गये भाषणों से यह स्पष्ट है कि सभा उसे स्वीकार कर लेगी । मुझे यह अनुभव हुआ है कि हमें इस संकल्प में एक छोटा पैरा जोड़ कर चीन की सरकार को उनकी इस कार्यवाही के लिए धन्यवाद भी देना चाहिए था, क्योंकि उसने हमारी आंखों की पट्टी खोल दी है—पिछले तीन सप्ताहों में देश की वास्तविक शक्ति, उसके दृढ़ एवं अटल निश्चय और एकता की जो झलक मिली है उससे ज्ञात होता है कि हमारा प्राचीन देश अब भी युवा और उत्साही है । सभा के भाषणों से सत-सत रूपों में भारत की एकता ही प्रस्फुटित हुई है ।

भारत की यह एकता हमारे लिए अत्यन्त सौभाग्य का विषय है, भारत की इस चेतना और जागरूकता को हम नहीं भूल सकते । इसका यह स्पष्ट मतलब है कि एक ऐसा देश जो संकटकाल

---

†मूल अंग्रेज़ी में

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

में इस प्रकार संगठित होकर खड़ा हो सकता है वह कभी पराजित नहीं हो सकता । मैं आशा करता हूं कि पूर्व और पश्चिम के बहुत से देश इसे स्वीकार करेंगे । हमें यह देख कर आश्चर्य हुआ है कि हमारे छोटे-मोटे मतभेद जिनको हम बहुत बड़ा समझते थे, अचानक भुला दिये गये हैं और हमारे सामने एक ही प्रश्न रह गया है कि संकट का मुकाबला किस तरह किया जाय ।

निस्संदेह हम ने कुछ गलतियां की हैं, हम इस आक्रमण का मुकाबला करने के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि हम ने शान्ति के मार्ग को अपनाया था । मेरा विश्वास है कि हमारे इसी लक्ष्य के फलस्वरूप ही हमारी भावनाओं में यह क्रांति आई है ।

हमारी असावधानी के विषय में बहुत कुछ कहा गया है, तथापि माननीय सदस्यों ने जो आरोप लगये हैं वे न केवल किसी मंत्री विशेष के लिये हैं अपितु भारतीय सेना के भी विरुद्ध हैं । मैं उनके आरोप के उत्तर में इतना ही कहना चाहता हूं कि हमारा मार्ग शान्ति का था ।

इसका यह मतलब नहीं कि हमने देश की रक्षा का ध्यान नहीं दिया, अपितु मेरा तात्पर्य है कि हम ने बिल्कुल दूसरे दृष्टिकोण से विचार किया । अब भी हम बहुत कुछ इसी दृष्टिकोण से सोचते हैं । अब भी हम बर्बरता का तरीका नहीं अख्तियार कर सकते हैं । हम ने बर्बरता को निन्दनीय माना है । बर्बरता अपनाने से हम आत्मघात के दोषी बनते हैं । मैं आशा करता हूं कि भारत जो बुनियादी तौर से एक शान्तिप्रियदेश है वह युद्ध के समय भी इस बात को याद रखेगा ।

सुदृढ़ बनने और पाशविक बनने में निश्चित अन्तर है । यहां उस उदाहरण का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं जिसने हमारे इतिहास को प्रतिष्ठा प्रदान की थी । वह उदाहरण उस काल से सम्बन्धित है जब गांधी जी हमारे स्वतंत्रता संग्राम का भाग्य नियंत्रण कर रहे थे । गांधी जी विनम्रता और शान्ति की प्रतिमूर्ति थे । कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि गांधी जी पाशविक थे । भारत या किसी भी देश ने कभी भी उस से अधिक शक्तिशाली व्यक्ति पैदा नहीं किया । उन में शक्ति और बलिदान का अत्यधिक मिश्रण था तब भी उन की वाणी में विनम्रता थी और हमारे विरोधियों और शत्रुओं के प्रति भी उनका मित्रतापूर्ण दृष्टिकोण था । इसी से उनके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ था । हम में से जिन को उन की सेवा करने का विशेषाधिकार मिला कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि वह उनकी अपेक्षा अधिक सुदृढ़ है । उस वस्तुतः महान् व्यक्ति की तुलना में हम तो क्षुद्र जीव हैं किन्तु उसके द्वारा सिखाई गई बातों में से कुछ को हम ने सीखा है । जहां तक हम ने उन्हें सीखा है वहां तक हम भी शक्तिशाली बने हैं किन्तु पाशविक नहीं बने । मैं शीत युद्ध और गरम युद्ध के इस पहलू को नहीं चाहता जिससे एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति घृणा करने लगता है और निम्न कोटि का समझने लगता है ।

हम में से कुछ लोगों को जो आज बूढ़े हैं प्रथम महायुद्ध की बात याद होगी कि जर्मनी के विरुद्ध कितना अधिक प्रचार किया गया था । मैं जर्मनों का पक्ष नहीं ले रहा—मैं तो समझता हूं कि प्रथम महायुद्ध में वे गलती पर थे और द्वितीय महायुद्ध में भी गलती पर थे—किन्तु हूनों के विरुद्ध इस प्रकार का प्रचार कि किसी भी व्यक्ति को उससे मुक्त न रखा जाये, बहुत दुखजनक है । मुझे इस बात में कोई सन्देह नहीं कि जर्मनी में पश्चिम राष्ट्रों के विरुद्ध भी इसी प्रकार प्रचार किया गया होगा ।

युद्ध भयानक होते हैं और उसमें लाखों लोग मर जाते हैं। किन्तु मरना तो हम सब को है और यदि किसी महान् उद्देश्य के लिए यह मृत्यु कुछ देर पहले हो जाती है तो उसका दुख नहीं होना चाहिये। हमें मनुष्य की तरह उसका सामना करना चाहिये। अच्छे उद्देश्य के लिए मृत्यु पर दुःख करने की आवश्यकता नहीं चाहे हमें अपने साथियों और मित्रों से जुदा होते हुए दुःख अवश्य होता। किन्तु पाश्विकता से तो मानव का ह्रास हो जाता है। मृत्यु से मानवता का ह्रास नहीं होता। पाश्विकता और घृणा और इन से पैदा होने वाली बातों से राष्ट्र में ह्रास पैदा होता है। अतः मैं आरम्भ में ही कह देना चाहता हूं कि मुझे आशा है कि हमारे देश में ऐसी भावना पैदा नहीं होगी और यदि यह पैदा हुई तो उसे दुरोत्साहित किया जायेगा। चीनी लोगों के विरुद्ध हमारे मन में कुछ नहीं। हम समझते हैं कि उनकी सरकार ने हमारे साथ दुर्व्यवहार किया है। उनकी सरकार द्वारा उन्हीं के देश में जो कुछ किया गया है हमें उसका भी दुःख है। हम उनकी सहायता नहीं कर सकते। किन्तु हमें किसी देश के लोगों और उनकी सरकार के भेद को समझना चाहिये और विशेषतः ऐसे देश के सम्बन्ध में जो आकार और इतिहास दोनों दृष्टियों से बड़ा है और सरकार ने लोगों के प्रति जो कुछ किया है उसके लिए वहां के लोगों से घृणा नहीं करनी चाहिये।

बहुत से सदस्य पीकिंग रेडियो को सुनते हैं। मैं ने तो कभी सुना नहीं। उन्होंने मुझे बताया है कि पीकिंग रेडियो लगातार भारतीय लोगों से अपील करता रहता है। वह भारतीय लोगों और भारत सरकार या संसद् में भेद रखता है। वह रेडियो प्रचार करता है कि यह सरकार प्रतिक्रियावादी है जो भारतीय लोगों को दबा रही है और उनसे उनकी इच्छा के विरुद्ध काम करवा रही है। मुझे खेद है कि वे लोग इतने भ्रम में हैं क्योंकि अंधा भी देख सकता है कि आज सभी भारतीय एक हैं। इसके लिए सूझदर्शिता की आवश्यकता नहीं है, किन्तु मैं सभा को बताना चाहता हूं कि वे देखें कि उन के प्रचार का कारण क्या है कि वे भारतीय लोगों और विभिन्न सरकारी अधिकरणों तथा दलों में भेद दिखा रहे हैं। इसका कुछ महत्व है। हमें चीनी लोगों और चीनी सरकार तथा चीन से सम्बन्धित हर बात को एक नहीं समझना चाहिये।

मैं नहीं कह सकता कि अब चीनी लोग क्या अनुमान करते हैं। यदि उन्हें अन्यथा सोचने का अवसर भी मिले तो भी उन के मनों पर एकतरफा प्रचार और एकतरफा समाचारों का ऐसा प्रभाव पड़ा हुआ है कि वे अन्यथा नहीं सोच सकते। हमें सदा सरकार के कार्य और लोगों के भीतर अन्तर समझना चाहिये। इसलिये मुझे दिल्ली या अन्य कुछ स्थानों पर गरीब चीनी दुकानदारों और रेस्तरां चलाने वालों पर आक्रमण का होना पसन्द नहीं आया। जैसेकि वही हमारे ऊपर आक्रमण के प्रतीक हैं। संभवतः कुछ लोगों ने ऐसा ही समझा किन्तु उन के लिये ऐसा सोचना गलत था। इस से हम में पाश्विकता पैदा होती है और हमें कलंक लगता है। मैं विशेष रूप से इस पहलू पर बल देना चाहता हूं क्योंकि इस से हमारी शक्ति दृढ़ नहीं होती बल्कि शक्ति का दुरुपयोग करने से हमारी स्नायवी शक्ति निर्बल हो जाती है।

आज का युद्ध प्राचीन युद्ध की अपेक्षा सर्वथा भिन्न है। नवीन युद्ध की बात कहते हुए मैं भारत के बारे में कह रहा हूं। मैं महायुद्धों और अन्य बातों की बात नहीं कह रहा। युद्ध में केवल साहस की आवश्यकता नहीं होती। जब व्यापक युद्ध होता है तो उस में हर मानव, पुरुष, स्त्री और संभवतः बच्चा भी युद्ध में सहायता देता है या उस में रुकावट पैदा करता है और राष्ट्र की सारी शक्ति स्नायवी और अन्य भी उस में लग जाती है और उसे संगठित तथा प्रयुक्त किया जाता है।

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

हम ने पहले और दूसरे महायुद्ध में देखा है जब बहुत शक्तिशाली और बहादुर कौमें पूरी तरह शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित हो कर लड़ी थीं और दोनों ओर के लाखों लोग मारे गये थे और आखिर एक कौम का हौसला बिल्कुल ही टूट गया था। शायद वह हौसला हार बैठने वाली कौम थोड़ी देर और लड़ती रहती तो दूसरी कौम विनष्ट हो जाती। पहले महायुद्ध के पश्चात् विंस्टन चर्चिल ने कहा था कि यह तो अवसर की बात है कि हम जीत गये हैं क्योंकि दोनों पक्षों ने लड़ाई जारी रखने का दृढ़ निश्चय किया हुआ था। वे युद्ध काल में प्रशिक्षित लोग थे और उन में शक्ति और दृढ़ निश्चय था। आखिर यह सारे राष्ट्र के हौसला हार बैठने की बात होती है। ऐसा हुआ कि जर्मन कुछ देर पहले ही हौसला हार बैठे। इसी प्रकार दूसरे महायुद्ध में आरम्भ में तो यही प्रतीत होता था कि जर्मनी जीतेगा। किन्तु, जीत दूसरे पक्ष की हुई। अतः हमें अनुभव करना चाहिये कि यह मसला केवल हथियारों का नहीं है बल्कि राष्ट्र की समस्त शक्ति का है। राष्ट्र का मन एक उद्देश्य की प्राप्ति के लिये दृढ़निश्चयी हो जाना चाहिये और चाहे कुछ भी हो जाये उसे उस पर दृढ़ रहना चाहिये और साधारण बातों, साधाराण घटनाओं तथा मामूली विवादों पर शक्ति व्यय अथवा विचलित नहीं होनी चाहिये।

मुझे आशा है कि हम राष्ट्र की शक्तियों का उपयोग करेंगे। इस सभा में दिये गये सुझावों और निरन्तर प्राप्त होने वाले सुझावों से लाभ उठायेंगे। किन्तु यदि हम गलती भी करें क्योंकि कोई भी व्यक्ति गलती कर सकता है सच तो यह है किसी एक गलती से एक हार हो जाने का कोई महत्व नहीं है बल्कि महत्व इस का है कि संकट का मुकाबला करने के लिये राष्ट्र की मानसिक शक्ति को संगठित रखा जाये।

वास्तव में तीन सप्ताह पूर्व अर्थात् २० अक्तूबर से पहले अधिकांश लोगों ने यह अनुभव नहीं किया था कि हमें किस तरह के खतरों का सामना करना पड़ेगा। वे समझते थे कि सीमा पर घटनायें हो रही हैं। हमारे माननीय सदस्य कहते थे कि शत्रु को लद्दाख से निकालने के लिये क्यों प्रयत्न नहीं किये जा रहे। वे यह अनुभव नहीं करते थे कि यह काम इतना सुगम नहीं है। संभवतः अब वे अधिक अनुभव करते हैं कि ये बातें इतनी सुगम नहीं होतीं बल्कि उस के लिये न केवल सारे राष्ट्र की शक्ति की आवश्यकता होती है बल्कि बड़ी तैयारी का उपयुक्त प्रयोग तथा निर्देशन करना होता है और सैनिक बातों का ध्यान रखना होता है। जहां ये बातें हमारे विरुद्ध हैं वहीं हमें हार होती है। इस का कोई मतलब नहीं कि हम में शक्ति कितनी है और हमारे जवान कितने सशक्त हैं।

मैं सभा की जानकारी के लिये बता देना चाहता हूं कि आज ही नहीं बल्कि कुछ वर्ष पहले से अर्थात् जब से चीनियों ने लद्दाख में हमारी धरती पर अधिकार जमाना शुरू किया था, नेफा का प्रश्न हमारे समक्ष था। हम ने सोचा था कि यदि वे आक्रमण करें तो हमें क्या करना चाहिये। हमें आशा थी कि वे आक्रमण नहीं करेंगे और इस प्रकार कई डिवीज़न सेना के साथ बड़ा हमला नहीं कर देंगे, किन्तु उन्होंने ऐसा किया। उस समय मुझे परामर्श दिया गया कि हमें मेकमहोन लाइन तक सीमित नहीं रहना चाहिये बल्कि उन्हें निकाल डालना चाहिये, कुछ डराना चाहिये, कुछ लड़ना चाहिय किन्तु वास्तविक प्रतिरक्षा सीमा कुछ नीचे रखनी चाहिये जहां कि प्रतिरक्षा अधिक सशक्त हो सके। एक तो हम आक्रमण की आशा नहीं करते थे और मैं स्पष्टतः स्वीकार करता हूं कि हमें इस तरह अपने ही प्रदेश में पीछे हटना पड़ेगा मैं इस विचार को भी सहन नहीं कर सकता था, और हम ने सैनिक दृष्टि से बिल्कुल अलाभदायक स्थिति में उन का मुकाबला किया। इस के अतिरिक्त आक्रांताओं की संख्या अत्यधिक थी। यह हमारे अधिकारियों और लोगों की आलोचना नहीं है कि वे इस धोखे में आ गये और प्रतिरक्षा के लिये अधिक अच्छे स्थान पर लौट आये।

श्री फ्रैंक एंथनी ने संभवतः कहा था कि हम कुछ प्रतिरक्षा कर सके हैं क्योंकि हमें हथियार मिल गये हैं । मैं हथियारों और सामान के लिये विदेशों का आभारी हूं किन्तु ये हथियार अभी उन्हें पहुंचे नहीं थे जब हम वर्तमान स्थिति में पहुंचे । सेना ने वर्तमान हथियारों से ही चीनी प्रगति को रोक दिया था ।

अतः युद्ध के प्रारम्भ में हमारी हारों का प्रमुख कारण यह था कि चीनियों ने बहुत अधिक संख्या में आक्रमण कर दिया था अर्थात् उन की संख्या हम से कई गुना अधिक थी । अधिक अच्छे शस्त्रों का भी प्रश्न पैदा नहीं हुआ । उन के हथियार कुछ अधिक अच्छे थे किन्तु उस प्रश्न का अधिक महत्व नहीं । उन के पास मार्टर अच्छे हैं जो दूरी से मारे जा सकते हैं । वे हथियार अब भी उन के पास हैं किन्तु उन्हें रोक दिया गया है । यह मुख्य कारण था जिस के विरुद्ध कुछ नहीं किया जा सकता था वहां की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी । हम ने यही अपराध किया यदि यह अपराध है, कि हम ने ऐसी सैन्य स्थिति में मुकाबला किया जो प्रतिकूल थी । हम ने उन्हें वहां डटने के लिये नहीं कहा । किसी राजनीतिज्ञ के लिये यह कहना गलत होगा । किन्तु हमारे सैनिक पीछे हटने के लिये तैयार नहीं थे और वे टिके रहे जिसकी बहुत हानि उठानी पड़ी ।

मैंने राष्ट्र के महान संगठन की ओर संकेत किया है । यह सगठन दलों का नहीं बल्कि दिलों और मस्तिष्कों का है । मुझे हज़ारों चेहरे दिखाई देते हैं । जब मैं भारत के चेहरे की बात करता हूं तो मुझे भारत के करोड़ों चेहरों की बात कहनी चाहिये क्योंकि वे चाहे किसी भी दल या जाति के हों उन सब पर एक ही भाव अंकित है ।

साम्यवादी दल के बारे में मुझे यह कहना है कि उन्होंने जो घोषणापत्र तैयार किया है वह ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी गैर-साम्यवादी ने तैयार किया हो । लोग कह सकते हैं कि संभवतः उनके वास्तविक भाव इसमें नहीं हैं किन्तु बाहर के प्रभाव के कारण उन्होंने ऐसा तैयार किया है । भले ही कुछ साम्यवादी इससे सहमत न हों किन्तु उस दल में कुछ लोग हैं जिन्होंने घोषणापत्र पर आपत्ति की थी । यह तथ्य भी कि ऐसी परिस्थिति में उन्होंने ऐसा घोषणापत्र जारी करने की आवश्यकता समझी, महत्वपूर्ण है । इस से पता लगता है कि ऐसी परिस्थितियां हम सब के मन को बदलती हैं चाहे हमारा सम्बन्ध किसी भी दल से और चाहे उस दल से हो जो पहले चीनियों का केवल इसलिये समर्थन करती रही है कि चीनी भी साम्यवादी हैं । फिर भी वे इस आक्रमण के विरुद्ध खड़े हो गये हैं जैसाकि कोई राष्ट्रवादी करेगा । यह अच्छी बात है । हमें इस का लाभ उठाना चाहिये बजाये इस के उन की निन्दा की जाये और उन कारणों का पता लगाया जाये जिन से उन्हें ऐसा करना पड़ा । साम्यवादियों में भी कुछ नेता हैं जो विचारधारा के सम्बन्ध में आपस में झगड़ते हैं किन्तु साम्यवादी दल से सम्बन्धित बहुत से मज़दूर या अन्य लोग सामान्य लोग हैं । वे इस विचारधारा से आकर्षित हैं जैसेकि वे इस परिस्थिति से प्रभावित हैं जिससे सभी भारतीय प्रभावित हैं । वे साम्यवादी दल के घोषणा पत्र से भी प्रभावित हुए हैं । यह बहुत लाभप्रद है । अब यह कह कर कि घोषणापत्र गलत है इसलिये हम क्यों उस के प्रभाव को समाप्त कर रहे हैं । अतः मैं घोषणा पत्र का स्वागत करता हूं और हमें उस के आक्रमण के विरुद्ध संगठन पैदा करने के लिये लाभ उठाना चाहिये ।

मैं यहां की गई सैकड़ों आलोचनाओं की बात नहीं करूंगा । उन सभी सुझावों पर ध्यानपूर्वक विचार किया जायेगा । कुछ सुझाव तो यह जाने बिना किये गये कि उन्हें पहले ही कार्यान्वित किया जा रहा है, कुछ हम स्वीकार नहीं कर सकते और अन्य सुझावों को हम कार्यान्वित करेंगे ।

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

अब मैं तैयारी के सामान्य प्रश्न के बारे में कहता हूं। कुछ सदस्य समझते हैं कि हम ने सैनिकों को नंगे पांव और बिना वस्त्रों के लड़ाई पर भेज दिया था। यह असाधारण बात है कि वे निःशस्त्र और नंगे पांव थे।

कुछ सिपाही वहां पर थे। कुछ को सितम्बर में जल्दी में भेजा गया था। हम सर्दियों के कपड़े सितम्बर के मध्य में देते हैं। वे लोग पूरी गर्म वर्दी में ही वहां गये थे। जाते वक्त हर एक को एक एक कम्बल दिया गया। बाद में चार कम्बल दिये जाने लगे। किन्तु ये कम्बल इतनी जगह घेरते थे और उन्हें हवाई जहाज द्वारा भेजा जा रहा था। अतः प्रभारी अधिकारी और सिपाहियों ने स्वयं निश्चय किया कि कम्बल बाद में भेज दिये जांय। उस समय इतनी सर्दी नहीं थी। अतः प्रत्येक एक एक कम्बल ले गया। यह दुर्भाग्य की बात थी क्योंकि बाद में कम्बल हवाई जहाजों द्वारा गिराने पड़े और यह काम खतरनाक था। एक तो चीनी उन पर गोली चला सकते थे। दूसरे पहाड़ों की गहरी ढलानों में यह काम ठीक से नहीं हो सकता था। अक्सर कम्बल खड्ड में गिर जाते थे और उन्हें प्राप्त करना कठिन हो जाता था। अतः हमारी बहुत सी चीजें और ये कम्बल गुम हो गये।

हमारे सिपाहियों के पास दो दो बूटों के जोड़े थे। वहां स्थायी रूप से नियुक्त सिपाहियों को बर्फ की जगहों में काम आने वाले बूट भी दिये हुए थे। अन्य असम से भेजे गये सिपाहियों को भी बूट हवाई जहाजों से भेजने पड़े।

संक्षेप में मैं कहना चाहता हूं कि नेफा में हमारी सारी सेना के पास पूरे कपड़े और बूट थे किन्तु सितम्बर के अन्त में यह अनुभव कर कि चीनी बहुत संख्या में बढ़ रहे हैं हम ने जल्दी में और सैनिक भेजने का निश्चय किया। ऐसी जल्दी में ऐसा भी होता है कि कहीं और जगह भेजे जाने वाले सैनिकों को नेफा भेजना पड़ा और उनके पास सर्दियों के कपड़े नहीं थे। निश्चय किया गया कि उन्हें बाद में वस्त्र भेजे जायेंगे। बस इन बाद में भेजे गये सिपाहियों के पास ही पूरा सामान नहीं था जो कि बाद में भेजा गया--अन्य सबके पास सर्दियों का पूरा सामान था। और हर एक के पास सेना के बूट थे।

कुछ लोगों ने सिपाहियों के बर्फ द्वारा विगलित होने की कहानियां सुनी हैं। ऐसा बहुत ऊंचाई के कारण भी होता है। मुझे ऐसे रोगियों की संख्या तो ज्ञात नहीं किंतु दो या तीन हज़ार मेंसे केवल ही इस रोग से ग्रस्त हुए थे। नमूनिया आदि के रोगी भी थे जो कि वहां की परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए बहुत अधिक नहीं है। इन में से भी आधे से ज्यादा अधिक ऊंचाई के कारण हुए न कि बूट न होने के कारण। ऐसी दुर्घटना सीमा पर लड़ने वाली सेना के साथ नहीं हुई प्रत्युत् जब २० अक्तूबर को चीनियों ने भारी आक्रमण किया तो एक दो स्थानों पर हमारी सेनाएं बिखर गईं। वे सेना के अड्डे पर नहीं पहुंच सके। वे बहुत पहाड़ों में भटकते रहे इस कारण भी लोगों ने कहा कि मौतें अत्यधिक हुई हैं। किन्तु वे सेनाएं कुछ दिन बाद लौट आई। इन दिनों में इन लोगों के पास स्वभावतः सेना की सभी सुविधाएं कम्बल आदि उपलब्ध नहीं थीं। वे बहुत ऊंचाई पर भटकते फिरे और उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन्हीं लोगों कुछ वर्फ से प्रपीड़ित हुए। जब वे लौट आये तो उन्हें अस्पताल में रखा गया और वे स्वस्थ हो रहे हैं।

यह कहना गलत है कि हमारे लोगों के पास कपड़े और बूट नहीं थे। दुर्भाग्य की बात है कि यह समय वर्दी बदलने का था। हमारी कुछ सेना को अकस्मात ठंडी वर्दी के साथ ही उधर भेज देना पड़ा और सर्दियों के कपड़े उन तक पहुंचने में कुछ देर लग गई। बर्फ के बूट हम केवल अधिक ऊंचाई के क्षेत्रों में ही देते हैं।

सेना के लिये कपड़े और बूट तो बहुत अच्छे थे किन्तु सामान्यतः हमारी सेना की वर्दी सर्दियों के उपयुक्त नहीं है। उदाहरणतः कश्मीर की लड़ाई में उन्हें विशेष प्रकार के कपड़े दिय गये थे। सेना के पास सर्दियों के लिये सभी प्रकार की चीजें हैं किन्तु उन ऊंचाइयों और घोर सर्दी के उपयुक्त नहीं।

माननीय सदस्य यह जानना चाहेंगे कि चुशूल के क्षेत्र में इस समय तापमान शून्य से ३० डिग्री नीचे है। वहां जलवायु इतनी सख्त है। १४,००० फुट की ऊंचाई पर वहां की जलवायु के लिये अभ्यस्त होने की जरूरत है कपड़े चाहे कितने भी हों उनका कोई महत्व नहीं। अपने अनुभव से सीख कर सर्दियों के अन्य सामान के अतिरिक्त सैनिकों को मोटे गद्दे के कोट और पतलूने पहुंचाई गई हैं। ये वस्त्र बहुत गर्म होते हैं। २० तारीख के कुछ दिन बाद ही जब हम ने अनुभव किया कि उन के पास ऐसे वस्त्र होने चाहियें, उन्हें सामान पहुंचाना आरम्भ कर दिया गया था। पहले पहल हम ये कोट पतलूने ५०० प्रतिदिन के हिसाब से भेजते रहे और बाद में प्रायः १००० प्रति दिन के हिसाब से भेजे गये।

दूसरा आरोप यह लगाया गया है कि जवानों के पास उपयुक्त शस्त्रास्त्र नहीं थे। उन्हें भी सामान्य चीजें और ३०३ राइफलें तथा मशीनगनें दी गई थीं। किन्तु उन्हें अर्द्ध स्वचालित राइफलें नहीं दी गई क्योंकि हमारी सेना के पास ऐसे शस्त्र नहीं हैं। पश्चिम की आधुनिकतम सेनाओं के पास भी ऐसे शस्त्र नहीं हैं। इंगलैंड को ही हाल में ही शस्त्र दिये गये हैं। और ऐसा करने में ४ या पांच वर्ष लग गये थे। यह काम इसी वर्ष कुछ महीने पूरा किया गया है। यह लम्बा काम है और इंगलैंड की सेना तो भारत से छोटी है।

हम कई वर्ष इस पर विचार करते रहे हैं। इस में कई कठिनाइयां पैदा हुईं, विभिन्न विचार व्यक्त किये गये। आसान ढंग तो यह है कि चीजें मंगवा दी जायें किन्तु आसान ढंग सदा अच्छा नहीं होता। विदेशी मुद्रा की भी निरन्तर कठिनाई है। किसी राष्ट्र के सशस्त्र होने का यह उपाय नहीं है। यदि हम आज कुछ हासिल करते हैं तो फिर गोलीबारूद के लिए निरंतर निर्भर रहना पड़ेगा। यदि विदेश में गैर सरकारी उद्योगपतियों से शस्त्रास्त्र लेने हो तो सदस्यों को पता होगा कि शस्त्रास्त्रों में बहुत बड़ी धांधली होती है। वे लोग बहुत पैसा मांगते हैं।

हम विदेशों के गैर-सरकारी उद्योगपतियों से शस्त्रास्त्र लेने के बहुत विरुद्ध थे और चाहते थे कि अर्द्ध स्वचालित राइफलें बनाने के लिए अपने कारखाने लगायें। शांतिकाल में तर्क-वितर्क में अधिक समय लग जाता है। पहले ऐसा संकट आया होता तो हम अधिक अच्छा काम कर सकते। आखिर हमने इन शस्त्रों के निर्माण में ऐसी स्थिति प्राप्त कर ली है कि तीन या चार सप्ताह में ही ऐसे शस्त्रास्त्र बनाने लग जायेंगे और दो तीन महीनों में काफी मात्रा में शस्त्रास्त्र बनाने लगेंगे।

यह प्रश्न केवल अर्द्ध-स्वचालित राइफलों का ही नहीं था। हमारे पास स्वचालित मशीनगनें, एल एम जी और एम एम जी शस्त्र थे। किन्तु इन कारणों से जिनका उल्लेख मैं पहले कर चुका हूं उनके पास अर्द्ध-स्वचालित राइफलें नहीं थीं। अब हमने ऐसे बहुत से शस्त्र बनाने शुरू कर दिये हैं जो पहले नहीं बनाया करते थे। विदेशी मुद्रा सम्बन्धी कठिनाई के कारण हम ऐसा नहीं कर सके। दो तीन वर्ष पहले की स्थिति की तुलना आज से मत कीजिये। अब तो हमें इस संकट का सामना करना है। हमें जहां कहीं से भी शस्त्र मिलें खरीदने हैं किन्तु सामान्य स्थिति में उन्हें बनाने का विचार था।

इनमें सामान्यतः कुछ हथियार इस शर्त के साथ खरीदे थे कि हमें उनका निर्माण करने की अनुमति दी जाये। अतः हमने कुछ हथियार काम आरम्भ करने के लिये खरीदे थे।

यहां तक कारखाने लगाने की बात तो ठीक है, किन्तु उसके लिये सुदृढ़ औद्योगिक पृष्ठभूमि चाहिये। सापेक्षतः कृषि प्रधान पृष्ठभूमि में ऐसे कारखाने स्थापित नहीं हो सकते। अब तक तीनों

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

पंचवर्षीय योजनाओं में जो काम हुआ है वह देश को अधिक आधुनिक और अधिक औद्योगीकृत बना कर राष्ट्र को सशस्त्र बनाने और ऐसे आधार के निर्माण के लिये किया गया था कि जिससे हर आवश्यक चीज बनाई जा सके। कुछ सदस्य यह अनुभव करेंगे कि ऐसे काम के लिये सुदृढ़ औद्योगिक आधार की आवश्यकता है। इतना ही नहीं बल्कि इसके लिये लोगों में शिक्षा के प्रचार की भी आवश्यकता है क्योंकि प्रत्येक सैनिक अच्छा प्रविधिज्ञ (मेकेनिक) होना चाहिये।

अतः भारत को हर दृष्टि से सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है और लोगों का स्तर उठाने का कार्य ही योजना द्वारा किया जा रहा था। इस बारह वर्ष पहले की अपेक्षा आज हम इस मुसीबत का सामना करने के लिये अधिक सामर्थ्यवान हैं क्योंकि सरकारी और गैर सरकारी उद्योग क्षेत्रों में उद्योग में वृद्धि हुई है। दस बारह वर्ष पूर्व हमारी सेवा के लिये यह काम कठिन था। अब हमारे पास विकास का आधार है और किसी व्यक्ति के मन में आशंका नहीं होनी चाहिये कि हम तीसरी पंचवर्षीय योजना का कार्य करेंगे या युद्ध काल में रत रहेंगे। यह योजना भी युद्ध कार्य का ही अंग है चाहे कुछ कामों को धीमा कर देना होगा। कृषि को ही लीजिये। यह समस्त उद्योग का आधार है। केवल कृषि के सशक्त आधार पर उद्योग को स्थापित किया जा सकता है जो कि युद्ध कार्यों का आधार है।

शिक्षा को लीजिये। हमें न केवल लोगों में शिक्षा का प्रसार करना है बल्कि प्रविधिज्ञ लोगों की बहुत आवश्यकता है। उद्योग के लिये विद्युत् की आवश्यकता है। अतः वे सब प्रमुख चीजें जिनकी हमें आज आवश्यकता है उन्हीं का पंचवर्षीय योजनाओं में विकास किया जा रहा था।

मैं इसी बात पर बल दे रहा हूं कि भूतकाल में भी सारा विचार सेना की दृष्टि से उद्योग पर और स्वयं शस्त्र बनाने पर केन्द्रित रहा है।

आज हमें अन्य देशों से बहुत सा सामान और शस्त्र मिल रहे हैं और हम उनके, विशेषकर अमेरिका और ब्रिटेन के आभारी हैं। किन्तु यह याद रखना चाहिये कि इस किस्म की प्रतिक्रिया शान्ति काल में नहीं हो सकती थी। स्पष्ट है कि यह केवल चीन द्वारा भारत पर आक्रमण का प्रश्न नहीं है, यह विश्व और एशिया के लिये बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है। वे देश हमारी मदद करते हैं, क्योंकि इन प्रश्नों में उनको अपनी भी अत्यधिक रुचि है। ऐसा शान्तिकाल में नहीं हो सकता। किसी ने कहा था कि कुछ चीजें हम अधिक मूल्य पर खरीद सकते थे। हमें वे विशेष शर्तों पर मिल रही हैं, जिससे हम पर अधिक भार नहीं पड़ेगा। मेरे विचार में ये चीजें हमें स्वयं बनानी चाहिये। चीन ने क्या किया है। चीन और भारत में मुख्य भेद यह है कि क्रान्ति की सफलता से २० वर्ष पूर्व से वे लड़ते आ रहे हैं। वे पहाड़ों में लड़ने के लिये विशेष रूप से उपयुक्त हैं। जेब में चीनी और चाय की थैली रख कर वे आगे बढ़ते जाते हैं और उनको सम्भरण की चिन्ता नहीं होती। उस चीन में शुरू से ही शस्त्रास्त्र निर्माण पर जोर दिया गया है। उन्हें रूस से बहुत सहायता मिली और हजारों लोगों ने हथियारों के उद्योग शुरू किये। हमने भी ये उद्योग शुरू किये थे किन्तु इन पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया। हम ने सारे भारत में उद्योग स्थापित करने पर जोर दिया था और शस्त्रास्त्र उद्योग ने भी साथ-साथ काफी प्रगति की।

पिछले कुछ वर्षों में आयुद्ध कारखानों से सेना को जो माल दिया गया उसमें ५०० प्रतिशत वृद्धि हुई है। १९५६–५७ में यह माल ८.६४ करोड़ रु० था, असैनिक आदेश ३.५२ करोड़, वायु सेना और नौ सेना १.९३ करोड़। १९५७–५८ में सेना को दिया गया माल १२.७८ करोड़ रुपये का था; असैनिक आदेश ३.२७ करोड़, वायु सेना और नौसेना २ करोड़। यह आंकड़े सेना के लिये १२, १४, १६, २४ और १९६१–६२ में ३३¼ करोड़ रुपये तक पहुंच गये थे और इस समय यह अनुमानतया ६० करोड़ रुपये हैं।

नागरिक आदेशों के बारे में बहुत कुछ कहा गया है कि हम आयुध कारखानों में थर्मस आदि बनाते हैं। इस प्रकार की आलोचना बहुत अनुचित है। ऐसे अधिकतर आदेश रेलवे और सरकार के लिये है। कुछ ऐसी चीजें इसलिये बनाई जाती हैं, क्योंकि ये और चीजों के निर्माण के दौरान में बन सकती हैं और श्रमिकों की संख्या फालतू होती है। आप देखेंगे कि असैनिक आदेश अधिक नहीं बढ़े, ८ वर्षों में ३$^1/_2$ करोड़ रुपये से ६करोड़ रुपये तक बढ़े हैं जबकि सेना को दिये गये माल ८ करोड़ रुपये से ६० करोड़ रुपये तक बढ़ा है। मशीनरी भी कुछ आयात की गई है। फिर विदेशी मुद्रा की भी समस्या है। हमारे इंजीनियरों ने पुरानी मशीनरी को ठीक कर के उसका प्रयोग किया है यद्यपि नई मशीनरी से काम लेना अधिक अच्छा होता है। मैं आयुध कारखानों में काम करने वाले कर्मचारियों को बधाई देता हूं क्यों कि वे सक्षम हैं और उनमें उत्साह भरा हुआ है। वे दिन रात काम कर रहे हैं और वे काम करके दिखाना चाहते हैं।

मैं आपको बताना चाहूंगा कि परिस्थितियों से किसी तरह यथार्थवादी बनना पड़ता है। सेना को दी जाने वाली खाद्य का सम्भरण इतना आसान नहीं होता। पिछले दो या तीन सप्ताहों से सेना खाद्य विभाग और प्रतिरक्षा विज्ञान संगठन तथा खाद्य और कृषि मन्त्रालय ने ऐसे प्रयोग किये हैं कि जमाया हुआ खाद्य बनाया जाये, जिसे जेबों में रख लिया जाये और जो कई दिनों तक काफी हो। आज सुबह ही मैंने ऐसे खाद्य का एक प्रदर्शन देखा, जो कि देखने और खाने में बहुत अच्छे हैं। गुड़ भी ऊंचाई के लिये बहुत अच्छी चीज़ है। हमने इन खाद्यों को युद्ध क्षेत्र में सिपाहियों के लिये भेजा भी है।

न्यायालयों की तरफ से सिपाहियों को जो नोटिस मिलते हैं, उन्हें भी संकट के समय के लिये रोक लेने की कार्यवाही की गई है।

कुछ लोगों ने यह आलोचना की है कि हमारे राजनयिक मिशन चीनी प्रचार का मुकाबला करने में पीछे रहे हैं। मेरी सूचना यह है कि उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। किन्तु दूसरे देशों की प्रतिक्रिया केवल हमारे कथनों पर निर्भर नहीं करती। अन्य पहलू जिन में डर भी होता है इस में सम्मिलित होते हैं। बहुत से देशों की पहली प्रतिक्रिया यह थी कि उन्हें दुःख और आश्चर्य हुआ कि शीघ्र कोई युद्ध-विराम और समझौता हो जायेगा। अब यह आश्चर्य कम होता जा रहा है और वे हमारे समर्थन को आ रहे हैं। मिश्र ने चीनी सरकार को कुछ सुझाव दिये हैं जो कि हमारे युद्ध-विराम सुझावों से मिलते जुलते हैं हमारे राजनयिक मिशनों की आलोचना करना उचित नहीं है। यह याद रखना चाहिये कि उन देशों के सम्वाददाता भारत में होते हैं जो कि उन्हें समाचार भेजते रहते हैं।

पाकिस्तान और नेपाल के बारे में मेरे लिये निश्चित रूप से कुछ कहना बहुत कठिन है। किन्तु नेपाल के बारे में मैं कह सकता हूं कि उसका रवैया पहले से अधिक मैत्री वाला है। हमने स्पष्ट कर दिया है कि हम नेपाल में गड़बड़ नहीं देखना चाहते। अब नेपाल को हमारे कहने पर विश्वास है और हमारे सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहेंगे।

पाकिस्तान के बारे में भी मैं कुछ निश्चित नहीं कह सकता किन्तु वहां के समाचार पत्रों का रवैया विरोधी ही रहा है। किन्तु मेरे विचार में वे वहां के लोगों या अधिकारियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते। पहले उनका ख्याल था कि ये मामूली सीमान्त झगड़े हैं किन्तु अब वे समझ रहे हैं कि ये कितने महत्वपूर्ण हैं और अब वे इस पर पुनर्विचार कर रहे हैं।

रूस हमारे प्रति मैत्रीपूर्ण रहा है। किन्तु उनकी स्थिति बहुत कठिन है क्योंकि वह चीन का मित्र देश है। हम इस बात को समझते हैं और उनके बीच किसी झगड़े की आशा नहीं करते। हमें किसी देश को कोई सुझाव नहीं देना है। हमें रूस की शुभ कामनायें प्राप्त हैं और भविष्य में भी प्राप्त रहेंगी।

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

चीनी सरकार भारत प्रतिरक्षा अधिनियम के बारे में काफी प्रचार कर रही है, जैसे कि इसे यहां के चीनियों के लिये भी बनाया गया हो, यह यहां की स्थिति का मुकाबला करने के लिये बनाया गया है। यदि कोई चीनी शरारत करे, तो वह भी उसकी ज़द में आयेगा। कठिनाई यह है कि चीनियों का शेष विश्व के बारे में उलटा दृष्टिकोण है। उनका यह बहुत पुराना विचार है कि जो लोग चीन की सीमाओं से बाहर हैं, वे उतने उन्नत नहीं हैं जितने वे स्वयं हैं।

एक और बात है। युद्ध विराम के लिए हमारी पेशकश के बारे में कुछ आलोचना हुई है। हम ने कहा है कि किसी चीज की चर्चा करने से पहले चीनी फौजें ८ सितम्बर से पहली वाली जगह पर चली जाएं अर्थात् उस स्थान पर चली जाएं जब कि लगभग दो महीने पहले थी जिस समय उन्होंने पहली बार थागला चौकी को पार किया। उन्होंने विभिन्न सुझाव दिये हैं जो कि लोगों को धोखा दे सकती हैं। वे नवम्बर, १९५९ की स्थिति को जाने के लिये कहते हैं। जो इसे नहीं जानते हैं वे लोग तो हैरान होंगे कि वे तीन वर्ष पहले की स्थिति पर जाना चाहते हैं। लगभग नवम्बर, १९५९ को चीनियों ने अर्थात् श्री चाऊ-एन-लाई ने अपने तथ्यों के अनुसार इन क्षेत्रों पर पहली बार दावा किया। पहले वे क्षेत्र उन नक्शों में तो थे, परन्तु सरकारी तौर पर उन पर यह किसी ने दावा नहीं किया। यथार्थ में सरकारी तौर पर उन्होंने कहा कि उन के नक्शे पुराने हैं आधुनिकतम नहीं हैं और वे उन्हे ठीक करेंगे, परन्तु १९५९ में पहली बार उन्होंने उन क्षेत्रों पर दावा किया। इतने में वे लद्दाख में काफी घुस गए थे।

१९५९ में हमारी विरोधी कार्यवाई शुरू हुई। १९५९, १९६० और १९६१ में हम लद्दाख में काफी आगे बढ़े और वहां कई चौकियां स्थापित की। फिर हमने समझा कि इन चौकियों का ध्यय उनको आगे बढ़ने से रोकना था। यदि वे लड़ाई में इसका फैसला न करते वहां उनसे बड़ पैमाने पर हथियारों से लड़ना कठिन था क्योंकि उन्हें कई लाभ थे। उनकी सड़कें वहां तक मौजूद थीं, वे टैंक इत्यादि सभी हथियार वहां तिब्बत से ला सकते थे जो कि नज़दीक है, अधिकतर चपटा प्रदेश है जब कि हमारे लिये यद्यपि हम ने कुछ प्रगति कर ली थी—सड़क तो अभी बनाई है उस समय यह भी नहीं थी—बहुत कठिनाईयां थीं। वहां जाने के लिये महीनों लगते फिर भी उनको बढ़ने से रोकने के लिये हम ने चौकियां बनाईं और उन से वे आगे बढ़ने से रोके गए। यथार्थ में, हम ने उन्हें कुछ पीछे धकेला। नेफा क्षेत्र में हमने पहले सीमा पर या उसके बिल्कुल नीचे अपनी चौकियां बनाई थीं क्योंकि ऊंची चोटी पर चौकी नहीं बन सकती। थागला दर्रे में भी हमारी चौकी दो तीन मील अन्दर थी, दर्रे पर थीं।

यदि हम उन के सुझाव मान लें तो उन के कहने के अनुसार वे मैकमोहन लाईन तक वापस चले जाएंगे लेकिन फिर वे कहते हैं कि मेकमोहन लाईन के विषय में उनका विचार हमारे से भिन्न था और यह चोटी के इस ओर है और जहां हम आज हैं हमें वहां से २० किलोमीटर और पीछे हटना है। अर्थात् लगभग ४० किलोमीटर ऐसा क्षेत्र हो जाएगा जो न तो उनकी फौजों के कब्जे में होगा और न हमारी फौजों के। इस का मतलब यह है कि थागला दर्रे के इस ओर उनकी पक्की बुनियाद होगी, जो कि खुला क्षेत्र है जिस में वे जब चाहें घुस सकते हैं। हमारे लिए यह मानना असम्भव था। लद्दाख में जहां है वहां से भी हमें पीछे हटना पड़ता और उन के शीघ्र आगे बढ़ने का प्रश्न नहीं, परन्तु इस से भविष्य में यदि वह बढ़ना चाहें तो उन्हें सुविधा होगी। अतः हम ने उन के प्रस्तावों को अस्वीकृत कर दिया।

हम ने कहा कि नेफा और लद्दाख में ८ सितम्बर की स्थिति कर दी जाए। इसका यह अभिप्राय था कि नेफा में न केवल वे पीछे हटेंगे परन्तु हम उन चौकियों तक आगे बढ़ेंगे जो हमारे पास थीं और बीच में कोई खाली स्थान नहीं होगा और लद्दाख में भी हम काफी बढ़ेंगे ।

कुछ लोग कहते हैं कि "आप ऐसे कैसे कह सकते हैं ? आप को बातचीत नहीं करनी चाहिये । उन के साथ आप को बिल्कुल बातचीत नहीं करनी चाहिए जब तक कि आप उन्हें भारतीय क्षेत्र से बिल्कुल बाहर न खदेड़ दें ।" यह बड़ी अच्छी बात है । परन्तु जिसे किसी ने पूर्णतया पराजित किया हो और बाहर निकाल दिया हो उस से वह बात नहीं करता । बात चीत करने का प्रश्न ही नहीं उठता । यदि बिना बात चीत के हम ने अपना लक्ष्य पा लिया है, तो बाचतचीत का प्रश्न नहीं उठता । सदन को याद रखना चाहिए कि इन बातों में पक्की लेकिन यथार्थवादी राय बनानी चाहिए । हमारा सुझाव उन्होंने नहीं माना है, क्योंकि इस से हमारी शक्ति बढ़ती है और उन की कम होती है । ८ सितम्बर की लाइन के सम्बन्ध में जो सुझाव हम ने दिया वह ऐसा सुझाव है जिसकी सराहना विश्व के बड़े भाग ने की है जिस में तटस्थ और अन्य देश हैं । ऐसा सुझाव कि जब तक आप पराजय नहीं मानते तब तक आपसे बात नहीं करेंगे कोई देश दूसरे देश को नहीं भेजता । अतः आशा है कि सभा इस बात को समझेगी कि हमारा सुझाव ठीक सुझाव है और इसका पूर्ण समर्थन करेगी ।

कुछ सदस्यों ने कहा कि हम तिब्बत को आजाद कराने के बारे में कहें ।

श्री बागड़ी (हिसार) : मनसर गांव हिन्दुस्तान में है वहां की आबादी हिन्दुस्तानी है ।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : दुर्भाग्यवश इतिहास सामने वाले माननीय सदस्यों जैसे व्यक्ति नहीं बनाते । यह कहना आश्चर्यजनक है कि हम तिब्बत को आजाद कराएंगे यह अच्छी बात है यदि तिब्बत आज़ाद हो जाए । परन्तु इस समय या किसी समय भी ऐसा काम करना असाधारण मालूम पड़ता है और तथ्यों पर आधारित नहीं है ।

मैं ने कहा है कि भारत और चीन के युद्ध की विजय और पराजय के बारे में सोचना--- लड़ाईयां हो सकती हैं और हम उन्हें पीछे धकेल सकते हैं । जैसी हमें आशा है ---सोचना ही रहेगा । ऐसा नहीं हो सकता और न होगा । हमें यथार्थवादी होना चाहिए । क्या पीकिंग के लिये मार्च करें ?

†**श्री प्रिय गुप्त** (कटिहार) : क्या हम उन्हें देहली आने देंगे ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मैं बहस नहीं करना चाहता । परन्तु मेरे विचार में ऐसे युद्ध का अन्त किसी एक पक्ष की विजय या पराजय में नहीं हो सकता । दो बड़े देश हैं । कोई भी पराजय नहीं मानेगा । अतः युद्ध समाप्त करने का कोई उपाय तो हमारे लिये सम्मानपूर्ण निकालना है । हम ने कहा है कि हम जब उन के कब्जे में जो हमारा क्षेत्र है उसे छुड़ा लेंगे तो युद्ध खत्म कर देंगे । यह कहना कि हम तिब्बत आजाद करवा लेंगे हम नहीं कर पाएंगे यद्यपि हमारे पास ऐसा बम्ब भी क्यों न हो । इस के बारे में बात करना फजूल है ।

वे हमेशा कहते रहें कि उनकी हम से विशेष नाराजगी यह है कि हम तिब्बत में विद्रोह करवाने का प्रोत्साहन करते रहेंगे । इस चीज़ ने आखिर में उन्हें हमारे विरुद्ध कर दिया । यदि हम ऐसा कहें तो उन के उस तर्क को पुष्टि मिलेगी जिस का आ र नहीं है और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी काफी प्रबलता मिलती । इसका मतलब ऐसी बात कहना होगा जो हमारे लिये असम्भव

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

है। अपने देश से उन्हें बाहर निकालना हमारे लिये काफी बड़ा काम है । हम इसे करेंगे। यह कठिन होगा । काफी समय लगेगा । अतः मुझे आशा है कि यद्यपि हमें मजबूत बनाना है हमें ऐसी बात जो कि स्पष्टतः मूर्खता की है इसलिए नहीं कहनी चाहिए कि हम दूसरों से बहादुर लगें।

जो संकल्प मैं ने सदन के सामने रखा है वह काफी व्यापक है । यह दृढ़ निश्चय और सेवा भावना का संकल्प है । अतः मुझे आशा है कि इस संकल्प को स्वीकार करते समय सदन सेवा भावों से ओत-प्रोत है, लम्बी चौड़ी बातों को भी सोचना है और यह समझना है कि हमारे सामने बहुत कठिन काम है और हम इसे करने के लिये दृढ़ निश्चय हैं चाहे कितना समय लगे और कुछ भी नतीजा निकले। ऐसा करने की हमें जो देश में पुरुषों, स्त्रियों, और सार्वाधिक बच्चों में भी भावनात्मक एकता पैदा हुई है उस से प्रोत्साहन मिलेगा। अतः मैं इस संकल्प को सदन के सामने इस विश्वास और दृढ़ निश्चय से रखता हूं कि वे सभी जो यहां उपस्थित हैं और देश इसे मानेगा और इस के अनुसार चलेगा।

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद) : दार्जिलिंग में महाराजकुमार सिक्कम ने कहा है कि पिछले कुछ दिनों से सिक्कम की सीमा पर बहुत चीनी सेनाएं एकत्रित हो रही हैं। क्या प्रधान मंत्री यह आश्वासन देंगे कि नेफा के मुकाबले हमारी सेना सिक्कम की रक्षा करने के लिए अधिक तैयार है ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मुझे अफसोस है कि ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं। मैं किसी प्रकार का आश्वासन नहीं दूंगा। मैं कैसे आश्वासन दे सकता हूं। मैं इस के अतिरिक्त कोई और आश्वासन नहीं दे सकता कि हम सब कदम यथा शक्ति उठा रहे हैं। मैं उन मामलों में भविष्य के बारे में कैसे आश्वासन दे सकता हूं जिनका निर्णय मेरे आश्वासनों तक नहीं होगा परन्तु अन्य बातों से होता है। मेरे विचार में चीनी यदि वे चुम्बी घाटी से आने जाने का साहस करें तो आने नहीं दिया जाएगा और उन्हें ऐसा करना आसान नहीं होगा ।

मुझे आज ३५ संसद सदस्यों का पत्र मिला है: उन्होंने कहीं भी सेवा करने के लिये पेशकश की है । मैं उनका बहुत आभारी हूं और उनकी पेशकश का स्वागत करता हूं ? शीघ्र उनकी सेवाओं का कैसे लाभ उठाया जा सकता है इस बात को तो मुझे नहीं पता । ज्योंही हमारे कार्यों की प्रगति होगी सब प्रकार के अधिक से अधिक व्यक्तियों के लिए काम दिया जाएगा।

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी) : अध्यक्ष महोदय : मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : मेरे खयाल से इस वक्त प्रश्न पूछने की जरूरत नहीं है।

श्री राम सेवक यादव : मेरा प्रश्न यह है कि और जो देश में जोश है उसको देखते हुए देश और हम सभी जानना चाहते हैं कि इस युद्ध का उद्देश्य क्या है यानी लड़ाई कहां रुकेगी और क्या यह आदेश दिये गये हैं .... (**अन्तर्बाधा**). जहां तक चीन आगे बढ़ आया है अगर वह और आगे हमला न करे तो क्या हमारे सिपाही जहां हैं वहां रुके रहेंगे या आगे बढ़ कर अपना हिस्सा वापस लेंगे । मेरा सवाल यह है कि यह युद्ध कहां रुकेगा । (**अन्तर्बाधा**) ।

---

†**मूल अंग्रेजी में**

अध्यक्ष महोदय : इतनी घबराहट माननीय सदस्य न दिखाएं। उन के प्रश्न को सुन ही लिया जाता। इस प्रश्न का उत्तर तो कोई भी नहीं दे सकता।

प्रश्न यह है :—

"यह सभा राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद ३५२ के खंड (१) के अधीन २६ अक्तूबर, १९६२ को जारी की गयी आपात को उद्घोषणा का अनुमोदन करती है।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

†**अध्यक्ष महोदय** : संकल्प एकमत से स्वीकृत हुआ। अब मैं दूसरे संकल्प को लूंगा।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** (जोधपुर) : मैं अपने स्थानापन्न प्रस्ताव (संख्या १) पर बल नहीं देना चाहता क्योंकि मेरे विचार में इस समय प्रधान मंत्री के हाथ मजबूत करने की बहुत आवश्यकता है अतः मैं इस प्रस्ताव को सदन की अनुमति से वापिस लेना चाहता हूं।

†**अध्यक्ष महोदय** : क्या माननीय सदस्य को अपना स्थानापन्न प्रस्ताव वापस लेने की अनुमति है?

स्थानापन्न प्रस्ताव संख्या १ अनुमति से वापस लिया गया।

†**श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी** (केन्द्रपाड़ा) : चूंकि हम एक मत से चीनियों को बाहर खदेड़ने का दृढ़ निश्चय करना चाहते हैं और प्रधान मन्त्री ने युद्ध को गैर तैयारी की जांच करने का आश्वासन दिया है अतः मैं अपने संशोधन संख्या २ पर बल नहीं देता हूं।

†**अध्यक्ष महोदय** : क्या माननीय सदस्य को अपना संशोधन वापस लेने की अनुमति है।

संशोधन संख्या २ सभा की अनुमति से वापस लिया गया।

†**श्री विभूति मिश्र** (मोतीहारी) : मैं अपना संशोधन संख्या २० वापस लेता हूं।

†**श्री उ० मू० त्रिवेदी** (मन्दसौर) : प्रधान मन्त्री के आज के शब्दो को ध्यान में रखते हुये मैं संशोधन संख्या ७ और ८ पर बल नहीं देता हूं।

†**श्री शिवमूर्ति स्वामी** (कोप्पल) : मैं संशोधन संख्या १८ को वापस लेता हूं।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : मैं बिना शर्त के अपने संशोधन संख्या ४ को वापस लेता हूं।

†**अध्यक्ष महोदय** : क्या इन सदस्यों को अपने अपने संशोधन वापस लेने की अनुमति है?

संशोधन संख्या २०, ७, ८, १८ और ४ अनुमति से वापस लिए गए।

†**श्री राम सेवक यादव** (बाराबंकी) : मैं अपने संशोधन संख्या १३ पर बल देता हूं।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैं संशोधन संख्या १३ को मतदान के लिये रखता हूं।

अध्यक्ष महोदय द्वारा संशोधन संख्या १३ मतदान के लिए रखा गया तथा अस्वीकृत हुआ।

†**श्री रंगा** (चित्तूर) : मैं अपने संशोधन संख्या १५ और १६ पर बल देता हूं।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैं पहले संशोधन संख्या १५ मतदान के लिये रखूंगा।

---

†मूल अंग्रेजी में

अध्यक्ष महोदय द्वारा संशोधन संख्या १५ मतदान के लिए रखा गया तथा अस्वीकृत हुआ।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैं संशोधन संख्या १६ को मतदान के लिये रखता हूं।

अध्यक्ष महोदय द्वारा संशोधन संख्या १६ मतदान के लिए रखा गया तथा अस्वीकृत हुआ।

†**श्री तिरुमल राव** (काकिनाडा) : मैं संशोधन संख्या १५ को वापस लेता हूं।

संशोधन संख्या १९ सभा की अनुमति से वापिस लिया गया।

†**श्री राम रतन गुप्त** (गोंडा) : मैं अपने संशोधन संख्या १२ को वापस लेता हूं।

संशोधन संख्या १२ सभा की अनुमति से वापस ले लिया गया

†**अध्यक्ष महोदय** : अब मैं सब संशोधन संख्या ५, ६, १०, ११, १४ और १७ को मतदान के लिये रखूंगा।

अध्यक्ष महोदय द्वारा संशोधन संख्या ५, ६, १०, ११, १४ और १७ मतदान के लिए रखे गये तथा अस्वीकृत हुए।

†**अध्यक्ष महोदय** : माननीय प्रधान मन्त्री ने कहा है कि सभा के ३५ सदस्यों ने अपनी सेवाओं की पेशकश प्रधान मन्त्री को की।

†**कुछ माननीय सदस्य** : हम सब।

†**अध्यक्ष महोदय** : सब सदस्य सेवायें पेश कर रहे हैं।

अतः इस संकल्प को पढ़ाने के बाद मैं माननीय सदस्यों को प्रार्थना करूंगा कि वे खड़े हो जाएं और इस संकल्प को आदर भाव और विश्वास से पारित करें ताकि हम इस संकल्प की सभी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिये आत्मसमर्पित हों।

प्रश्न यह है :

"यह सभा इस बात पर अत्यधिक खेद प्रकट करती है कि एक-दूसरे की स्वतन्त्रता, एक दूसरे पर आक्रमण न करने और एक दूसरे के मामले में हस्तक्षेप न करने तथा शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की मान्यता के आधार पर चीनी लोक गणराज्य की सरकार के प्रति भारत सरकार के निरन्तर सद्भावना और मैत्री प्रदर्शित करने के बावजद भी चीन ने इस सद्भावना और मैत्री तथा पंचशील के सिद्धान्तों के प्रति, जिनसे दोनों देश सहमत थे, विश्वासघात किया है और उसने भारत पर आक्रमण तथा सशस्त्र सेनाओं से भारी हमला किया है।

"हमारी सशस्त्र सेनाओं के जवान तथा अफसर हमारी सीमाओं की रक्षा करते हुए जिस वीरता से लड़े हैं यह सभा उसकी अत्यधिक प्रशंसा करती है और उन शहीदों के प्रति अपनी सम्मानपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करती है जिन्होंने अपनी मातृभमि के गौरव तथा अखण्डता की रक्षा के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी है।

---

†मूल अंग्रेजी में

"यह सभा भारत पर चीन के आक्रमण से उत्पन्न आपात-कालीन स्थिति तथा संकट का सामना करने के लिये भारतीय जनता के अभूतपूर्व तथा सहज उत्साह की भी सराहना करती है। इस गम्भीर राष्ट्रीय संकट का मुकाबला करने के लिये जनता के सारे साधनों को जुटाने में सभी वर्गों के लोगों में मिल कर प्रयत्न करने की जो गहरी उमंग है उसके लिये यह सभा आभारी है। स्वतन्त्रता तथा बलिदान की ज्वाला फिर से दहक उठी है और भारत की आजादी और अखण्डता के लिये समर्पण की भावना नये सिरे से पैदा हो गई है।

"यह सभा आक्रमण और हमले के विरुद्ध संघर्ष की इस भीषण घड़ी में अनेक मित्र देशों से प्राप्त सहानुभूति और नैतिक तथा भौतिक सहायता के लिये आभार प्रकट करती है।

"यह सभा भारत की पुण्य भूमि से हमलावर को खदेड़ देने के लिये, चाहे इसके लिये कितना ही लम्बा तथा कठिन संघर्ष क्यों न करना पड़े, भारतीय जनता के दृढ़ संकल्प का आशा और दृढ़ विश्वास के साथ समर्थन करती है।"

सब सदस्यों ने खड़े होकर संकल्प को एकमत से स्वीकृत किया।

अध्यक्ष महोदय : संकल्प एकमत से स्वीकृत हुआ है। सभी अपने उत्तरदायित्वों के सम्बन्ध में जागरूक हैं और आशा है इसे पूरा करेंगे।

सभा पटल पर रखें गये पत्रों के बारे में

†**अध्यक्ष महोदय** : कुछ पत्र सभा पटल पर रखे जाते हैं।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : यह तो चर्म सीमा के प्रतिकूल बात है।

†**श्री मोरारजी देसाई** : परन्तु यह असली बात है।

†**अध्यक्ष महोदय** : मेरे विचार में इस संकल्प के बाद और कार्य नहीं होना चाहिये।

तत्पश्चात् लोक सभा गुरुवार, १५ नवम्बर, १९६२/कार्तिक २४, १८८४ (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित कर दी गयी।

---

†मूल अंग्रेजी में

[दैनिक संक्षेपिका]

बुधवार, १४ नवम्बर, १९६२

२३ कार्तिक, १८८४ (शक)

विषय		पृष्ठ

प्रश्नों के मौखिक उत्तर

तारांकित
प्रश्न संख्या

१७४	चीनियों को भारत से चले जाने का आदेश	६४३—४४
१७५	कोयले की कमी	६४४—४८
१७६	पश्चिम बंगाल में भूतत्वीय सर्वेक्षण	६४८—४९
१७७	भट्टी के तेल का आयात	६४९—५२
१७८	गौहाटी तेल शोधक कारखाना	६५२—५३
१८५	गौहाटी तेल शोधक कारखाना	६५३—५५
१७९	दिल्ली के एक होटल में पकड़े गये कारतूस	६५६—५७
१८०	सिलीगुड़ी गौहाटी पाइप लाइन परियोजना	६५७—५८
१८१	सन कुकर	६५८—५९
१८३	एक मन्त्री के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच करने के लिये प्रशासन प्रणाली	६५९—६१
१८४	मिजो राष्ट्रीय फ्रण्ट	६६२—६३
१८६	व्यवसाय प्रबन्ध	६६३—६४
१८७	स्पिती घाटी में भूतत्वीय सर्वेक्षण दल	६६४—६६

प्रश्नों के लिखित उत्तर

तारांकित
प्रश्न संख्या

१८२	स्नातकोत्तर कक्षाओं में आदिम जातियों के छात्र	६६६
१८८	कोयले का भाड़ा	६६७
१८९	तेल शोधक कारखाने	६६७
१९०	स्कूलों में व्यावसायिक प्रशिक्षण	६६८
१९१	उत्तर प्रदेश में त्रिवर्षीय डिग्री पाठ्यक्रम	६६८
१९२	शिक्षा मन्त्री सम्मेलन	६६९
१९३	नहूरकटिया की प्राकृतिक गैस	६६९
१९४	सम्पूर्णानन्द समिति का प्रतिवेदन	६६९—७०

प्रश्नों के लिखित उत्तर—(क्रमशः)

तारांकित प्रश्न संख्या	विषय	पृष्ठ
१९५	विज्ञान का अध्यापन	६७०
१९६	उप-कुलपतियों का सम्मेलन	६७१
१९७	अन्दमान में गोलीकाण्ड की न्यायिक जांच . . .	६७१

अतारांकित प्रश्न संख्या		
३६४	साइकलों के चालान	६७१—७२
३६५	ग्राम आवास योजना	६७२
३६६	उत्कल विश्वविद्यालय को अनुदान	६७२
३६७	विद्यार्थियों के शिक्षा पर्यटन	६७२
३६८	त्रिपुरा के प्राइमरी स्कूल अध्यापक . .	६७२—७३
३६९	त्रिपुरा में समाज शिक्षा	६७३
३७०	घरचुकनी कर . . .	६७३
३७१	दक्षिण को हिन्दी संस्थाओं को सहायता . . .	६७३—७४
३७२	केरल में इंजीनियरिंग कालिज	६७४
३७३	भारत का प्राणकीय सर्वेक्षण	६७४—७५
३७४	विद्यार्थियों के लिये शिक्षा पर्यटन	६७५
३७५	पैट्रोल की खपत	६७५
३७६	दिल्ली में आत्म हत्यायें	६७६
३७७	वैज्ञानिकों के राष्ट्रीय रजिस्टर पर दर्ज वैज्ञानिक . .	६७७
३७८	विदेशियों की मूर्तियों का हटाया जाना . . .	६७७—७८
३७९	दिल्ली में नया विश्वविद्यालय	६७८
३८०	नशाबन्दी	६७८—७९
३८१	विशेष आई० ए० एस० भर्ती	६७९
३८२	कोयला उत्पादन	६७९—८०
३८३	मिट्टी के तेल का मूल्य	६८०
३८४	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्कूलों और कालेजों में शिक्षा प्रणाली सम्बन्धी समिति	६८०
३८५	लंका पेट्रो-रसायन उद्योग	६८०

प्रश्नों के लिखित उत्तर—(क्रमशः)

अतारांकित प्रश्न संख्या	विषय	पृष्ठ
३८६	पेंशन पाने वाले	६८१
३८७	अध्यापक कल्याण निधि	६८१
३८८	जम्मू और काश्मीर में कोयला	६८१–८२
३८९	नकली चावल	६८२
३९०	सबरूय में आदिम जाति विश्राम गृह	६८२
३९१	पंजाब में पूर्ण मद्यनिषेध	६८२
३९२	सरकारी कर्मचारियों की कार्य की दशा	६८३
३९३	दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र के लिये शिक्षा संहिता	६८३
३९४	पटियाला में खेलों की राष्ट्रीय संस्था	६८३
३९५	शिक्षा अनुसन्धान की राष्ट्रीय परिषद्	६८३–८४
३९६	भारतीय महिलाओं का राष्ट्रीय संघ	६८४
३९७	कालेज की फीस	६८४
३९८	पालम का हवाई अड्डा	६८४–८५
३९९	चमोली मुख्यालय में रिहायशी और कार्यालयों के लिये स्थान	६८५
४००	अंकलेश्वर तेल	६८५
४०१	दूतावास की कारों द्वारा यातायात विधियों का उल्लंघन	६८५–८६
४०२	केन्द्रीय शिशु कल्याण बोर्ड	६८६
४०३	अनुसूचित जातियों के लिये आवास योजनायें	६८६
४०४	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदान	६८७
४०५	त्रिभाषीय सिद्धान्त	६८७
४०६	अंग्रेजी का पढ़ाया जाना	६८७–८८
४०७	हरी पत्तियों से दूध	६८८
४०८	एण्डूजगंज में विस्फोट	६८९
४०९	निर्धन विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्तियां	६८९
४१०	उत्तर प्रदेश में खनिज पदार्थ	६८९
४११	व्यायाम प्रशिक्षण	६९०
४१२	सरकारी इंजीनियरी कालेज, चंडीगढ़	६९०
४१३	हिमाचल प्रदेश भूमि सम्पदा अधिनियम का रद्द किया जाना	६९०–९१
४१४	रूस में भारतीय वनस्पतिशास्त्रियों का दल	६९१

प्रश्नों के लिखित उत्तर—(क्रमशः)

अतारांकित प्रश्न संख्या	विषय	पृष्ठ
४१५	संयुक्त राष्ट्र संघीय शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संगठन के साथ सहयोग के लिये भारतीय राष्ट्रीय आयोग . .	६९१
४१६	पंजाब में आदिम जातियों के लिये मकान बनाने की योजना .	६९१–९२
४१७	प्राइमरी स्कूलों में विद्यार्थी	६९२
४१८	राजाओं द्वारा राष्ट्रीय रक्षा कोष में दान . .	६९२
४१९	दिल्ली के लिये मेट्रोपोलिटन काउंसिल . .	६९२
४२०	पेट्रोलियम टेक्नालाजी . .	६९३
४२२	दिल्ली के स्कूलों के छात्रों के लिये वर्दियां	६९३
४२३	तकनीकी छात्रों को छात्रवृत्तियां .	६९४
४२४	तकनीकी छात्रों को छात्रवृत्तियां	६९४–९५

अनुदानों की अनुपूरक मांगें (सामान्य), १९६२–६३ . . ६९५

वित्त मन्त्री (श्री मोरारजी देसाई) ने वर्ष १९६२–६३ के आय व्ययक (सामान्य) के सम्बन्ध में अनुदानों की अनुपूरक मांगों का विवरण उपस्थापित किया।

संकल्प स्वीकृत . . . . . ६९५—७४५

आपात की उद्घोषणा की स्वीकृति और चीनी आक्रमण के बारे में ८ नवम्बर, १९६२ को प्रस्तुत किये गये दो संकल्पों पर तथा तत्सम्बंधी स्थानापन्न प्रस्तावों और संशोधनों के बारे में चर्चा जारी रही। प्रधान मन्त्री (श्री जवाहर लाल नेहरू) ने चर्चा का उत्तर दिया। आपात की उद्घोषणा की स्वीकृति सम्बन्धी संकल्प स्वीकृत हुआ।

चीन द्वारा आक्रमण सम्बन्धी प्रस्ताव पर स्थानापन्न प्रस्ताव तथा ८ संशोधन सभा की अनुमति से वापस ले लिये गये तथा अन्य नौ संशोधन अस्वीकृत हुए। मूल संकल्प स्वीकृत हुआ।

उक्त दोनों संकल्पों पर चर्चा स्वीकृत हुई।

गुरुवार, १५ नवम्बर, १९६२/२४ कार्तिक, १८८४ (शक) के लिये कार्यावलि

वर्ष १९६२–६३ के आय व्ययक (रेलवे) सम्बन्धी अनुदानों की अनुपूरक मांगों पर चर्चा और गैरसरकारी सदस्यों के संकल्पों पर चर्चा

GMGIPND—LS III—2202(Ai)LS—2-1-63—140.

विषय सूची—जारी

	पृष्ठ
श्री दफले	७१५–१६
श्री उटिया	७१६–१७
श्री कामले	७१८–१९
श्री विश्वनाथ पांडेय	७१९—२१
श्री तुलसीदास जाधव	७२१—२३
श्री बालगोविन्द वर्मा	७२४
श्रीमती कमला चौधरी	७२४–२५
श्री विश्राम प्रसाद	७२५—२७
श्री कुं० कृ० वर्मा	७२७—२९
श्री तुलाराम	७२९–३०
श्री बाकर अली मिर्ज़ा	७३०
श्री पु० रा० पटेल	७३०–३१
श्री शा० ना० चतुर्वेदी	७३१
श्री जवाहरलाल नेहरू	७३१—४५
दैनिक सक्षेपिका	७४६—४९

© १९६२ प्रतिलिप्यधिकार लोक-सभा सचिवालय को प्राप्त ।

लोक-सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन सम्बन्धी नियम (पाचवां संस्करण) के नियम ३७९ और ३८२ के अन्तर्गत प्रकाशित और भारत सरकार मुद्रणालय, नई दिल्ली की संसदीय शाखा में मुद्रित ।